Page-1_Layout 1 6/23/2025 3:44 PM Page 1

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

वर्ष–11 अंक–8 द्विपाक्षिक समाचार पत्रिका कोलकाता, बुधवार 25 जून – 09 जुलाई 2025 मूल्यः 5 रुपये RNI No. WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata

देश की सर्वश्रेष्ठ परियोजना दुआरे सरकार

विभिन्न परियोजनाओं की रेस में सभी को पीछे छोड़ बनी सर्वश्रेष्ठ

निज संवाददाता : यूं तो देश के विभिन्न राज्यों में वहां की सरकारें अपने राज्य के नागरिकों के कल्याण हेतु विभिन्न परियोजनाएं चला रही हैं। इस परियोजनाओं का उद्देश्य राज्य की गरीब जनता को राहत प्रदान करना है। इस क्रम में पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से भी कई परियोजनाएं शुरू की गईं। इन परियोजनाओं का लाभ लोगों तक मिल सके, इसे और सरल बनाने के लिए सरकार ने इसे लोगों के घर तक पहुंचाने के लिए दुआरे सरकार शुरू की। देश में चल रहीं विभिन्न परियोजनाओं की रेस में दुआरे सरकार ने सभी को पीछे छोड़ सर्वश्रेष्ठ परियोजना के लिए निर्वाचित हुई। आगामी 7 जनवरी को राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू राज्य सरकार को सर्वश्रेष्ठ परियोजना के लिए पुरस्कृत करेंगी।गौरतलब है कि दुआरे सरकार (दरवाजे पर सरकार) पश्चिम बंगाल सरकार का एक व्यापक आउटरीच कार्यक्रम और प्रशासनिक नवाचार है। इसका उद्देश्य मौजूदा महत्वपूर्ण सार्वजनिक सेवा को प्रमुख बनाना है। विश्व स्तर पर प्रशंसित कन्याश्री, खाद्यसाथी, स्वस्थ साथी, सामाजिक पेंशन जैसी योजनाएं राज्य सरकार की योजनाएं आदि वरिष्ठ नागरिकों, विकलांग, ट्रांसजेंडर, व्यावसायिक, यौनकर्मी, जेल के कैदी, गरीब और हाशिए के लिए हैं जिन्होंने अब तक सरकारी सेवाओं का उपयोग नहीं किया था। दुआरे सरकार चरण– 1 दिसंबर 2020 को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री द्वारा लॉन्च किया गया।

दुआरे सरकार के अंतर्गत सुविधाएं

शिविर में राज्य सरकार के विभिन्न विभागों को शामिल करते हुए लगभग 37 योजनाओं में पंजीकरण के लिए सेवाएं दी जाती है। इन योजनाओं में लक्खी भंडार, रूपश्री, खाद्य साथी, कन्याश्री, स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड, मेधाश्री, शिक्षाश्री, ऐक्यश्री, वरिष्ठ नागरिक पेंशन, प्रवासी श्रमिकों का पंजीकरण, कृषक बंधु, जय जौहर, तफशीली बंधु, विधवा पेंशन, स्वास्थ्य साथी, जाति प्रमाण पत्र, किसान क्रेडिट कार्ड (कृषि), किसान क्रेडिट कार्ड (पशुपालन), कारीगर व वीवर्स क्रेडिट कार्ड, एसएचजी क्रेडिट कार्ड, सामाजिक सुरक्षा योजना, मानविक, कृषि भूमि में उत्परिवर्तन और भूमि अभिलेखों में छोटी त्रुटियों का सुधार, नया बैंक खाता खोलना, आधार कार्ड, जमीन का म्यूटेशन, मछुआरों का पंजीकरण, मछुआरों के लिए क्रेडिट कार्ड, पट्टा के लिए आवेदन, बिना मूल्य सामाजिक सुरक्षा योजना, बांग्ला कृषि सिंचाई, बिजली की नयी कनेक्शन, बिजली शुल्क में छूट, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना सहित 37 योजनाएं शामिल हैं।

दिलीप बना रहे हैं नई पार्टी!

♦ चुनाव आयोग को आवेदन पत्र जमा करने की जल्दीबाजी

♦ भाजपा में अटकलें तेज

निज संवाददाता : बंगाल भाजपा वोटों को ध्यान में रखकर अपने घर की सफाई कर रही है, वहीं पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के संभावित कदमों को लेकर अचानक अटकलें फैल गई हैं। भाजपा खेमे में अफवाह है कि दिलीप घोष नई पार्टी बना सकते हैं। यह अफवाह पार्टी के बाहर भी फैल गई है। दिलीप ने कितने लोगों से मुलाकात की, कहां मिले, कब मिले, इसे लेकर तरह–तरह की बातें चल रही हैं। हालांकि, जिन लोगों के बारे में अटकलें लगाई जा रही हैं कि वे दिलीप मीटिंग में थे, उनमें से ज्यादातर इस बात से इनकार कर रहे हैं कि वे मीटिंग में थे या मीटिंग कर रहे थे। नाम न बताने की शर्त पर एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि उन्हें भी खबर मिली है कि मीटिंग हुई है। हालांकि, उनका दावा है कि वे खुद वहां नहीं थे। दिलीप को लेकर जो अटकलें और अफवाहें फैल रही हैं, वे आखिर है क्या? अफवाह–1: दिलीप के नेतृत्व में शुक्रवार को साल्टलेक में भाजपा के 25 नेताओं की मीटिंग हुई। अफवाह–2: उस बैठक में नई हिंदुत्व पार्टी बनाने को लेकर शुरुआती चर्चा हुई थी। अफवाह–3: पार्टी का संभावित नाम 'पश्चिम बंगाल हिंदू सेना' (पीएचएस) है। अफवाह–4: हाल ही में दक्षिण कोलकाता के एक हिस्से में इस पार्टी के नाम वाली टी–शर्ट बांटी गई थी। अफवाह–5: इस पार्टी का नाम दर्ज कराने के लिए बहुत जल्द चुनाव आयोग को जरूरी दस्तावेज सौंपे जाने वाले हैं। अगर दिलीप ने वाकई ऐसी कोई बैठक की थी, तो उनके साथ बैठक में कौन–कौन शामिल था? इस सवाल का स्पष्ट जवाब किसी के पास नहीं है। जो लोग इस बैठक पर सबसे ज्यादा शोध कर रहे, उनके पास भी इन सवालों के स्पष्ट जवाब नहीं हैं। शेष पेज 16 पर

कालीगंज में तृणमूल की जीत से ममता खुश

निज संवाददाता: कालीगंज विस सीट पर हुए उपचुनाव के नतीजों में दिवंगत विधायक नसीरुद्दीन अहमद की बेटी अलीफा ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा उम्मीदवार को 47,000 से अधिक के अंतर से हराकर हरा तूफान खड़ा कर दिया। तृणमूल सुप्रीमो ममता बनर्जी इस परिणाम से बेहद खुश हैं। उन्होंने अपने एक्स हैंडल पर पोस्ट कर मां–माटी–लोगों के प्रति आभार जताया। उन्होंने दिवंगत विधायक नसीरुद्दीन अहमद को याद करते हुए इस जीत को मां–माटी–लोगों को समर्पित भी किया। आयोग के अनुसार अलीफा अहमद को 1 लाख 2,179 वोट मिले हैं। इसका मतलब है कि अलीफा अहमद 49 हजार से ज्यादा वोटों से जीती हैं, जो 2021 के अंतर से ज्यादा है।

हमें संकट से कदम दर कदम गुजरना है : ममता बनर्जी

समरेंद्र मित्रा

शुरुआत से पहले हमेशा एक शुरुआत होती है। रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था, 'शाम का दीया जलाने से पहले, दोपहर की लिबास में खुद को लपेट लें।' इस कहावत की सच्चाई में जरा भी कमी नहीं आई है। इसलिए इतिहास से पहले इतिहास आता है। पश्चिम बंगाल में कांग्रेस व्यावहारिक रूप से शून्य है। इतिहास बहुत क्रूर है। ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस, जिसे कांग्रेस ने निष्कासित कर दिया था, ने इस राज्य के पूरे इलाके पर कब्जा कर लिया है। उस दिन के गलत फैसले का प्रायश्चित चल रहा है।

इसे ठीक ही कहना होगा। कम्युनिस्टों के साथ जुड़कर अदरक का पानी पीने के बाद भी कोई हल नहीं निकला। विधानसभा में माकपा शून्य है। और कांग्रेस का पतन जारी है। इसलिए, यह कहने की जरूरत नहीं है कि कांग्रेस को अभी भी प्रायश्चित करना है (वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रदीप भट्टाचार्य के बयान के अनुसार)।ममता बनर्जी ने तृणमूल नामक एक किताब लिखी थी। 288 पृष्ठों की यह पुस्तक जनवरी 1999 में प्रकाशित हुई थी। 2010 तक इसके पांच संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। इससे पुस्तक की भारी मांग का पता चलता है। ममता बनर्जी ने अपनी पुस्तक की प्रस्तावना में घोषणा की है कि इतिहास की एक अटूट आवश्यकता के कारण तृणमूल कांग्रेस नामक राजनीतिक दल का जन्म हुआ। वहां पार्टी की नीति बताते हुए उन्होंने कहा, 'उनकी पार्टी भारत का सर्वांगीण विकास करने के लिए होगी... 'लेखिका ने उस दिन इस पुस्तक को आगे बढ़ाने की शपथ ली थी। उन्होंने कहा था– 'इसके बाद भी अगर किसी तृणमूल कार्यकर्ता के व्यवहार से किसी को ठेस पहुंचती है तो मैं पहले ही क्षमा मांगती हूं।' उनके शब्दों में–हमें संकट से कदम दर कदम गुजरना है...। ममता बनर्जी का सफर आज भी खत्म नहीं हुआ है।

ईरानी क्लस्टर बम ने इजरायल को बैकफुट पर ढकेला

अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

ईरान–इजरायल युद्ध के सातवें दिन ईरान द्वारा इजरायल पर दागे गये क्लस्टर मिसाइल बम अत्याधिक घातक साबित हुए। ईरान के इस हमले ने इजरायल के नागरिकों का मनोबल बुरी तरह से तोड़ दिया है। क्लस्टर बमें जिन्हें गुच्छ युद्ध सामग्री भी कहा जाता है, दुनिया के सबसे घातक और विवादास्पद हथियारों में से एक हैं। यह बम अपनी व्यापक विनाशकारी क्षमता और दीर्घकालिक प्रभावों के कारण युद्ध क्षेत्र में तबाही मचाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। युद्ध के दौरान ईरान द्वारा इजरायल पर इसके उपयोग ने इस मिसाइल के प्रति लोगों का वैश्विक ध्यान केन्द्रित कर दिया है। क्लस्टर बम एक प्रकार का विस्फोटक हथियार है जो हवा में या जमीन से छोड़ा जाता है। यह एक बड़े खोल (कैनिस्टर) के रूप में होता है, जिसमें सैकड़ों छोटे–छोटे विस्फोटक उपकरण, जिन्हें सबम्युनिशन या बॉमलेट्स कहते हैं, भरे होते हैं। ये बॉमलेट्स विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, जैसे कि टैंक–रोधी, कर्मी–विरोधी, या आग लगाने वाले। इनका मुख्य उद्देश्य एक बड़े क्षेत्र में फैलकर अधिकतम नुकसान पहुंचाना है। एक क्लस्टर बम का प्रभाव क्षेत्र कई क्रिकेट मैदानों जितना बड़ा हो सकता है, जिससे यह सैन्य टुकड़ियों, वाहनों, या अन्य लक्ष्यों को व्यापक स्तर पर नष्ट कर सकता है।

क्लस्टर बम कैसे काम करता है?

क्लस्टर बम की कार्यप्रणाली इसे अन्य पारंपरिक बमों से अलग करती है। इसे हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर या मिसाइलों के जरिए लक्ष्य क्षेत्र में छोड़ा जाता है। जब यह अपने लक्ष्य के ऊपर पहुंचता है, तो इसका खोल हवा में खुल जाता है, जिससे अंदर मौजूद सैकड़ों बॉमलेट्स बिखर जाते हैं। ये बॉमलेट्स एक बड़े क्षेत्र में फैलकर विस्फोट करते हैं, जिससे व्यापक विनाश होता है। हाल ही में इजरायल–ईरान युद्ध में ईरान द्वारा बैलिस्टिक मिसाइलों के जरिए क्लस्टर बमों छोड़े जाने के दौरान देखा गया कि इसके वारहेड्स नीचे गिरते समय छोटे–छोटे बमों में बंट जाते हैं, जो बड़े क्षेत्र में तबाही मचाते हैं। शेष पेज 8 पर

5 जुलाई को आएगी सबसे बड़ी तबाही!

न्यू बाबा वेंगा ने की भविष्यवाणी, कहा

80 फीसदी फ्लाइट बुकिंग कैंसिल

लोगों में मचा आतंक

टोक्यो : जापान में इन दिनों एक अलग और बड़े डर का सामना कर रहा है। जापान के लोग अभी किसी आर्थिक समस्या,बाजार की उथल–पुथल या वैश्विक युद्ध की चिंता से नहीं बल्कि एक भविष्यवाणी से डरे हुए हैं। यह भविष्यवाणी जापान की जानी–मानी मंगा आर्टिस्ट रयो तात्सुकी ने की है। सोशल मीडिया पर उन्हे 'न्यू बाबा वेंगा' भी कहा जा रहा है। उनका दावा है कि वह अपने सपनों के जरिए भविष्य देख सकती हैं। तात्सुकी की एक भविष्यवाणी से ना केवल जापान बल्कि पूरे एशिया के लोगों में डर का माहौल है। तात्सुकी ने चौंकाने वाली भविष्यवाणी की है जिसमें उन्होंने कहा कि 5 जुलाई 2025 को जापान में एक बहुत बड़ी आपदा आने वाली है।इससे पहले भी रयो तात्सुकी ने कुछ ऐसी भविष्यवाणी की हैं जो सच साबित हुई। अपनी किताब 'दी फ्यूचर आई साव' में उन्होंने लिखा था कि जापान में 2011 में भूकंप आएगा और तबाही होगी। उन्होंने प्रिंसेज डायना की मौत, 2020 में महामारी (कोविड–19) होने की भी भविष्यवाणी की थी जो सही साबित हुई। बता दें कि उनके सपने में आईं कुछ घटनाएं असल जिंदगी में सच साबित हुई हैं, इसलिए कई सारे लोग अब उनकी कही बात पर काफी ध्यान दे रहे हैं। हालांकि, 'न्यू बाबा वेंगा' ने यह नहीं बताया है कि आखिर जापान में होगा क्या, लेकिन उनकी दी गई चेतावनी वायरल हो गई है। सोशल मीडिया पर लोग इस बारे में अलग–अलग बाते कर रह हैं। कुछ लोगों में डर, उत्सुकता और चिंता है और फिलहाल यह ट्रेंडिग टॉपिक बना हुआ है।भले ही आपदा की भविष्यवाणी, विज्ञान द्वारा समर्थित नहीं है, फिर भी लोग इसे गंभीरता से ले रहे हैं। हॉन्ग कॉन्ग और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे स्थानों से कई पर्यटकों ने जुलाई 2025 की शुरुआत में जापान की अपनी यात्राएं रद्द कर दी हैं। कुछ जगहों में ट्रैवल बुकिंग में 80% तक की गिरावट आई है, जिससे पता चलता है कि मंगा की भविष्यवाणी का डर अब जापान की अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित कर रहा है।जापान में पर्यटन उद्योग पर इस भविष्यवाणी का असर साफ दिखाई दे रहा है। हॉन्ग कॉन्ग से जापान के लिए फ्लाइट बुकिंग में 83 प्रतिशत तक की गिरावट हुई है। ग्रेटर बे एयरलाइंस का कहना है कि अप्रैल–मई के हॉलिडे सीजन के दौरान भी बुकिंग पिछले साल के मुकाबले आधी रह गई है और मांग में जबरदस्त गिरावट दर्ज की गई है।जापान सरकार के अधिकारी और आपदा विशेषज्ञ लोगों से अफवाह पर विश्वास न करने या न फैलाने का आग्रह कर रहे हैं। उनका कहना है कि भविष्यवाणी तथ्यों या विज्ञान पर आधारित नहीं है। फिर भी, जैसे हैशटैग ट्रेंड कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि डिजिटल युग में भय और अंधविश्वास कितनी तेजी से बढ़ सकता है।

Page-2_Layout 1 6/23/2025 4:43 PM Page 1

मणिपाल सिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस ने पूर्वी भारत में अपने लक्ष्य को और किया मजबूत

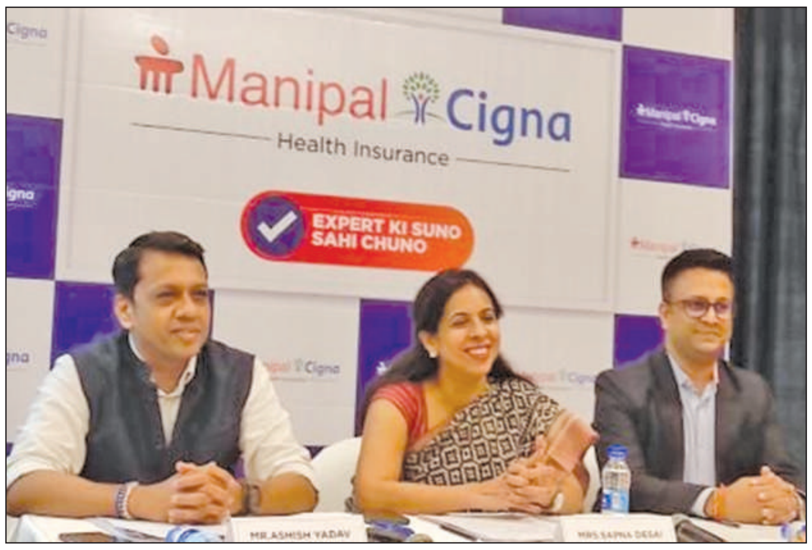

आदित्य सिंह

कोलकाता : भारत की अग्रणी स्वास्थ्य बीमा कंपनियों में से एक, मणिपाल सिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस पूर्वी भारत पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही है। कंपनी की वर्तमान में 42 शहरों में उपस्थिति है और पूर्वी क्षेत्र में इसके 10,000 से अधिक सलाहकार हैं। कंपनी अपनी खुदरा उपस्थिति का विस्तार करने, अपने शाखा नेटवर्क को दोगुना करने और 10,000 से अधिक सलाहकारों को नियुक्त करने की योजना बना रही है। यह निर्णय क्षेत्र में मजबूत वृद्धि के बाद लिया गया है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2025 में सकल प्रत्यक्ष प्रीमियम रिटर्न (जीडीपीब्ल्यू) में 130 करोड़ से अधिक का योगदान दिया है। इसमें से पश्चिम बंगाल ने 55 करोड़ से अधिक का योगदान दिया।जनरल इंश्योरेंस काउंसिल (जीआईसी) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, मई 2025 में स्टैंडअलोन स्वास्थ्य बीमा कंपनियों में पिछले वर्ष की तुलना में 10% की वृद्धि हुई। मणिपाल सिग्ना ने भी 43% की प्रीमियम वृद्धि दर्ज करके इस क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन किया। यह वृद्धि साही खिलाड़ियों में सबसे अधिक है, जो मणिपाल सिग्ना की मजबूत क्षेत्रीय रणनीति और ग्राहक-केंद्रित उत्पाद डिजाइन को दर्शाती है।पिछले तीन वर्षों में कंपनी ने पूर्व भारत में 200 करोड़ रुपये का हेल्थ क्लेम का भुगतान किया है। केवल पश्चिम बंगाल में ही इसकी संख्या 80 करोड़ रुपये है। संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करती हुए मणिपाल सिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस की मुख्य विपणन अधिकारी स्वप्ना देसाई ने कहा कि पूर्वी भारत में, विशेष रूप से अर्ध-शहरी और उभरते बाजारों में स्वास्थ्य बीमा की पहुंच का विस्तार करने का एक मजबूत अवसर है। सर्वा जैसे समाधान - जो विशेष रूप से मिसिंग मिडल के लिए डिज़ाइन किए गए हैं- कोलकाता में हमारे नए व्यवसाय के 50 प्रतिशत से अधिक में योगदान दे रहे हैं। सर्वा के साथ, हम बेहतर पहुंच और सामर्थ्य के भीतर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा ला रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश स्वस्थ्य रहेगा तभी यह

●उपस्थिति और सलाहकारों की संख्या दोगुनी करने की योजना

प्रगति करेगा। स्वास्थ्य बीमा आज की मांग है, समाज को इसकी काफी जरूरत भी है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के सामने स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ जटिल बनी हुई हैं। उच्च रक्तचाप, मधुमेह और हृदय रोग जैसी गैर-संचारी बीमारियाँ (एनसीडी) बढ़ रही हैं। मणिपाल सिग्ना के उत्पाद पोर्टफोलियो को इसी बात को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया है। मणिपाल सिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस के उत्पाद एवं परिचालन प्रमुख आशीष यादव ने कहा कि सर्वा कई प्रमुख बाजारों में उपभोक्ताओं की पसंदीदा पसंद के रूप में उभरा है, क्योंकि यह सरल और किफायती तरीके से वास्तविक, रोजमर्रा की स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं को पूरा करता है। लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले उत्पादों और अनुभवों को डिजाइन करने की हमारी प्रतिबद्धता है। मेट्रो शहरों और छोटे शहरों में रहें। हम अपने ग्राहकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करके स्वास्थ्य बीमा में दीर्घकालिक विश्वास बनाने की कोशिश कर रहे हैं। कंपनी के उपाध्यक्ष (पूर्वी और उत्तर-पूर्वी) रोहित मित्तल ने जानकारी देते हुए कहा कि वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी कई योजनाएं हैं। मणिपाल सिग्ना वर्तमान में पूर्वी भारत के प्रमुख स्थानों पर सक्रिय है। यह असम, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, झारखंड, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, ओडिशा, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल में काम करता है और ऑफ़लाइन शाखाओं, एजेंट नेटवर्क और डिजिटल बुनियादी ढांचे के माध्यम से अपनी उपस्थिति को गहरा करने की कोशिश कर रहा है।

पश्चिमबंग इतिहास संसद का 60 घंटे का इंटर्नशिप कार्यक्रम आयोजित

निज संवाददाता : शैक्षिक अंतर्दृष्टि और सांस्कृतिक अनुभव के एक सार्थक संगम में, सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन उद्यमिता पर एक 60 घंटे का इंटर्नशिप कार्यक्रम हाल ही में आयोजित किया गया, जिसमें श्यामा प्रसाद कॉलेज और सिटी कॉलेज के छात्रों की उत्साही भागीदारी देखी गई। पारंपरिक कक्षा शिक्षण से परे इस कार्यक्रम ने प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे भारतीय संग्रहालय और एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता के लिए समृद्ध क्षेत्र भ्रमण की पेशकश की, जहां छात्रों ने बंगाल की विरासत के मूर्त इतिहास और जीवंत धरोहर के साथ जुड़ाव किया। पश्चिम बंग इतिहास संसद द्वारा आयोजित, इस पहल का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत और इसके सतत पर्यटन उद्यमों की क्षमता की गहरी समझ को बढ़ावा देना था।

इस तरह के कार्यक्रम की प्रासंगिकता और प्रभाव को पहचानते हुए संसद ने इसे वार्षिक रूप से आयोजित करने का संकल्प लिया है। इसके अलावा इस पहल की पहुंच को शहर से परे पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों में कॉलेजों को शामिल करने के लिए

♦इसका उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत और इसके सतत पर्यटन उद्यमों की क्षमता की गहरी समझ को बढ़ावा देना

कदम उठाए जा रहे हैं। पश्चिम बंग इतिहास संसद के सचिव विमान समाद्दार ने कहा कि आने वाले वर्षों में हम उम्मीद करते हैं कि विभिन्न कॉलेजों के और अधिक छात्र इस अवसर को अपनाएंगे। इस इंटर्नशिप के माध्यम से अर्जित प्रमाण पत्र न केवल उनके शैक्षिक रिकॉर्ड को बढ़ाएगा, बल्कि स्नातक स्तर पर पाठ्यचर्या का श्रेय भी प्राप्त करेगा, जिससे उनकी शैक्षिक यात्रा और करियर की संभावनाएं दोनों समृद्ध होंगी। अनुभवात्मक शिक्षा के आदर्शों में निहित, यह इंटर्नशिप छात्रों के लिए एक प्रकाशस्तंभ के रूप में खड़ी है, जो उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों की सराहना करने और विरासत-आधारित उद्यमिता के क्षेत्र में नई संभावनाओं की कल्पना करने के लिए प्रेरित करती है।

गोवा में बनीं मिलावटी दवाइयां बिक रहीं बंगाल में

डॉक्टर चिंतित

निज संवाददाता : दूसरे राज्यों की मिलावटी दवाइयां फिर बंगाल में आ रही हैं। इस बार ड्रग कंट्रोल बोर्ड की प्रयोगशाला में यूरीमैक्स-डी टैम्सुलोसिन हाइड्रोक्लोराइड ड्यूटैस्टराइड टैबलेट गुणवत्ता परीक्षण में फेल हो गई। मालूम हो कि इस दवा को बनाने वाली कंपनी की फैक्ट्री अरब सागर के किनारे गोवा में है। प्रोस्टेट रोगों के लिए यह यूरीमैक्स डी एक महत्वपूर्ण दवा है। प्रोस्टेट बढ़ने पर डॉक्टर अक्सर इस दवा को लिखते हैं। नकली दवा मिलने से डॉक्टर चिंतित हैं।इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड हेल्थ के चेयरमैन डॉ. जॉयदेव रॉय ने कहा कि दवाओं की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। उनकी निजी राय है, कि मुनाफे के लिए दवा कंपनियों को दवाओं की कीमत थोड़ी बढ़ा देनी चाहिए। लेकिन अतिरिक्त मुनाफे के लिए दवाओं में घटिया सामग्री का इस्तेमाल करना गैरकानूनी है। पिछले कुछ महीनों में राज्य ड्रग कंट्रोल बोर्ड ने नकली दवाओं का जखीरा पकड़ा है। डॉक्टर नई कंपनियों की दवाएं लिखने से डर रहे हैं। डॉ. जॉयदेव रॉय ने कहा कि कई बार मरीज के परिजनों को वह दवा नहीं मिल पाती जो उन्होंने डॉक्टर के पर्चे में लिखी होती है। उन्हें उसी कंपोजिशन की दूसरी दवा मिल जाती है। लेकिन वह कंपनी बिल्कुल नई होती है। खरीदार ऐसी कंपनियों से दवा खरीदने से डरते हैं। हम इस पर भी रोक लगा रहे हैं। हाल ही में क्वालिटी टेस्ट में फेल हुई यूरीमैक्स-डी टैबलेट का बैच नंबर 4जीएस0097 है और एक्सपायरी डेट नवंबर 2025 है। राज्य औषधि नियंत्रण बोर्ड ने बताया कि इस दवा को एक नामी कंपनी बनाती है। उनकी फैक्ट्री गोवा में है।

तृणमूल के लिए आज भी क्यों अहम है 32 साल पहले घटी वह घटना

पुलिस फायरिंग में हुई थी 13 की मौत

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं और यहां पर सत्तारुढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) अभी से ही चुनावी माहौल में जुट गई है। ममता बनर्जी की अगुवाई वाली पार्टी के लिए 21 जुलाई की तारीख बेहद खास है और इस दिन को वे 'शहीद दिवस' के रूप में बेहद उत्साह के साथ मनाती है। अगले साल चुनाव से पहले पड़ने वाले इस शहीद दिवस के लिए पार्टी में अभी से हलचल है और पार्टी में नंबर टू अभिषेक बनर्जी ने ऐलान किया कि इस दिन के लिए बनने वाले पोस्टर में सिर्फ ममता बनर्जी की तस्वीर होनी चाहिए।पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और ममता के भतीजे अभिषेक बनर्जी ने ऐलान किया था कि 21 जुलाई की शहीद दिवस रैली के सभी आधिकारिक पोस्टरों पर सिर्फ ममता बनर्जी की तस्वीर होनी चाहिए। चूंकि वह 1993 में हुए आंदोलन का हिस्सा नहीं थे, ऐसे में उनकी तस्वीर का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। उनके इस अनुरोध के बाद तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने तय करते हुए ऐलान किया कि अगले महीने 21 जुलाई की शहीद दिवस रैली के सभी आधिकारिक पोस्टरों पर पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी की ही तस्वीर होगी।पार्टी के लिए इस खास दिन का कितना महत्व है, इसे इस तरह से समझा जा सकता है कि 21 जुलाई के दिन जब दिल्ली में संसद का सत्र चल रहा होगा तब भी इस दिन टीएमसी के एक भी सांसद दिल्ली में नहीं होंगे। 'शहीद दिवस' पर आयोजित रैली को लेकर टीएमसी सांसद सुदीप बंद्योपाध्याय ने बताया-"21 जुलाई को संसद का मानसून सत्र शुरू हो रहा है। इस मानसून सत्र के दौरान, हमारे सांसद 21 जुलाई को संसद नहीं जाएंगे। इस बार यह रैली ('शहीद दिवस' रैली) बहुत बड़ी होने जा रही है क्योंकि अगले साल 2026 में हमारे पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव भी है।"ममता बनर्जी के भतीजे और पार्टी में नंबर टू माने जाने वाले अभिषेक के इस ऐलान ने राज्य के सियासी हलकों में हलचल फैला दी है क्योंकि इससे पार्टी की आंतरिक स्थिति को लेकर अटकलें भी लगाई जाने लगी हैं। लोकसभा में टीएमसी के नेता सुदीप बंदोपाध्याय ने कहा-"21 जुलाई की रैली के पोस्टर में सिर्फ ममता की तस्वीर होगी। अभिषेक ने खुद कहा था कि उनकी तस्वीर वहां नहीं होनी चाहिए, क्योंकि वह 1993 के मूल आंदोलन का हिस्सा नहीं थे।"विधानसभा चुनाव से ठीक पहले पड़ने वाले इस शहीद दिवस को लेकर पार्टी में खासा उत्साह है तो इस विशाल रैली से जुड़े पोस्टर पर किसकी तस्वीरें होनी चाहिए, इसे लेकर खूब मंथन हो रहा था। पार्टी के अंदर जुड़े पोस्टर को लेकर बहस की शुरुआत करीब डेढ़ साल पहले हुई थी। बात नवंबर 2023 की है जब नेताजी इंडोर स्टेडियम में एक बड़ी रैली को लेकर सिर्फ ममता बनर्जी की तस्वीर लगाई गई थी।तब पार्टी के प्रवक्ता कुणाल घोष ने सार्वजनिक रूप से अभिषेक बनर्जी की तस्वीर नहीं लगाए जाने पर सवाल उठाया और पार्टी के अंदर बहस छिड़ गई थी। अगले कुछ महीने बाद राज्य में विधानसभा चुनाव होने हैं, ऐसे में लंबे समय से सत्ता पर काबिज टीएमसी अपने खिलाफ किसी तरह का दुष्प्रचार नहीं चाहती। चुनाव में उसे भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) से कड़ी चुनौती मिलने के आसार हैं। इन चीजों को ध्यान में रखते हुए टीएमसी ने पोस्टर को लेकर स्थिति साफ कर दी और रैली से जुड़े पोस्टर में सिर्फ ममता की ही फोटो लगाई जाएगी।ममता बनर्जी की अगुवाई में यह आंदोलन साल 1993 में चलाया गया था। जबकि अभिषेक बनर्जी के राजनीतिक करियर की शुरुआत 2011 में टीएमसी के सदस्य के रूप में एंट्री करने से हुई। तब उन्हें तृणमूल युवा का अध्यक्ष बनाया गया,

21 जुलाई शहीद दिवस रैली

बाद में तृणमूल युवा कांग्रेस में इस संगठन का विलय कर दिया गया।21 जुलाई 1993 को क्या हुआ थावर्तमान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी जुलाई 1993 में 38 साल की युवा नेता थीं, और कांग्रेस की तेजतर्रार नेताओं में शुमार की जाती थीं। वह अपने कड़े तेवर के लिए देशभर में अपनी खास पहचान बना चुकी थीं। वह तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव की सरकार में खेल मंत्री भी रह चुकी थीं। बाद में खेल से जुड़ी नीतियों को लेकर सरकार से मतभेद के चलते उन्होंने मंत्री पद छोड़ दिया।गौरतलब है कि तब वे प्रदेश युवा कांग्रेस की प्रमुख भी थीं। करीब 2 साल पहले 1991 में पश्चिम बंगाल में कम्युनिस्ट वाममोर्चा एक बार फिर से बड़ी बहुमत के साथ सत्ता में लौटी थी और ज्योति बसु ने फिर से मुख्यमंत्री पद की कमान संभाली थी। लेकिन इस बार वाममोर्चा की जीत विवादों में रही और विपक्ष ने चुनाव में धोखाधड़ी किए जाने का गंभीर आरोप लगाया। आरोप धीरे-धीरे राज्य में नए आंदोलन का रूप में बदल गया। विपक्ष की ओर से वोटर आईडी कार्ड को वोट डालने के लिए अनिवार्य करने की मांग शुरू कर दी गई।तब के चुनाव में चुनाव आयोग की ओर से वोटिंग के लिए वोटर्स को फोटो पहचान पत्र नहीं जारी किया जाता था। वोटर लिस्ट में सिर्फ वोटर का नाम ही रहता था। ऐसे में ममता का आरोप था कि वोटर्स के फोटो नहीं रहते हैं। इस कारण लेफ्ट पार्टी चुनाव में धांधली करती है।21 जुलाई 1993 की सुबह 10 बजे के करीब ममता इस आंदोलन का नेतृत्व कर रही थीं और उनकी योजना राइटर्स बिल्डिंग तक मार्च करते हुए प्रदर्शन करने की थी। वहां पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। 11 बजे के करीब राइटर्स बिल्डिंग से महज एक किलोमीटर पहले, मेयो रोड पर मेट्रो सिनेमा और एस्प्लेनेड में डोरिना रोड क्रॉसिंग के पास, हजारों की संख्या में तैनात पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश की।कहा जाता है कि माकपा नेताओं को यह डर सता रहा था कि ममता पार्टी कार्यकर्ताओं को साथ लेकर राइटर्स पर कब्जा कर लेंगी। ऐसे में इस तरह की आशंका को देखते हुए तत्कालीन गृह मंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने फायरिंग करने का आदेश जारी कर दिया। पुलिस की फायरिंग से बाद वहां पर हालात बहुत खराब हो गए। फायरिंग की घटना में युवा कांग्रेस के 13 लोग मारे गए और कई लोग घायल हो गए।पुलिस फायरिंग के दौरान ममता बनर्जी को भी चोट लगी और वे घायल हो गईं। इस घटना से ममता के राजनीतिक करियर में बड़ा बदलाव आया और राज्य की खास नेताओं के रूप में उनकी पहचान बन गई। इस बीच कांग्रेस पार्टी के अंदर घमासान बढ़ता ही चला गया और फिर 1997 में ममता ने पार्टी छोड़ दिया और मुकुल रॉय के साथ मिलकर 1 जनवरी 1998 को तृणमूल कांग्रेस पार्टी का गठन किया।नई पार्टी के गठन के करीब एक दशक बाद टीएमसी साल 2011 में पश्चिम बंगाल की सत्ता पर पहुंचने में कामयाब रही। पार्टी ने 3 दशक से भी ज्यादा समय से सत्ता पर काबिज वामपंथी सरकार को बेदखल किया और ममता बनर्जी राज्य की मुख्यमंत्री बनीं।सत्ता में आने के बाद ममता सरकार ने 21 जुलाई की घटना को हर साल मनाने का फैसला लिया। खास बात यह है कि 21 जुलाई की घटना को कांग्रेस भी शहीद दिवस के रूप में मनाती है। सत्ता में आने के बाद ममता की पार्टी इस दिन को और बड़े स्तर पर मनाती रही है।

Page-3_Layout 1 6/23/2025 3:47 PM Page 1

ममता ने दीघा रथ यात्रा की तैयारी बैठक में लिया फैसला

भक्तों की सुविधा के लिए एक किमी रास्ते पर लगाई गईं रस्सियां

- बैठक में इस्कॉन, पश्चिम बंगाल राज्य सनातन ब्राह्मण ट्रस्ट और मंदिर समितियों के प्रतिनिधि थे मौजूद
- सोने की झाड़ू से रथ के सामने की सड़क को साफ करेंगी सीएम

निज संवाददाता : आगामी 27 जून को रथ यात्रा है। रथ यात्रा को लेकर इस बार दीघा का स्वरूप कुछ अलग ही देखने को मिल रहा है। इसका कारण दीघी में निर्मित जगन्नाथ धाम है। यह कारण है कि रथयात्रा को लेकर दीघा में तैयारियां अब अंतिम चरण में है। दीघा में जगन्नाथ-बलराम-सुभद्रा रथ की रस्सियों को सभी भक्त छू सकेंगे। यह पहली बार है कि दीघा में रथ यात्रा निकाली जाएगी। इसमें सभी की भागीदारी हो सके, इसके लिए प्रशासन की ओर से विशेष व्यवस्था की जा रही है। नबान्न में रथ यात्रा की तैयारी बैठक में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बताया कि आमजन रथ की रस्सियों को छू सकें, इसके लिए दीघा में जगन्नाथ मंदिर के सामने रथ से मौसी के घर तक सड़क के दोनों ओर करीब एक किलोमीटर लंबी दो राठौड़ रस्सियां लगाई जाएंगी।जिससे रथ के खिंचते ही मौसी के घर तक आने वाले सभी दर्शनार्थियों को रस्सियां पकड़ने का मौका मिलेगा।

मुख्यमंत्री 26 जून की दोपहर दीघा पहुंचेंगी। अगले दिन वह सोने की झाड़ू से रथ के सामने की सड़क को साफ करेंगी और रथ की रस्सी खींचेंगी। बैठक में मुख्यमंत्री ने प्रशासनिक व्यवस्था पर सबसे अधिक जोर दिया। बैठक में इस्कॉन, पश्चिम बंगाल राज्य सनातन ब्राह्मण ट्रस्ट और मंदिर समितियों के प्रतिनिधि मौजूद थे। नवान्नसूत्र के अनुसार मुख्य सचिव, गृह सचिव और शीर्ष पुलिस अधिकारियों को 26 तारीख से दीघा में यातायात नियंत्रण, व्यापक पुलिस व्यवस्था और सुरक्षा के सभी पहलुओं पर नजर रखने का निर्देश दिया गया है। प्रशासन का अनुमान है कि इस साल की रथ यात्रा में करीब ढाई लाख लोग जुटेंगे। और यह भीड़ उल्टारथ तक रहेगी। उस दिन जगन्नाथ देव मिठाई लेकर मंदिर लौटेंगे। इस अवसर के लिए विशेष व्यवस्था भी की जाएगी। दीघा में जगन्नाथ मंदिर के उद्घाटन के बाद से वहां हर दिन 60-70 हजार लोग जुट रहे हैं। इसका फायदा उठाकर मालिकों ने होटल का किराया बढ़ा दिया है। मुख्यमंत्री ने इस पर नाराजगी जताई। उन्होंने पर्यटन विभाग को पुलिस के साथ बैठकर समस्या का समाधान करने का निर्देश दिया है। रथ यात्रा के लिए दीघा के सभी होटल बुक हो चुके हैं। इसलिए उद्घाटन की तरह रथ यात्रा के दौरान भी कई हंगरो की व्यवस्था की जाएगी।

दीघा में क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूं कैंप लगाया जाएगा। इसके अलावा मेडिकल कैंप, वाटर स्टेशन, मुफ्त प्रसाद वितरण और भोजन वितरण की व्यवस्था भी होगी। रथ यात्रा के दौरान अरूप विश्वास, चंद्रिमा भट्टाचार्य, पुलक रॉय, सुजीत बसु, स्नेहाशीष चक्रवर्ती को विशेष जिम्मेदारी के साथ दीघा भेजा जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि उस समय बारिश हो सकती है, इसलिए आपदा से निपटने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ को विशेष टीमों के साथ तैयार रहने का निर्देश दिया गया है।

लक्ष्मी भंडार से 6.8 लाख महिलाएं सीधे वृद्धावस्था भत्ते में नामांकित : मंत्री

- वर्तमान में 2 करोड़ 20 लाख महिलाएं लक्ष्मी भंडार से लाभान्वित

निज संवाददाता : राज्य सरकार की पहल पर लक्ष्मी भंडार के तहत आने वाली महिलाओं को सीधे वृद्धावस्था भत्ते का लाभ मिल रहा है। जो लोग अब तक लक्ष्मी भंडार पा रहे थे, उन्हें अब 60 वर्ष की आयु पार करने के बाद वृद्धावस्था भत्ते के लिए अलग से आवेदन नहीं करना पड़ेगा। लक्ष्मी भंडार योजना के लाभार्थी 60 वर्ष की आयु पार करने के बाद सीधे वृद्धावस्था भत्ते के दायरे में आ रहे हैं। सरकार स्वतः ही उनका नाम वृद्धावस्था भत्ता सूची में जोड़ रही है। 2023 में शुरू हुई इस प्रक्रिया में अब तक राज्य में करीब 6 लाख 82 हजार 895 लाभार्थियों को इस तरह से सीधे वृद्धावस्था भत्ते में नामांकित किया जा चुका है।

यह जानकारी राज्य की महिला, बाल एवं समाज कल्याण मंत्री शशि पांजा ने विधानसभा में दी। मंत्री ने कहा कि अब तक राज्य भर में 6 लाख 82 हजार से अधिक लाभार्थियों को इस स्वचालित प्रक्रिया से लाभ मिला है। लक्ष्मी भंडार के बाद इन लाभार्थियों के नाम वृद्धावस्था, अनुसूचित मित्र या जॉय जोहार योजना में शामिल किए गए हैं। इनमें से 6 लाख 34 हजार 837 लोग अब वृद्धावस्था भत्ता के लिए सूचीबद्ध हैं। अनुसूचित मित्रों में 41 हजार 892 और जॉय जोहार योजना में 6,166 लोगों को सूचीबद्ध किया गया है। मंत्री ने यह भी कहा कि उनके नाम पहले ही राज्य सरकार के जॉय बांग्ला पोर्टल में शामिल किए जा चुके हैं। मंत्री के अनुसार, वर्तमान में लक्ष्मी भंडार के तहत महिलाओं की संख्या 2 करोड़ 20 लाख है। इसकी स्थापना के बाद से, राज्य ने इस पर (10 जून, 2025 तक) 63 हजार 615 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। संयोग से, महिलाओं ने अगस्त 2021 में दुआरे सरकार शिविर से लक्ष्मी भंडार परियोजना के लिए आवेदन किया था। महिलाएं चरणों में शुरू किए गए शिविरों में भाग लेकर इस योजना के लिए आवेदन करती हैं। शिविरों के आठ चरण पहले ही पूरे हो चुके हैं और अधिकांश आवेदक अब लाभार्थी हैं। शुरुआत में इस योजना के तहत सामान्य महिलाओं को 500 रुपये प्रति माह मिलते थे, जबकि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए यह 1,000 रुपये था। लेकिन अब भत्ता बढ़ाकर क्रमशः 1,000 रुपये और 1,200 रुपये कर दिया गया है।

साइबर क्राइम विंग में ज्वाइंट कमिश्नर पद को नवान्न की मंजूरी

निज संवाददाता : साइबर क्राइम की घटनाओं में अचानक हुई वृद्धि को रोकने के लिए राज्य सरकार बड़ी पहल कर रही है। साइबर क्राइम की शिकायतों की संख्या में हर दिन इजाफा हो रहा है। बंगाल के लोगों को नए-नए तरीकों से ठगा जा रहा है। जालसाज तरह-तरह की तरकीबें बनाकर उनकी जमापूंजी खाली कर रहे हैं। इस अपराध को रोकने के लिए नवान्न ने कोलकाता पुलिस में ज्वाइंट कमिश्नर पद के अधिकारी की नियुक्ति करने का फैसला किया है। राज्य कैबिनेट की विधानसभा में बैठक में कैबिनेट ने कोलकाता पुलिस के ज्वाइंट कमिश्नर (साइबर) का पद सृजित करने को मंजूरी दे दी।नवान्न सूत्रों के अनुसार इस बार कोलकाता पुलिस में ज्वाइंट कमिश्नर के दो अतिरिक्त पद सृजित किए जाएंगे। इसके लिए कैबिनेट को प्रस्ताव भी भेजा गया है। अनुमति मिलते ही नियुक्ति प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी। इन दो पदों में से एक ज्वाइंट सीपी पुलिस के कानूनी मामलों को देखेंगे। और एक साइबर क्राइम के पूरे मामले की निगरानी करेंगे। कोलकाता पुलिस के साइबर क्राइम विंग का नेतृत्व डिप्टी कमिश्नर रैंक के आईपीएस अधिकारी करते हैं। उनके ऊपर संयुक्त आयुक्त रैंक के अधिकारी को लाना एक महत्वपूर्ण कदम है। इस बार कैबिनेट ने कोलकाता पुलिस में संयुक्त आयुक्त (साइबर) का पद सृजित करने और संयुक्त आयुक्त (विधि) की नियुक्ति को भी अपनी मंजूरी दे दी है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, आरजी कर अस्पताल की घटना में पुलिस द्वारा मामले को संभालने में लापरवाही के आरोप बार-बार लग रहे थे। आरोप थे कि उचित कानूनी सलाह नहीं ली गई। इसके बाद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि इस बार कानूनी विशेषज्ञ की नियुक्ति की जाएगी। पुलिस को कानूनी सलाह देने के लिए राज्य के 99 अनुमंडलों में से प्रत्येक में एक सलाहकार की नियुक्ति पहले ही की जा चुकी है। इस बार उस पद के लिए कोलकाता पुलिस में एक विशेषज्ञ की नियुक्ति की जाएगी। उस पद के लिए आईपीएस रैंक के अनुभवी अधिकारियों की नियुक्ति की जाएगी।

शिक्षा के क्षेत्र में भी केंद्र ने बंगाल से की अनदेखी

- राज्य के 1.5 अरब रुपये केंद्र के पास बकाया
- भविष्य में देश के अन्य राज्यों से पिछड़ जाएंगे बंगाल के छात्र

निज संवाददाता : अब राज्य के स्कूली छात्रों को भी केंद्र की ओर से वंचित किया जा रहा है। केंद्र से 1.5 अरब रुपये नहीं मिलने के कारण बंगाल के स्कूलों में पर्याप्त स्मार्ट क्लासरूम नहीं बन पा रहे हैं। हालांकि, अन्य राज्यों के स्कूलों को बड़ी संख्या में स्मार्ट क्लास में पढ़ाई का अवसर मिल रहा है। चूंकि केंद्र पैसा नहीं दे रहा है, इसलिए डिजिटल और प्रैक्टिकल कक्षाओं के उपयोग और प्रौद्योगिकी के उपयोग के लाभ के मामले में बंगाल के छात्र भविष्य में देश के अन्य राज्यों से पिछड़ जाएंगे।

बता दें कि समग्र शिक्षा मिशन परियोजना के पैसे से पूरे देश में स्मार्ट क्लासरूम बनाए जा रहे हैं।राज्य के समग्र शिक्षा मिशन के एक अधिकारी ने बताया कि हालांकि पिछले वित्तीय वर्ष में केंद्र से 342 स्मार्ट क्लास बनाने की मंजूरी मिली थी, लेकिन प्रदेश में अब तक सिर्फ 100 स्मार्ट क्लास ही बन पाए हैं। वे 100 स्मार्ट क्लास केंद्र द्वारा भेजे गए पैसे से ही बन पाए हैं। बेशक, इस पैसे का 40 फीसदी हिस्सा भी राज्य सरकार का है। उन्होंने साफ कहा कि चालू वित्तीय वर्ष में शेष 242 स्मार्ट क्लास के निर्माण के लिए 1500 करोड़ रुपये आवंटित करने के लिए केंद्र से मंजूरी मांगी गई है। केंद्र ने अभी तक उसे मंजूरी नहीं दी है। पिछले दो साल में केंद्र से राज्य को कोई पैसा नहीं मिला है। केंद्र की ओर से राज्य को वंचित करने का मामला सिर्फ स्मार्ट क्लास के मामले में ही नहीं है। केंद्र मिड-डे मील, आवास योजना का पैसा, 100 दिन के काम का पैसा भी नहीं दे रहा है। राज्य सरकार गरीब परिवारों के लिए आवासीय मकान बनाने में अपना पैसा खर्च कर रही है। विकास भवन के अधिकारी मिड-डे मील और स्मार्ट क्लास का बकाया पैसा पाने के लिए कई बार केंद्र से गुहार लगा चुके हैं। लेकिन केंद्र सरकार हमेशा से बंगाल के प्रति उदासीन रही है।

विकास भवन के एक अधिकारी ने बताया कि पूरे शिक्षा मिशन को पीएम श्री परियोजना में शामिल किया जा रहा है। पीएम श्री परियोजना और समग्र शिक्षा मिशन परियोजना के बीच कोई संबंध नहीं है। क्योंकि, समग्र शिक्षा मिशन की शुरुआत सबसे पहले 2003 में हुई थी। समग्र शिक्षा मिशन लंबे समय से छात्रों के हित में काम कर रहा है। अधिकारियों को बार-बार दिल्ली जाने के बाद वापस लौटना पड़ा। पिछले दो साल से पैसे के अभाव में छात्रों के भविष्य का क्या होगा, इसका जवाब शिक्षा विभाग के अधिकारियों के पास नहीं है। समग्र शिक्षा मिशन में शामिल स्मार्ट क्लास के निर्माण के लिए केंद्र और राज्य दोनों सरकारों को पैसा देना है।

पहले केंद्र ने समग्र शिक्षा मिशन के लिए 80 फीसदी पैसा आवंटित किया था। राज्य ने 20 फीसदी दिया। अब केंद्र का अनुपात घटाकर 60 फीसदी कर दिया गया है। राज्य को 40 फीसदी पैसा खर्च करना है। समग्र शिक्षा मिशन परियोजना में कहा गया है कि प्रत्येक राज्य को प्रत्येक ब्लॉक में एक उच्च गुणवत्ता वाला मॉडल स्कूल बनाना है। जहां स्मार्ट क्लास, डिजिटल लैब, लाइब्रेरी समेत उच्च गुणवत्ता वाली बुनियादी सुविधाएं होंगी। हालांकि, देश के अधिकतर राज्यों में कई गुना स्मार्ट क्लास बन चुके हैं, लेकिन बंगाल के छात्रों को सिर्फ 100 स्मार्ट क्लासरूम का ही अवसर मिल पाया है।

गंभीर समाचार
Classifieds/ Display/ Notice/ Others
Get Your Advertisement Noticed
Book Your Space
9874882045 9831113679
09830045693 09830011017
E-mail-gambheersamachar@gmail.com

Page-4_Layout 1 6/23/2025 3:48 PM Page 1

घरों में फिलहाल नहीं लगेंगे स्मार्ट मीटर

- बिजली विभाग ने जारी की अधिसूचना
- कुछ शिकायतें मिलने के बाद लिया गया फैसला

निज संवाददाता : स्मार्ट मीटर लगाने को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। आरोप लगे हैं कि इससे बिजली बिल ज्यादा आ रहा है। इस माहौल में राज्य बिजली विभाग ने अधिसूचना जारी कर कहा है कि सरकारी या व्यावसायिक संस्थानों के अलावा अन्य उपभोक्ताओं के घरों में स्मार्ट मीटर लगाने पर फिलहाल रोक लगा दी गई है। उन्होंने बताया है कि कुछ शिकायतें मिलने के बाद जरूरी कदम उठाने के लिए यह फैसला लिया गया है।

विपक्षी नेता शुभेंदु अधिकारी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में राज्य के इस कदम की आलोचना की है।राज्य बिजली विभाग की अधिसूचना में कहा गया है कि व्यावसायिक संस्थानों, सरकारी कार्यालयों और दूरसंचार टावरों जैसी जगहों पर स्मार्ट मीटर सफलतापूर्वक लगाए गए हैं। उसके बाद तीन-चार जिलों में कुछ उपभोक्ताओं के घरों में प्रायोगिक तौर पर स्मार्ट मीटर लगाए भी गए थे। लेकिन इसके बारे में कुछ शिकायतें मिलने के बाद जरूरी कदम उठाने के लिए उपभोक्ताओं के घरों में स्मार्ट मीटर लगाने पर फिलहाल रोक लगाई जा रही है।कई उपभोक्ताओं ने शिकायत की है कि इन स्मार्ट मीटरों को लगाने के बाद उनके बिजली बिल में बढ़ोतरी हो रही है। उन्होंने कुछ जगहों पर विरोध प्रदर्शन भी किया है। हाल ही में हुगली के बंडेल में एक ग्राहक ने शिकायत की कि उसके घर में स्मार्ट मीटर लगाने के बाद उसे एक महीने में 12,000 रुपये का बिजली बिल मिला। विपक्षी भाजपा, सीपीएम और कांग्रेस ने एक साथ विरोध प्रदर्शन किया।

सीपीएम ने आरोप लगाया कि जबरन प्रीपेड स्मार्ट मीटर लगाकर राज्य की बिजली सेवा का निजीकरण किया जा रहा है। सीपीएम के श्रमिक संगठन सीआईटीयू से संबद्ध संगठन पश्चिम बंगाल राज्य विद्युत मेन्स यूनियन और पश्चिम बंगाल राज्य विद्युत शिल्प सहायक यूनियन और पेंशनर्स समाधान समिति ने आरोप लगाया कि राज्य बिजली विभाग रणनीतिक रूप से राज्य के लोगों को प्रीपेड स्मार्ट इलेक्ट्रिक मीटर का उपयोग करने के लिए मजबूर कर रहा है। सीपीएम संगठन ने यह भी आरोप लगाया कि अगर मीटर में कोई खराबी आती है, तो ग्राहकों को अतिरिक्त भुगतान करना होगा एडवांस में पैसे जमा करके बिजली खरीदकर ग्राहक एक निश्चित मात्रा में बिजली का उपयोग कर सकेंगे। आधी रात को प्रीपेड पैसे खत्म होने पर भी बिजली कनेक्शन काट दिया जाएगा।

बिजली की कीमत भी मांग के हिसाब से घटती-बढ़ती रहेगी, जिससे आम आदमी को परेशानी होगी। किसान खास तौर पर प्रभावित होंगे। नतीजतन, कृषि उत्पादों की कीमतों में काफी वृद्धि होगी, ऐसा वामपंथी संगठनों का दावा है। राज्य के बिजली मंत्री अरूप विश्वास ने उस आरोप को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि यह आरोप निराधार है। इस बार राज्य ने एक अधिसूचना के जरिए स्मार्ट मीटर लगाने को लेकर एक नए फैसले की घोषणा की है। इस अधिसूचना के प्रकाशन के बाद शुभेंदु ने एक पोस्ट के जरिए तंज कसा। उन्होंने अधिसूचना की आखिरी लाइन पर लाल स्याही से लिखा, बोझो थाला। उस आखिरी लाइन में राज्य ने कहा है कि ग्राहकों के घरों में स्मार्ट मीटर लगाना फिलहाल रोक दिया जाना चाहिए।

व्यापारियों की सुरक्षा के लिए पोस्ता में सीसीटीवी लगा रहा लालबाजार

पोस्ता बाजार इलाके में बढ़ रहीं सोना लूट जैसी घटनाएं

- 53 कैमरों के लिए 20 लाख रुपये किये गये आवंटित
- सीबीआई, ईडी की आड़ में सोना लूट की घटी थी घटना

निज संवाददाता : पोस्ता इलाके में आपराधिक उपद्रव के आरोप हैं। सीबीआई और ईडी की आड़ में सोना लूट जैसी घटनाएं पोस्ता बाजार इलाके में बढ़ रही हैं। व्यापारियों और इलाके के निवासियों की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए लालबाजार ने पूरे इलाके में 53 सीसीटीवी कैमरे लगाने का फैसला किया है। क्योंकि, पोस्ता इलाके में सोने का बाजार है।

लालबाजार पुलिस ने इसके लिए करीब 20 लाख रुपये आवंटित किया है। पुलिस ने कहा कि मध्य कोलकाता के पोस्ता और बड़ाबाजार इलाके व्यापारिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। हाल ही में, कोलकाता नगर निगम के वार्ड नंबर 23 को लालबाजार ने अतिरिक्त सीसीटीवी कैमरे लगाने के लिए चुना था। इस वार्ड में दो अस्पताल, हंसपुकुरिया व आड़ीबांसतला, सोनापट्टी, हरिराम गोयनका स्ट्रीट, कलाकार स्ट्रीट समेत कई अन्य इलाके हैं, जहां प्रतिदिन करोड़ों रुपये का लेन-देन होता है। खरीदारी व कारोबार के लिए लाखों लोग प्रतिदिन उस इलाके में आते हैं। उस इलाके से अक्सर चोरी व पॉकेटमारी जैसी शिकायतें पुलिस के पास आती रहती हैं। पुलिस व सीबीआई की आड़ में लूटपाट के मामले भी सामने आते रहते हैं। कुछ दिन पहले ही सीबीआई अधिकारी बनकर स्वर्ण व्यवसायी के कर्मचारी से 400 ग्राम सोने के जेवरात लूट लिए गए थे। इससे पहले भी पुलिस व सीबीआई द्वारा इस इलाके में सोना लूटने की घटनाएं हो चुकी हैं। डकैती जैसे अपराध भी हो चुके हैं। इसे देखते हुए पुलिस ने इलाके के व्यवसायियों से पोस्ता इलाके में सीसीटीवी कैमरा लगाने का बार-बार अनुरोध किया था। कुछ जगहों पर कैमरे लगाए गए। लेकिन व्यवसायियों ने सभी जगहों पर कैमरे नहीं लगाए। ट्रैफिक पुलिस व पोस्ता थाना की ओर से कुछ जगहों पर कैमरे लगाए गए। लेकिन कुछ जगहों पर कैमरे खराब हो गए हैं। कुछ अपराधों की जांच शुरू करने के बाद पुलिस को पता चला कि पोस्ता के कुछ इलाके अभी भी सीसीटीवी के दायरे से बाहर हैं। हालांकि, किसी भी अपराध को नियंत्रित करने और उसकी जांच करने में सीसीटीवी का बहुत महत्व होता है। इसलिए पुलिस ने अपराधियों पर नजर रखने के लिए पूरे इलाके का सर्वे किया। पुलिस अधिकारियों ने उन इलाकों की पहचान की, जहां सीसीटीवी कैमरे नहीं लगे हैं। पोस्ता थाने की ओर से उन इलाकों के नाम भी लालबाजार को बताए गए। लालबाजार के सूत्रों ने बताया कि इन सभी कैमरों की फीड पोस्ता थाने में होगी। लालबाजार और पोस्ता थाने में बैठे अधिकारी इलाके की हर सड़क पर सीधी नजर रख सकेंगे। सूत्रों के मुताबिक, शुरुआत में पोस्ता थाना क्षेत्र के कलाकार स्ट्रीट और देवेंद्र दत्ता लेन क्रॉसिंग, कलाकार स्ट्रीट और शिवतला स्ट्रीट, कलाकार स्ट्रीट और रतन सरकार गार्डन स्ट्रीट क्रॉसिंग, शिवतला स्ट्रीट और बैकुंठ सेठ लेन क्रॉसिंग, रतन सरकार गार्डन स्ट्रीट और राजा ब्रजेंद्र नारायण स्ट्रीट क्रॉसिंग पर कैमरे लगाए जाएंगे। इसके अलावा, सूची में केके टैगोर स्ट्रीट और राय लेन क्रॉसिंग, केके टैगोर और रवींद्र सरनी क्रॉसिंग जैसी सड़कें भी शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि सूची में शामिल अन्य महत्वपूर्ण सड़कों और क्रॉसिंग में ब्रजेंद्र नारायण स्ट्रीट, हंसपुकुर फर्स्ट लेन, हंसपुकुर फर्स्ट लेन और कानू लाल लेन क्रॉसिंग, सुखलाल जोहरी लेन, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट शामिल हैं।

सिल्वर स्क्रीन पर आएगी ज्योति बसु की बायोपिक

- भारतीय राजनीति के इस अनोखे चरित्र के कई ज्ञात और अज्ञात तथ्यों को किया जाएगा उजागर

निज संवाददाता : राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री व माकपा के दिवंगत नेता ज्योति बसु के जीवन पर फिल्म बनाने की चर्चा है। यानी ज्योति बसु की बायोपिक सिल्वर स्क्रीन पर दिखाई जाएगी। अभी इस पर गहन चर्चा चल रही है कि बायोपिक में ज्योति बसु की भूमिका कौन निभाएगा। जैसा कि हम जानते हैं कि बंगाली और भारतीय राजनीति में वे एक महान हस्ती हैं। वे लगातार तेईस साल तक बंगाल के मुख्यमंत्री रहे। वे कई बंगालियों के लिए उम्मीद की रोशनी थे। बड़ी बात यह कि उनका बंगाल का प्रधानमंत्री बनना एक ऐतिहासिक भूल के कारण छूट गया था। खुद ज्योति बसु के मुताबिक पार्टी की वह ऐतिहासिक भूल थी। अब वही ज्योति बसु बड़े पर्दे पर जीवंत होंगे। माकपा सूत्रों के मुताबिक, उनके ज्योति भावों को तीखा करने के लिए उन पर बायोपिक बनाई जा रही है। ज्योति बसु की भूमिका में कौन नजर आएगा?

पार्टी सूत्रों के मुताबिक, इस पर काफी समय से योजना चल रही थी। अब इसे अमलीजामा पहनाया जाएगा। बड़ी बात यह कि ज्योति बसु की बायोपिक पूरी तरह से माकपा पार्टी के फंड से बनने जा रही है। शुरुआती दौर में नसीरुद्दीन शाह जैसे अभिनेताओं से बातचीत हो चुकी है। तो क्या वे ही मशहूर राजनीतिक नेता की भूमिका निभाएंगे? यह अभी तक स्पष्ट नहीं है। हालांकि, यह ज्ञात है कि फिल्म का प्री-प्रोडक्शन कार्य अगले साल की शुरुआत से शुरू होगा। माकपा ने ज्योति बसु रिसर्च सेंटर के बैनर तले इस बायोपिक को बनाने की योजना बनाई है। भारतीय राजनीति के इस अनोखे चरित्र के बारे में कई ज्ञात और अज्ञात तथ्यों को जीवनी फिल्म में उजागर किया जाएगा। अलीमुद्दीन स्ट्रीट (माकपा का प्रदेश मुख्यालय) नेतृत्व पहले ही कोलकाता और मुंबई के कई निर्देशकों से बात कर चुका है।

इस संबंध में, माकपा के वरिष्ठ नेता रॉबिन देव ने कहा कि ज्योति बसु ने कई ऐसे काम किए हैं जो बहुतों को नहीं पता हैं। इस बार पूर्व मुख्यमंत्री की बायोपिक में इन सभी पर प्रकाश डाला जाएगा। यह बायोपिक बांग्ला के साथ-साथ मांग के अनुसार अन्य भाषाओं में भी रिलीज की जाएगी। कयास लगाया जा रहा है कि क्या दिवंगत नेता 2026 के चुनावों से पहले अलीमुद्दीन की पनडुब्बी निकालने की एकमात्र उम्मीद हैं? माकपा को आलोचना का सामना

करना पड़ रहा है। तृणमूल प्रवक्ता और पार्टी के राज्य महासचिव कुणाल घोष कहते हैं-''उनके पास न कोई चेहरा है, न कोई नेतृत्व। नए लोग अपने निर्वाचन क्षेत्र में भी नहीं जीत सकते। नतीजतन, अब उन्हें ज्योति बसु पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

इसलिए उन मुद्दों को भी अच्छे से दिखाया जाना चाहिए। कैसे एक लॉबी ने ज्योति बसु को प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया। कैसे बुद्धदेव भट्टाचार्य ने ज्योति बसु के मंत्रिमंडल को चोरों का मंत्रिमंडल कह कर इस्तीफा दे दिया। अगर उन्हें नहीं दिखाया गया तो बायोपिक पूरी नहीं होगी।' मालूम हो कि राजनीतिक नेताओं पर बायोपिक नई नहीं हैं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पर 'इमरजेंसी', जयललिता पर 'थलाइवी', मनमोहन सिंह पर 'द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' आदि फिल्में बन चुकी हैं। अगर ज्योति बसु पर बायोपिक बनती है तो यह इस श्रृंखला में एक नया जोड़ होगा। राजनीतिक नेताओं पर बनी फिल्मों के जरिए तत्कालीन समाज की परिस्थितियों के बारे में भरपूर जानकारी मिलती है।

क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026

आईआईटी खड़गपुर को वैश्विक स्तर पर 215वां और भारत में मिला चौथा स्थान

निज संवाददाता : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर ने एक बार फिर अपनी प्रतिष्ठा और शैक्षणिक उत्कृष्टता का परिचय देते हुए क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। इस वैश्विक रैंकिंग में संस्थान को 215वां स्थान मिला है, जबकि भारत में इसका स्थान चौथा रहा है। यह रैंकिंग पिछले वर्ष की तुलना में सात स्थान की छलांग है, जो संस्थान की सतत प्रगति, नवाचार के प्रति समर्पण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में उसकी मजबूत स्थिति को दर्शाती है।इस रैंकिंग में आईआईटी खड़गपुर ने कई अहम मानकों पर बेहतरीन प्रदर्शन किया, जैसे पर्यावरणीय स्थिरता, शोध की गुणवत्ता, शिक्षकों के शोध कार्यों के प्रभाव, अंतरराष्ट्रीय शोध नेटवर्क से जुड़ाव और उद्योगों के बीच संस्थान की प्रतिष्ठा। इन क्षेत्रों में मिली सफलता इस बात का प्रमाण है कि आईआईटी खड़गपुर केवल तकनीकी शिक्षा ही नहीं, बल्कि बहु-विषयक शोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और वैश्विक साझेदारियों को भी बराबर प्राथमिकता दे रहा है।संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अमित पात्र ने इस उपलब्धि को पूरे संस्थान की सामूहिक मेहनत का नतीजा बताया और कहा कि यह सफलता ज्ञान के निर्माण और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने की आईआईटी खड़गपुर की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने इसे शिक्षकों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के परिश्रम की सामूहिक उपलब्धि बताया।गौरतलब है कि यह उपलब्धि प्रो. पात्र के निदेशक पद के अंतिम चरण में प्राप्त हुई है। अगले सप्ताह वह संस्थान के नए निदेशक प्रोफेसर सुमन चक्रवर्ती को पदभार सौंपेंगे। प्रो. चक्रवर्ती के नेतृत्व में आईआईटी खड़गपुर के शोध, नई खोज और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के क्षेत्रों में और भी प्रगति की उम्मीद जताई जा रही है।यह रैंकिंग न केवल आईआईटी खड़गपुर की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती प्रतिष्ठा को रेखांकित करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि भारत की उच्च शिक्षा संस्थान वैश्विक मंच पर मजबूती से अपनी पहचान बना रहे हैं और निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हैं।

Page-5_Layout 1 6/23/2025 3:48 PM Page 1

तृणमूल ने लगाया भेदभाव का आरोप

चार राज्यों को मिला बंगाल के 100 दिन के काम का बकाया पैसा

- तृणमूल कांग्रेस ने उठाए सवाल
- केंद्र ने इस राज्य का पैसा चार राज्यों को बांटा
- तीन राज्यों को 13 हजार करोड़ रुपए अतिरिक्त मिले

निज संवाददाता : 2022 से केंद्र ने राज्य के 100 दिन के परियोजना का पैसा रोक दिया है। पिछले तीन सालों में इस सेक्टर में राज्य का बकाया 22 हजार करोड़ रुपए है। केंद्र ने इस राज्य का पैसा चार राज्यों को बांट दिया है। पिछले तीन सालों में वोटों के मोहताज बिहार, तमिलनाडु और भाजपा शासित महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश को 100 दिन के प्रोजेक्ट में 13 हजार करोड़ रुपए अतिरिक्त मिले हैं। तृणमूल कांग्रेस ने केंद्र द्वारा इस बेनजीर तरीके से वंचित करने के खिलाफ आवाज उठाई है। विगत सोमवार रात तृणमूल के राज्य महासचिव कुणाल घोष ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में लिखा कि केंद्र ने बंगाल को उसके बकाया से वंचित कर दिया और उस पैसे को तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और बिहार को दे दिया है। आरोप गंभीर हैं। बंगाल इस भेदभाव और अपमान का जवाब देगा। केंद्र ने पिछले तीन वर्षों में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना यानी 100 दिवसीय परियोजना के लिए बजट आवंटन में कोई बढ़ोतरी नहीं की है। बल्कि इसमें थोड़ी कमी की है। चालू वित्त वर्ष में इस क्षेत्र में केंद्र का कुल आवंटन 86 हजार करोड़ रुपये है। पिछले साल की तुलना में 2 हजार करोड़ रुपये कम है। आवंटन कम करने के बावजूद केंद्र चार राज्यों को अतिरिक्त पैसा देने में सफल रहा है, जबकि बंगाल का पैसा रोक लिया है। केंद्र 9 मार्च 2022 से बंगाल का पैसा नहीं दे रहा है। इस क्षेत्र में बंगाल को सालाना औसतन 7.5 हजार करोड़ रुपये मिलते हैं। केंद्र ने भ्रष्टाचार का हवाला देकर पैसा रोक रखा है। राज्य सरकार अपने खजाने के पैसे से परियोजनाएं चला रही है। हाईकोर्ट ने केंद्र को पैसा देने का आदेश दिया है। फिर भी केंद्र पैसा नहीं दे रहा है। केंद्रीय कटौती के विरोध में तृणमूल नेता और कार्यकर्ता मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के निर्देश पर दिल्ली भी जा चुके हैं। ममता बनर्जी खुद कई बार प्रधानमंत्री को पत्र लिख चुकी हैं। फिर भी स्थिति नहीं बदली है। अब ऐसा लग रहा है कि केंद्र ने बंगाल को मिलने वाले पैसे को अपनी मर्जी से चार राज्यों में बांट दिया है।

नागरिक स्वास्थ्य संघ ने प्रदान की 103 नागरिकों को नेत्र ज्योति

सेवा, धर्म, राजनीति के त्रिवेणी संगम से भारत का विकास – दिलीप

निज संवाददाता : नागरिक स्वास्थ्य संघ द्वारा समाजसेवी गोविंदलालजी झंवर, राजकुमार झंवर एवं परिवार के सहयोग से 103 नागरिकों की आंखों में मोतियाबिंद का ऑपरेशन सेवा शिविर में किया गया। संघ के उपाध्यक्ष इन्द्र कुमार डागा, प्रधान सचिव विकास चन्द चाण्डक, गोवर्धन मूंधड़ा, बल्लभ दुजारी, विकास जायसवाल, बसंत (झबरू) दुजारी, हरि प्रकाश सोनी ने शिविर के उद्धाटनकर्ता दिलीप घोष, समाजसेवी राजेश झंवर, श्वेता झंवर, गौरव झंवर, विनीता झंवर, पूजा झंवर, पूनम बागड़ी एवं समस्त झंवर परिवार के सामाजिक सेवा कार्य की सराहना करते हुए अतिथियों का स्वागत किया। अतिथियों ने संघ नेत्रालय का भ्रमण कर नागरिक स्वास्थ्य संघ के सेवाकार्यों की सराहना की। सेवा, धर्म और राजनीति के त्रिवेणी संगम पर अपने विचार व्यक्त करते हुए दिलीप घोष ने कहा कि यह सनातन भारतीय परम्परा है, मानवता की सेवा धर्म है। मन के भाव, आत्मीय सुख सच्चा सुख है। भारत के विकास के लिये स्वच्छ भारत की नीति और धर्म, सेवा और राजनीति में समन्वय जरूरी है। धन अर्जित करने और परोपकार के संदर्भ में उन्होंने कहा कि गंगा का जल गंगा को अर्पित शाश्वत सत्य है। बिड़ला, बांगड़ परिवार के सेवा कार्यों से प्रेरणा मिलती है। तीर्थ यात्राओं की याद ताजा करते हुए कहा कि तीर्थयात्रियों की सेवा में सक्रिय सामाजिक संस्थाओं, कार्यकर्ताओं के सेवा कार्य प्रेरक हैं। विजय बागड़ी, सुनीता दुजारी, गणेश प्रसाद लाखोटिया, मधुसूदन सफ़्फ़ड़, राजकुमार कोठारी एवं कार्यकर्ता सक्रिय रहे। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन विकास चन्द चांडक ने किया।

मतदाता सूची से हटाया गया बांग्लादेशी तृणमूल नेता का नाम

निज संवाददाता: भारत के मतदाता सूची से बांग्लादेशी नागरिक न्यूटन दास का नाम काट दिया गया। चुनाव आयोग सूत्रों के अनुसार उनका नाम मतदाता सूची से अलग कर दिया गया है। बांग्लादेश से घुसपैठ के बाद न्यूटन काकद्वीप में तृणमूल का नेता बन गया था। आरोप है कि इसके बाद उसका नाम मतदाता सूची में शामिल हो गया था। हाल में सोशल मीडिया में उस देश के कुछ आंदोलन व जुलूस में न्यूटन की तस्वीर वायरल हुई थी। उसके बाद से ही न्यूटन की नागरिकता को लेकर विवाद शुरू हो गया। न्यूटन का दावा है कि वह 2014 से भारत का मतदाता है। 2017 में मतदाता पहचान पत्र खो गया था। उस समय स्थानीय विधायक मंटूराम पाखिरा की सहायता से फिर उन्हें मतदाता पहचान पत्र मिला। इधर मंटू पाखिरा ने साफ कहा कि वे न्यूटन को नहीं जानते। वहीं न्यूटन के भाई ने कहा कि कोरोना के समय न्यूटन भारत आया। उसका नाम किस प्रकार भारत के मतदाता सूची में शामिल हो गया इसकी जानकारी नहीं है। उसने पढ़ाई-लिखाई वहीं की है। उधर सुंदरवन के जिला तृणमूल छात्र परिषद के अध्यक्ष देवाशीष दास के साथ न्यूटन की कई तस्वीरें भी वायरल हुई है। पता चला है कि वे न्यूटन के मित्र और व्यावसायिक भागीदार हैं। दरअसल, कुछ साल पहले बांग्लादेश जाते समय पेट्रापोल सीमा पर आव्रजन अधिकारियों ने न्यूटन से भारतीय दस्तावेज बरामद किए थे। फिर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। न्यूटन 3 महीने जेल में रहा। उस समय देवाशीष ने ही उसे जेल से रिहा कराया था। हालांकि, देवाशीष का दावा है कि उन्होंने न्यूटन के साथ पढ़ाई की है। इसी तरह उनकी मुलाकात न्यूटन से हुई। दरअसल, कुछ साल पहले बांग्लादेश जाते समय पेट्रापोल सीमा पर आव्रजन अधिकारियों ने न्यूटन से भारतीय दस्तावेज बरामद किए थे। फिर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। न्यूटन 3 महीने जेल में रहा।

कोलकाता की सड़कों से फिलहाल नहीं हटेंगे 15 साल पुराने वाहन

निज संवाददाता : शहर की सड़कों से फिलहाल 15 साल पुराने व्यावसायिक वाहन नहीं हटाए जा रहे। परिवहन समस्या और बस मालिकों के संगठन की लंबे समय से चली आ रही मांग को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने सैद्धांतिक रूप से पुरानी बसों को चालू रखने के प्रस्ताव पर सहमति जताई थी। अब कलकत्ता हाईकोर्ट ने उस दलील को स्वीकार कर लिया है। लेकिन शर्तों के साथ। नए नियमों के मुताबिक, अगर कोई व्यावसायिक वाहन 15 साल पुराना भी है, तो उसे साल में दो बार फिटनेस सर्टिफिकेट लेना होगा, ताकि यह पता चल सके कि वह सड़क पर चलने लायक है या नहीं। इस टेस्ट में पास होने के बाद ही उसे सड़क पर उतरने की अनुमति मिलेगी। यह सर्टिफिकेट पुराने वाहनों की आवाजाही के लिए हरी झंडी होगी। 17 जून को राज्य सरकार नई गाइडलाइन का मसौदा कोर्ट को सौंपा। जैसे ही कोर्ट मसौदे पर अपनी राय देगी, उसे अधिसूचना के रूप में प्रकाशित कर दिया जाएगा। इस मुद्दे पर गत सोमवार को परिवहन विभाग और बस संगठनों के साथ बैठक हुई। तय हुआ कि वाहन को साल में दो बार स्वास्थ्य जांच करानी होगी और फिटनेस सर्टिफिकेट लेना होगा। प्रदूषण जांच के लिए 100 रुपये अतिरिक्त देने होंगे। सर्टिफिकेट की वैधता छह महीने की होगी। सरकार का कहना है कि अगर एक साथ सभी पुरानी बसें हटा दी गईं तो शहर की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था चरमरा जाएगी। इसके अलावा पर्यावरण के मुद्दे को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसलिए विकल्प के तौर पर 15 साल से ज्यादा पुराने वाहनों को स्वास्थ्य जांच के आधार पर सड़कों पर चलने की अनुमति देने का फैसला किया गया है।

नीमतला में रवींद्रनाथ टैगोर की समाधि बना नशेड़ियों का अड्डा

जूतों की धूल से ढक रहा पवित्र परिसर

निज संवाददाता : कवि रवींद्रनाथ टैगोर की समाधि परिसर में लोग गांजा पी रहे हैं। बीड़ी-सिगरेट पीकर मौज-मस्ती कर रहे हैं। मोबाइल फोन पर गेम खेल रहे हैं। पैर ऊपर करके बातें करते हैं। प्रशासन की ओर से कोई निगरानी न होने के कारण नीमतला में यह घटना आए दिन हो रही है। उस इलाके के कुछ युवा और किशोर समाधि स्थल को नशेड़ियों का अड्डा बना रहे हैं।स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वार्ड नंबर 20 के पार्षद विजय उपाध्याय ने कहा कि जिस संस्था को इसकी देखभाल की जिम्मेदारी दी गई है, वह कोई काम ही नहीं करती। बिना किसी काम के सुरक्षा है। रवींद्रनाथ टैगोर की समाधि ही नहीं, यही स्थिति प्रफुल्ल चंद्र की समाधि की भी है। इसका उद्धाटन भी नहीं हुआ है। इसे बस्ते में रख दिया गया है। विद्वानों के प्रति उनकी कोई भावना नहीं है। इसीलिए रवींद्रनाथ की समाधि अड्डा और गांजा का अड्डा बन गई है। नगर निगम अधिकारियों को कार्रवाई करने की जरूरत है। रवींद्रनाथ टैगोर की समाधि नीमतला में भूतनाथ शिव मंदिर के पीछे स्थित है। समाधि का प्रवेश द्वार भूतनाथ मंदिर और नीमतला में बिजली की भट्ठी के बगल में है। गंगा के तट पर प्रांगण संगमरमर से ढका हुआ है। एक अच्छी तरह से तैयार जगह पर कई पेड़ हैं। समाधि से थोड़ी दूर गंगा के किनारे बैठने की जगह है। वहां कई लोग आते हैं। इसकी देखभाल के लिए सुरक्षा गार्ड भी हैं। कोई भी व्यक्ति समाधि और उससे सटे इलाके में प्रवेश कर सकता है। आरोप है कि नीमतला, अहिरीटोला और रेल लाइन के किनारे रहने वाले कुछ युवक नियमित रूप से समाधि पर अड्डा जमाते हैं। वे पवित्र स्थान का इस्तेमाल नशे के अड्डे के रूप में करते हैं। मुख्य मकबरा एक छतरी से घिरा हुआ है। कई लोग धूप से बचने के लिए छतरी के नीचे आकर बैठते हैं। इसके अलावा, वे युवक घूमने आते हैं। वे जूते पहनकर मजार तक जाने से नहीं हिचकिचाते। बीड़ी-सिगरेट से मौज-मस्ती करते हैं। छिपकर गांजा पीते हैं। मोबाइल पर गेम खेलते हैं। ये सब अक्सर होता रहता है। इसके बावजूद निगरानी का कोई मुद्दा नहीं है। श्मशान घाट का सुरक्षा गार्ड उन्हें रोकता नहीं है। पास में ही पुलिस चौकी है। आरोप है कि पुलिस देखती भी नहीं है। मजार पर आने वाले लोगों का कहना है, अगर जगह घेर दी गई तो मजार पर बैठने का मौका नहीं मिलेगा। इन नशेड़ियों को अंदर नहीं आने देना चाहिए। नतीजतन, कवि के सम्मान को ठेस पहुंच रही है। कई विदेशी लोग मजार देखने आते हैं। कोलकाता का सम्मान नष्ट किया जा रहा है। बंगाल की परंपरा नष्ट की जा रही है।

Mohta Publishing House
28/5, Convent Road, Moulali,
Kolkata-700014
Phone : 98300-45693
E-Mail : gambheersamachar@gmail.com

संपादकीय

अमेरिका की दबंग कूटनीति का दौर

पश्चिम एशिया में धौंस की कूटनीति का एक खतरनाक दौर शुरू हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ईरान की मुल्लाशाही(मुल्लाओं यानी मजहबी नेताओं का शासन) को आर्थिक प्रतिबंधों में रियायत का प्रलोभन देकर परमाणु शक्ति और मिसाइल तकनीक की महत्वाकांक्षा को तिलांजलि देने के सौदे पर तैयार करने में लगे थे। तभी इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने यकायक नाटकीय तरीके से हमला करके ईरान की सेना और परमाणु शक्ति के शीर्ष नेतृत्व का सफाया कर दिया। हमले पर ट्रंप की आरंभिक प्रतिक्रियाएं देखकर लगा कि अपने कूटनीतिक प्रयासों के बीच इजरायल का कूद पड़ना उन्हें अच्छा नहीं लगा, पर जैसे ही उन्हें इजरायली हमलों की नाटकीय कामयाबी का अहसास हुआ तो उन्होंने इजरायल को रोकने की जगह उसकी कामयाबी की बात करना और ईरान से समर्पण करने की मांग करना शुरू कर दिया। एक तरफ वे ईरान को दो हफ्तों का समय देने की बात कर रहे थे और दूसरी तरफ दिएगो गार्सिया में अपने बी2 बमवर्षक विमानों को हमलों के लिए तैयार कर रहे थे। झांसा देकर वार करना ट्रंप की शैली है, जिसका वर्णन उन्होंने अपनी चर्चित पुस्तक 'द आर्ट आफ द डील' में किया है। ईरान को दो हफ्तों के झांसे में रखकर फोर्डो, नतांज और इस्फहान के परमाणु संयंत्रों पर बम बरसा दिए। ट्रंप ने फोर्डो समेत ईरान के परमाणु केंद्रों को ध्वस्त करने का दावा करते हुए धमकी दी है कि यदि ईरान अब भी समझौते के लिए राजी नहीं हुआ तो और विनाशकारी हमले किए जाएंगे। ब्रिटिश प्रधानमंत्री स्टार्मर ने भी ट्रंप के सुर में सुर मिलाते हुए ईरान के परमाणु कार्यक्रम को विश्व के लिए गंभीर खतरा बताया। ईरान ने जवाब में इजरायली शहरों पर मिसाइलों की बरसात शुरू कर दी है, लेकिन इसके बावजूद वहां लोग जश्न मना रहे हैं। प्रधानमंत्री नेतन्याहू के लिए तो यह उनके राजनीतिक करियर की सबसे कामयाब घड़ी है, पर अमेरिका के भीतर इस हमले को लेकर जनमत बुरी तरह बंटा हुआ है। दूसरे देश पर हमला करने के लिए राष्ट्रपति को अमेरिकी संसद का अनुमोदन लेना जरूरी होता है। इराक पर हमले से पहले दोनों बुश राष्ट्रपतियों ने कांग्रेस का अनुमोदन लिया था। इसलिए अमेरिकी सांसदों-सीनेटरों का एक वर्ग ट्रंप के लड़ाई में उतरने से नाराज है। ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी का 'मागा' धड़ा इससे नाराज है कि उन्होंने अमेरिका को युद्धों में न उलझाने के चुनावी वादे को तोड़कर इजरायल की लड़ाई में पांव फंसा लिए हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय से भी मिश्रित प्रतिक्रिया मिल रही है। यूरोप और पश्चिम एशिया के देश जहां ईरान के परमाणु कार्यक्रम का खतरा कम होने और समझौते की संभावना प्रबल होने का स्वागत करेंगे, वहीं अमेरिकी हमले की वैधता की निंदा होगी। रूस और चीन समेत दुनिया के दूसरे देश कूटनीति का रास्ता छोड़कर दूसरे देश की प्रभुसत्ता के उल्लंघन की निंदा करेंगे। अमेरिका-इजरायल के साथ-साथ ईरान के साथ भी घनिष्ठ संबंध होने के कारण भारत के लिए यह हमला धर्मसंकट खड़ा करता है। भारत यह तो चाहेगा कि ईरान को परमाणु शक्ति बनने से रोका जाए, पर उसके लिए उसकी प्रभुसत्ता का अतिक्रमण करने की हिमायत कभी नहीं कर सकता। दिलचस्प यह भी है कि ईरान 1968 से ही परमाणु अप्रसार संधि या एनपीटी का सदस्य है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी उसकी परमाणु गतिविधियों पर नजर रख सकती है। जबकि इजरायल परमाणु शक्ति होते हुए भी एनपीटी का सदस्य नहीं है। यानी एक तरह से एक 'चोर' जज और सिपाही बना बैठा है। इस संदर्भ में इजरायल का तर्क रहा है कि दशकों से परमाणु शक्ति होने के बावजूद उसने न कभी किसी दूसरे देश को मिटाने की धमकी दी और न ही परमाणु प्रसार किया है। जबकि ईरान की मुल्लाशाही अक्सर इजरायल के सर्वनाश की बात करती रहती है। हालांकि यह तर्क ईरान से अधिक तो पाकिस्तान पर लागू होता है, जिसके प्रसार की बदौलत आज ईरान परमाणु शक्ति बनने के कगार पर है। फिर भी अमेरिका ने वैसी तत्परता पाकिस्तान को परमाणु शक्ति बनने से रोकने में नहीं दिखाई जैसी वह ईरान को रोकने में दिखा रहा है।

मौलिक अधिकारों की रक्षा में न्यायपालिका की हो रही है चूक?

किशन मिश्रा

लोकतंत्र की स्थापना में न्यायपालिका का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना न्यायपालिका के किसी देश में लोकतंत्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। विविधताओं से भरे भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में न्यायपालिका को संविधान का सबसे बड़ा रक्षक माना जाता है। आतंकवादियों को सजा सुनाने में देरी का मामला हो या फिर देश विरोधी ताकतों को अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर खुली छूट को कानूनी संरक्षण देना इसी श्रेणी में आता है। संसद द्वारा बनाये गये कानून को बेवजह लटका देना भी न्यायपालिका के खिलाफ एक बड़ा मुद्दा बना रहता है।जबकि राष्ट्रहित और आतंकवादी घटनाओं से जुड़े मामलों में न्यायपालिका का हस्तक्षेप कई बार विवादों को जन्म देता है।नया कृषि कानून, वक्फ बोर्ड संशोधन कानून में सुप्रीम कोर्ट की अति सक्रियता इसकी बड़ी मिसाल हैं। यह हस्तक्षेप कब रक्षक की भूमिका निभाता है और कब खतरनाक साबित हो सकता है, इसको लेकर अक्सर विवाद बना रहता है।बात न्यायपालिक की चले तो सेना के एक पूर्व लेफ्टिनेंट जनरल देवेंद्र प्रताप पांडे के बयान का जिक्र करना जरूरी है,जो 22 अप्रैल को पहलगाम में 27 हिन्दुओं की आतंकवादियों द्वारा की गई सामूहिक हत्या के बाद सामने आया था। पांडे ने तब कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि सुप्रीम कोर्ट के जजों को पहलगाम जाना चाहिए, ताकि वे आतंकी हमले की वास्तविकता को समझ सकें। पांडे ने एक न्यूज एजेंसी को दिये साक्षात्कार में कहा था कि सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में हस्तक्षेप किया, जिसके चलते सरकार और सेना के फैसलों में देरी हुई। उनके मुताबिक, जजों ने आतंकवाद से निपटने के लिए सरकार की नीतियों पर सवाल उठाए, जो इस हमले का एक कारण बने। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से अपील की कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में सरकार और सेना को स्वतंत्र रूप से काम करने दे।आतंकवाद जैसे संवेदनशील मुद्दों पर न्यायपालिका का अति-हस्तक्षेप कई बार राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता है। आतंकवादी गतिविधियां तेजी से बदलती है, और इनसे निपटने के लिए जांच एजेंसियों को त्वरित निर्णय लेने की स्वतंत्रता चाहिए। कई बार न्यायालयों के बार-बार के हस्तक्षेप से जांच प्रक्रिया बाधित होती है। 2008 के मुंबई हमलों के बाद अजमल कसाब के मामले में न्यायिक प्रक्रिया को पूरा करने में वर्षों लग गए, जिससे कई सवाल उठे कि क्या ऐसी प्रक्रियाएं आतंकवाद से लड़ने में बाधा बनती हैं। न्यायपालिका के हस्तक्षेप का एक और खतरनाक पहलू तब सामने आता है, जब यह कार्यपालिका के क्षेत्र में अतिक्रमण करती है। राष्ट्रहित से जुड़े मामलों, जैसे सीमा सुरक्षा या आतंकवाद-रोधी नीतियों में, कार्यपालिका को त्वरित और गोपनीय निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। यदि न्यायालय इन निर्णयों की बार-बार समीक्षा करने लगे, तो यह सरकार की कार्यक्षमता को प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, कुछ मामलों में यूएपीए के तहत गिरफ्तार व्यक्तियों को जमानत देने के निर्णय ने जांच एजेंसियों के मनोबल को कम किया। इससे यह धारणा बनी कि न्यायपालिका आतंकवाद के प्रति नरम रुख अपना रही है, जो जनता के बीच अविश्वास पैदा कर सकता है।दूसरी ओर, न्यायपालिका का यह तर्क है कि वह केवल संविधान की रक्षा कर रही है। आतंकवाद से लड़ने के नाम पर नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं हो सकता। कई बार जांच एजेंसियां जल्दबाजी में या राजनीतिक दबाव में बिना पर्याप्त सबूत के लोगों को हिरासत में ले लेती हैं। ऐसे में न्यायालय का हस्तक्षेप जरूरी हो जाता है। बहरहाल, इस समस्या का समाधान तभी संभव है, जब न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका के बीच बेहतर समन्वय हो। आतंकवाद से निपटने के लिए कानून बनाते समय यह सुनिश्चित करना होगा कि वे संवैधानिक मूल्यों का उल्लंघन न करें। जांच एजेंसियों को और अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाना होगा, ताकि उनके कार्यवाही पर सवाल न उठें। साथ ही, न्यायपालिका को यह समझना होगा कि राष्ट्रहित और आतंकवाद जैसे मामलों में उसका हस्तक्षेप संतुलित होना चाहिए। अति-हस्तक्षेप से न केवल जांच प्रक्रिया बाधित होती है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा भी बन सकता है। वैसे सिक्के का दूसरा पहलू भी है।

न्यायपालिका का हस्तक्षेप कई मामलों में राष्ट्रहित की रक्षा करता है। जब सरकार या जांच एजेंसियां बिना ठोस सबूत के किसी व्यक्ति को आतंकवादी गतिविधियों के लिए हिरासत में लेती हैं, तो न्यायालय उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करता है। 1990 के दशक में टाडा (आतंकवादी और विघटनकारी गतिविधियां निवारण अधिनियम) के दुरुपयोग के कई मामले सामने आए, जहां निर्दोष लोग लंबे समय तक जेल में रहे। सर्वोच्च न्यायालय ने कई ऐसे मामलों में हस्तक्षेप कर न केवल निर्दोषों को रिहा किया, बल्कि सरकार को कड़े कानूनों के दुरुपयोग पर चेतावनी भी दी। यह हस्तक्षेप लोकतंत्र की रक्षा करता है, क्योंकि बिना सबूत के हिरासत नागरिकों के विश्वास को कमजोर करती है।कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रहित और आतंकवादी घटनाओं से जुड़े मामलों में न्यायपालिका की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि वह अपने हस्तक्षेप में कितना संतुलन बनाए रखती है। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि न्यायपालिका को राष्ट्रहित के किसी मामले में संतुलन, संवैधानिक मूल्यों की रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच सामंजस्य स्थापित करना होगा, ताकि लोकतंत्र और देश की सुरक्षा दोनों बनी रहें।

बहुजन मंच की पुरानी विरासत पर चंद्रशेखर की नई बुनियाद

संजय सक्सेना

उत्तर प्रदेश की राजनीति एक बार फिर नई करवट लेती नजर आ रही है। 2027 के विधानसभा चुनाव भले ही अभी दो साल दूर हों, लेकिन सियासी सरगर्मियां अभी से तेज होती जा रही हैं। भारतीय जनता पार्टी जहां अपनी सत्ता बचाने के लिए पूरी ताकत झोंक रही है, वहीं समाजवादी पार्टी सामाजिक समीकरणों के सहारे वापसी की राह तलाश रही है। कांग्रेस भी खोई हुई जमीन की तलाश में सक्रिय हो चुकी है। लेकिन इन तमाम प्रमुख दलों के बीच बहुजन राजनीति में हलचल तब तेज़ हो गई जब आज़ाद समाज पार्टी (एएसपी) के अध्यक्ष और नगीना से सांसद चंद्रशेखर आज़ाद ने बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती को सीधे चुनौती दे डाली। झांसी में हाल ही में आयोजित 'प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन' में चंद्रशेखर ने न सिर्फ बसपा की नीतियों को निशाने पर लिया, बल्कि मायावती के नेतृत्व पर भी सवाल खड़े कर दिए। उनका साफ कहना था कि बहुजन समाज अब बदलाव चाहता है और यह बदलाव नेतृत्व से शुरू होगा। चंद्रशेखर ने कहा कि मायावती बहुजन समाज का भरोसा खो चुकी हैं और अब समाज एक नई सोच, नया नेतृत्व और नई दिशा की तलाश में है।यह पहला अवसर नहीं है जब चंद्रशेखर ने बसपा के खिलाफ मुखर रुख अपनाया हो, लेकिन इस बार उनका लहजा अधिक आक्रामक और स्पष्ट

था। उन्होंने कहा कि बसपा का लगातार कमजोर होना इस बात का प्रमाण है कि पार्टी अब जमीनी मुद्दों से कट चुकी है। 'बहुजन समाज को नारे नहीं, भागीदारी चाहिए,' चंद्रशेखर ने यह कहकर अपने इरादे और दृष्टिकोण को स्पष्ट कर दिया। इस सम्मेलन में उमड़ी भीड़, खासकर युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी ने यह साफ कर दिया कि चंद्रशेखर की लोकप्रियता अब सोशल मीडिया से निकलकर गांव-कस्बों तक पहुंच रही है। मंच पर उनके साथ कई ऐसे चेहरे दिखे, जो कभी बसपा का हिस्सा रह चुके थे। ऐसे में राजनीतिक पंडित इस भीड़ को महज एक सभा की सफलता नहीं मानते, बल्कि इसे बहुजन राजनीति के भविष्य की आहट के तौर पर देख रहे हैं।चंद्रशेखर ने अपने भाषण में भाजपा पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा की नीतियां वंचितों के उत्थान के विरुद्ध रही हैं। उन्होंने दो टूक कहा-''वे नहीं चाहते कि दलित, पिछड़ा और आदिवासी समाज मुख्यधारा में आए। बहुजन अगर संगठित हो गया तो सत्ता उनके हाथ से निकल जाएगी''। उन्होंने बहुजन युवाओं से आवाहन किया कि वे खुद को किसी राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस्तेमाल न होने दें और अपने भविष्य की बागडोर खुद संभालें। बसपा की तरफ से चंद्रशेखर के इन बयानों पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है, लेकिन हाल ही में मायावती ने एक बयान में चंद्रशेखर को 'बरसाती मेंढक' बताते हुए कहा था कि ऐसे लोग समाज की एकता को तोड़ने का काम कर रहे हैं। मायावती ने यह भी आरोप लगाया कि कुछ नेता विपक्षी पार्टियों के इशारे पर बहुजन आंदोलन को कमजोर करने की कोशिश में लगे हैं। इस आरोप का चंद्रशेखर ने भी जवाब दिया। उन्होंने कहा कि वह किसी राजनीतिक दल के मोहरे नहीं हैं और ना ही किसी के इशारे पर राजनीति करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया-'हम बहुजन हित की राजनीति करते हैं, न कि किसी की कृपा पर खड़े रहते हैं'।

मौजूदा ईरानी शासन का अंत हो : जाफ़र पनाही

मशहूर फिल्म निर्माता ने की इज़राइल के साथ युद्ध की निंदा

निज संवाददाता : मशहूर व प्रभावशाली ईरानी फ़िल्म निर्माता जाफ़र पनाही ने ईरान और इज़राइल के बीच चल रहे युद्ध के बीच विस्फोटक टिप्पणियां की हैं। उन्होंने इस युद्ध की कड़ी निंदा की। बीते बुधवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में फ़िल्म निर्माता ने लोगों के प्रति जवाबदेह लोकतांत्रिक सरकार के गठन का आह्वान किया। इंस्टाग्राम पर एक लंबे बयान में निर्देशक ने कहा कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली ख़ामेनेई के शासन को बदलने का समय आ गया है।पनाही की फ़िल्म ''इट वाज़ जस्ट एन एक्सीडेंट'' ने इस साल कान फ़िल्म फ़ेस्टिवल में पाल्मे डी ओर जीता। उन्होंने उस फ़िल्म में ईरानी शासन की आलोचना भी की है।इंस्टाग्राम पर एक बयान में पनाही ने संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से ईरान और इज़राइल दोनों द्वारा सैन्य हमलों और नागरिकों की हत्या को रोकने के लिए तत्काल और प्रभावी उपाय करने का आह्वान किया।पाम डीओर पुरस्कार जीतने वाले पनाही ने लिखा-''इस सरकार के पास न तो शक्ति है, न इच्छाशक्ति है, न ही देश पर शासन जारी रखने या संकट से निपटने की वैधता है। इस व्यवस्था के साथ बने रहने का मतलब है और अधिक गिरावट, और अधिक उत्पीड़न देखना।'' पनाही हाल ही में ऑस्ट्रेलिया गए थे। वहां, उन्होंने सिडनी फिल्म फेस्टिवल में फिल्म इट वाज जस्ट एन एक्सीडेंट के लिए शीर्ष पुरस्कार जीता।पनाही 22 साल बाद इट वाज जस्ट एन एक्सीडेंट के साथ कान फिल्म फेस्टिवल में लौटे। फिल्म की समीक्षा में बीबीसी ने लिखा-यह एक ऐसी फिल्म है जो गुस्से से भरी है। एक बदला-केंद्रित थ्रिलर जो एक दमनकारी शासन को निशाना बनाती है। कान फिल्म फेस्टिवल में शीर्ष पुरस्कार जीतने के बावजूद, जाफर पनाही ने ईरानी सरकार के खिलाफ आवाज उठाई।पुरस्कार स्वीकार करने के बाद, उन्होंने ईरानियों से अपने मतभेदों और समस्याओं को एक तरफ रखकर एकजुट होने का आह्वान करते हुए कहा-इस समय सबसे महत्वपूर्ण चीज हमारा देश और देश की स्वतंत्रता है। आइए एकजुट हों। किसी को यह बताने का अधिकार नहीं है कि हम क्या कर सकते हैं, क्या करेंगे या क्या नहीं करेंगे।'यह फिल्म पूर्व राजनीतिक कैदियों के एक समूह के बारे में है जो एक संदिग्ध का अपहरण करते हैं। उनका मानना है कि उन्हें उसी व्यक्ति द्वारा जेल में प्रताड़ित किया गया था। जाफ़र पनाही के अनुसार, यह फ़िल्म ईरान की जेल में उनके अपने अनुभवों से प्रेरित है।मालूम हो कि पनाही को राज्य विरोधी प्रचार के लिए दो बार जेल में डाला गया था। उन पर 14 साल तक फ़िल्म बनाने, मीडिया से बात करने और देश छोड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसके बावजूद, उन्होंने गुप्त रूप से फ़िल्में बनाना जारी रखा।

'संविधान हत्या दिवस' नहीं मनाएगी बंगाल सरकार

♦ केंद्र सरकार के फैसले के विरोध में ममता का एलान

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाने के केंद्र सरकार के एक फैसले पर कड़ी आपत्ति जताई है। केंद्र की बीजेपी सरकार इस दिन को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाने वाली है। ममता बनर्जी ने इसे लोकतंत्र और संविधान का मजाक बताया है। उन्होंने बीजेपी पर लोकतांत्रिक संस्थाओं पर लगातार हमला करने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि बीजेपी उसी संविधान को कमजोर कर रही है। जिसे वह बचाने का दावा करती है। ममता बनर्जी ने यह भी कहा कि उनकी सरकार संविधान हत्या दिवस नहीं मनाएगी। उन्होंने केंद्र सरकार के नोटबंदी जैसे फैसलों की भी आलोचना की है। ममता ने सवाल उठाया कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं या अमित शाह?ममता बनर्जी ने बीजेपी पर पाखंड करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि जो लोग संविधान का सम्मान नहीं करते, वे अब इसकी

पवित्रता की बात कर रहे हैं। यह एक मजाक है। दरअसल केंद्र सरकार ने घोषणा की है कि 1975 में देश में आपातकाल लगाने के विरोध में हर साल 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाया जाएगा।ममता बनर्जी ने कहा कि जिस तरह से बीजेपी संविधान को बदलने और कमजोर करने की कोशिश कर रही है। उसे देखते हुए हम हर दिन संविधान हत्या दिवस मना सकते हैं। उन्होंने बीजेपी के कार्यो को अलोकतांत्रिक बताया। उन्होंने सवाल किया कि क्या बीजेपी की ओर से महाराष्ट्र और बिहार में लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकारों को गिराना संविधान पर हमला नहीं था?तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष ममता बनर्जी ने बीजेपी पर लोकतांत्रिक संस्थाओं पर नियंत्रण रखने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि बीजेपी लोकतंत्र के सभी स्तंभों को कमजोर करना चाहती है, चाहे वह निर्वाचन आयोग हो या मीडिया। ममता बनर्जी ने कहा कि हम उन लोगों से लोकतंत्र पर भाषण नहीं सुनना चाहते जो हर दिन लोकतंत्र और देश के संघीय ढांचे पर चोट पहुंचा रहे हैं।ममता बनर्जी ने नोटबंदी जैसे फैसलों के जरिए आर्थिक कुप्रबंधन को लेकर भी केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि नोटबंदी के कारण देश की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो गई। इसलिए 8 नवंबर को अर्थव्यवस्था विनाश दिवस के रूप में भी मनाया जाना चाहिए। ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार पर कटाक्ष करते हुए सवाल किया कि देश का प्रधानमंत्री कौन है? नरेंद्र मोदी या अमित शाह? उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि अमित शाह देश चला रहे हैं।

अविश्वसनीय पर रहस्यमय बनी हवाई जहाज की 11 ए नंबर वाली सीट

♦ 27 साल पहले भी इसी सीट पर बैठे यात्री की बची थी जान

निज संवाददाता : भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक विश्वास कुमार रमेश अहमदाबाद में हुए भयानक विमान हादसे में अविश्वसनीय रूप से बच गए हैं। वह सीट 11 के यात्री थे। उनके टिकट की तस्वीर लगभग वायरल हो चुकी है। लेकिन इस बीच एक और इतिहास सामने आ रहा है। 27 साल पहले एक थाई अभिनेता विमान दुर्घटना में बच गया था। उसका टिकट नंबर भी 11 था ! ढाई दशक से अधिक समय के अंतराल वाले दो समय बिंदुओं ने इस तरह दो विमान दुर्घटनाओं, दो भाग्यशाली लोगों और एक ही नंबर वाली सीट को जोड़ दिया है। जो दर्शाता है कि वास्तविक जीवन में छिपे रहस्य कल्पना के रहस्यों से कम नहीं हैं।11 दिसंबर 1998 को थाई एयरवेज की फ्लाइट नंबर टीजी 261 में बीस साल के रुआंगसाक लोयचुसाक सवार थे। दक्षिणी थाईलैंड में उतरते समय विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस दुर्घटना में 146 यात्रियों में से 101 की मौत हो गई। लेकिन रुआंगसाक बच गए। इतने सालों बाद विश्वास कुमार रमेश के अविश्वसनीय रूप से बच निकलने के बारे में जानने के बाद, उन्होंने फेसबुक पर पोस्ट किया। उन्होंने लिखा कि एक व्यक्ति जो भारत में एक विमान दुर्घटना में बच गया। वह भी मेरे ही तरह एक ही सीट पर बैठा था। 11 ए। 47 वर्षीय अभिनेता ने कहा कि वह खबर सुनकर वास्तव में रोमांचित थे। एक पल में, 27 साल पहले पीछे छूटा अतीत जीवंत हो गया।ज्ञात हो कि 45 वर्षीय विश्वास कुमार सीट 11 ए पर बैठे थे। यात्रियों और चालक दल के सदस्यों सहित कुल 242 लोगों में से, वह शायद एकमात्र जीवित व्यक्ति हैं। दुर्घटना में उनके साथी यात्री और भाई अजय कुमार रमेश की मृत्यु हो गई। वह दूसरी पंक्ति में बैठे थे। उन्होंने कहा कि मैंने उड़ान भरने के ठीक 30 सेकंड बाद एक तेज़ आवाज़ सुनी। फिर विमान टूट गया। सब कुछ बहुत तेज़ी से हुआ। मुझे नहीं पता कि मैं वहाँ से कैसे बाहर निकला। अस्पताल सूत्रों के अनुसार विश्वास कुमार को सीने में चोट लगी है। हालांकि, उन्होंने मलबे से अपने भाई को खोजने की गुहार लगाई है। गुरुवार को गृह मंत्री अमित शाह ने अस्पताल में उनसे मुलाकात की थी। बीते शुक्रवार सुबह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उनसे मिलने अस्पताल पहुंचे थे।

9500 रुपये वेतन पर काम करने वाले पर 7 करोड़ रुपये जीएसटी बकाया

● हावड़ा के फैक्ट्री कर्मचारी पर सरकारी छापेमारी से हड़कंप

● घटना से कर्मचारी सदमे में

निज संवाददाता : पेशे से फैक्ट्री कर्मचारी है। उसकी मासिक आय मात्र 9500 रुपये है। लेकिन उस पर 7 करोड़ रुपये का जीएसटी बकाया है! जीएसटी अधिकारियों ने बकाया वसूलने के लिए डोमजूड़ में एक कर्मचारी के घर पर छापा मारा। तलाशी ली गई। 25 वर्षीय युवक कार्तिक रुईदास पूरी घटना से सदमे में है। उसने इस घटना को लेकर थाने में शिकायत दर्ज करायी है। डोमजूड़ के खटोरा निवासी कार्तिक डोमजूड़ में राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे जालान कॉम्प्लेक्स में एक फैक्ट्री में काम करता है। पिछले दिनों जब कार्तिक फैक्ट्री में काम कर रहा था, तो उसे खबर मिली कि राज्य जीएसटी कार्यालय के छह सदस्यों की टीम ने उसके घर पर छापा मारा है।

घर से फोन आने पर वह डरने से ज्यादा हैरान था। घर लौटने पर जीएसटी अधिकारियों ने उसे बताया कि उसके नाम पर सात करोड़ रुपए का जीएसटी बकाया है। इतना ही नहीं कार्तिक केडी इंटरप्राइजेज नामक कंपनी का मालिक है। वहां कार्तिक के बैंक खाते में हर महीने 36 करोड़ रुपए ट्रांसफर होते हैं। उस पर करोड़ों रुपए की टैक्स चोरी का आरोप है। अधिकारियों की ये सारी बातें सुनकर कार्तिक की आंखें फटी की फटी रह गईं। उसने अधिकारियों को बताया कि वह जालान कॉम्प्लेक्स में एक फैक्ट्री में मामूली वेतन पर काम करता है। वह दिन-रात गुजारा करता है। उस मामूली आय से वह किसी तरह अपनी पत्नी और बच्चे का भरण-पोषण करता है। उसने अपने जीवन में कभी कोई कारोबार नहीं किया।

न ही उसके पास ऐसा करने की क्षमता या हिम्मत है। कार्तिक ने आरोप लगाया कि किसी ने उसके नाम, पते, पैन कार्ड, आधार कार्ड और बिजली बिल की जानकारी का इस्तेमाल करके जीएसटी पोर्टल पर उसका नाम दर्ज कर दिया है। कार्तिक का जर्जर मकान और उसके सामने संकरी सड़क देखकर जीएसटी अधिकारियों को लगा होगा कि कहीं कुछ गड़बड़ है। वे कार्तिक के गोदाम पर छापा मारने गए थे। लेकिन वह एक जर्जर मकान था। जांच के बाद जीएसटी अधिकारियों ने पाया कि जीएसटी पोर्टल पर दो मोबाइल नंबर फर्जी थे।

कार्तिक का मोबाइल नंबर अलग था। संयोग से, कर्मचारी ने डोमजूड़ पुलिस स्टेशन और हावड़ा सिटी पुलिस के साइबर सेल में शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है। वे इस बात की जांच कर रहे हैं कि इस घटना के पीछे कोई आपराधिक गिरोह तो नहीं है। पड़ोसियों का कहना है कि कार्तिक को डेढ़ महीने पहले एक बच्चा हुआ था। उसकी पत्नी अभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं है। इस बीच, जीएसटी अधिकारियों के हमले के बाद पूरा परिवार दहशत में है। परिवार के मुखिया कार्तिक को समझ में नहीं आ रहा है कि क्या हुआ है। परेशान कर्मचारी ने कहा, मैं कंपनी का मालिक हूं! बाह!

टुटू बोस और अंजन मित्रा को मोहन बागान रत्न सम्मान

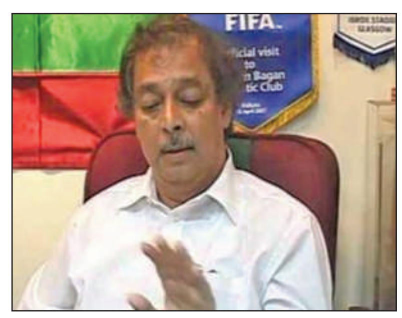

निज संवाददाता : मोहन बागान रत्न सम्मान 2025 और 2026 के प्राप्तकर्ताओं की घोषणा की गई है, जिसमें स्वपन साधन बोस उर्फ टुटू बोस और अंजन मित्रा को इस सम्मान के लिए चुना गया है। उल्लेखनीय है कि यह पहली बार है जब मोहन बागान रत्न पुरस्कार के 25 साल के इतिहास में दो व्यक्तियों को लगातार वर्षों के लिए एक साथ चुना गया है। इसके तहत टुटू बोस को 2025 के लिए व अंजन मित्रा को 2026 के लिए यह सम्मान दिया गया है। मोहन बागान के एक समर्पित सेवक, टुटू बोस ने क्लब के मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और 1991 से क्लब की सेवा की है। उन्होंने नवगठित कार्यकारी समिति के प्रति आभार व्यक्त किया जिन्होंने उन्हें यह सम्मान दिया है। मोहन बागान के पूर्व सचिव अंजन मित्रा मोहन बागान दिवस और मोहन बागान रत्न पुरस्कार समारोह के अग्रदूतों में से एक थे जिन्होंने 2001 में इसकी शुरुआत की। दुर्भाग्य से, उनका 2019 में निधन हो गया और इस वर्ष का चयन क्लब में उनके योगदान का प्रमाण है।

बेरोजगार ग्रुप सी, ग्रुप डी कर्मियों को भत्ता नहीं दे सकती सरकार

निज संवाददाता : कलकत्ता हाईकोर्ट ने बेरोजगार ग्रुप सी और ग्रुप डी कर्मियों को भत्ता देने के फैसले पर अंतरिम रोक लगा दी है। जस्टिस अमृता सिंन्हा ने कहा कि राज्य सरकार 26 सितंबर तक या कोर्ट के अगले आदेश तक भत्ता नहीं दे पाएगी। कोर्ट ने कहा कि राज्य को चार सप्ताह के भीतर हलफनामा दाखिल करना होगा। वादी पक्ष को 15 दिन के भीतर जवाबी हलफनामा दाखिल करना होगा।कई लोगों का मानना है कि हाईकोर्ट के इस फैसले से राज्य सरकार को झटका लगा है। वहीं, एक अन्य वर्ग का दावा है कि कोर्ट के फैसले से नवान्न को कई करोड़ रुपये के वित्तीय बोझ से अस्थायी तौर पर राहत मिली है। उस वर्ग का कहना है कि भत्ता ही नहीं, बल्कि बेरोजगारों

के सभी मुद्दे व्यावहारिक तौर पर कोर्ट के अधिकार क्षेत्र में चले गए हैं। ऐसे में राज्य

कलकत्ता हाईकोर्ट ने लगाई अंतरिम रोक

प्रशासन बेरोजगार ग्रुप सी और ग्रुप डी कर्मियों के प्रति अपनी सद्भावना और कानूनी बाधाओं को उजागर कर सकता है। उस वर्ग का मानना है कि वह विधानसभा चुनाव से पहले राज्य की सत्ताधारी पार्टी के सामने भी यह राजनीतिक बयान रख सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने 2016 के एसएससी पैनल में शामिल करीब 26,000 लोगों की नौकरी रद्द करने का आदेश दिया है। इन 26,000 लोगों में ग्रुप सी और ग्रुप डी के कर्मचारी शामिल हैं। पिछले साल मई में राज्य सरकार ने फैसला किया था कि बेरोजगार ग्रुप सी कर्मचारियों को 25,000 रुपये और ग्रुप डी कर्मचारियों को 20,000 रुपये प्रतिमाह भत्ता दिया जाएगा। भत्ता देने के फैसले का विरोध करते हुए हाईकोर्ट में केस दायर किया गया था। पिछली सुनवाई में वादी पक्ष के वकीलों ने कोर्ट को बताया था कि बेरोजगार ग्रुप सी और ग्रुप डी कर्मचारियों को भत्ता देने का फैसला सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ है। उस सुनवाई में जस्टिस अमृता सिंह ने भत्ते की राशि पर सवाल उठाया था। उन्होंने कहा, राशि 25,000 और 20,000 रुपये क्यों है? आपने यह राशि किस आधार पर तय की? जस्टिस सिंह ने राज्य से सवाल करते हुए पूछा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद बिना किसी चर्चा या जांच के जल्दबाजी में यह भत्ता देने का फैसला क्यों लिया गया? राज्य के महाधिवक्ता (एजी) किशोर दत्ता ने जवाबी मुकदमे की स्वीकार्यता पर सवाल उठाए। वादी पक्ष के वकीलों ने तर्क दिया, राज्य यह तय नहीं कर सकता कि मुकदमा कौन दायर करेगा। शुक्रवार को मामले की सुनवाई समाप्त होने के बाद भी जस्टिस सिंह ने फैसले पर रोक लगा दी थी। उन्होंने शुक्रवार को भी यही फैसला सुनाया। उन्होंने बेरोजगार ग्रुप सी और ग्रुप डी कर्मचारियों को भत्ते के भुगतान पर अंतरिम रोक लगा दी। गुरुवार को हाईकोर्ट ने घोषणा की थी कि जज शुक्रवार को सुबह 10:30 बजे फैसला सुनाएंगे।

गुजरात प्लेन क्रैश मामला

शापित एआई 171 फ्लाइट की याद मिटाना चाहती है एयर इंडिया

एआई 159 नाम से जानी जाएगी फ्लाइट

निज संवाददाता : अहमदाबाद विमान हादसे ने एक पल में सब कुछ उलट-पुलट कर दिया है। गुरुवार की शापित दोपहर ने 250 से ज़्यादा लोगों की जान ले ली। मानो एआई 171 नाम ही शापित हो गया है और इसलिए एयर इंडिया ने अब इस नाम से कोई भी फ्लाइट संचालित न करने का फ़ैसला किया है। हालाँकि उन्होंने सार्वजनिक रूप से ऐसा कोई दावा नहीं किया है। लेकिन एक अखिल भारतीय मीडिया आउटलेट ने गोपनीय सूत्रों से यही दावा किया है। बताया गया है कि एआई 171 का नाम बदलकर एआई 159 कर दिया जाएगा। और वापसी की फ्लाइट का नाम एआई 160 होगा। एयर इंडिया के एक पूर्व कर्मचारी, जो नाम नहीं बताना चाहते, दावा करते हैं, इस नंबर को बदलने का फ़ैसला बुरी यादों या किसी सदमे से छुटकारा पाने के लिए किया गया है। ऐसा भविष्य के यात्रियों के दिमाग से दुर्घटना की यादों को मिटाने के लिए किया जा रहा है। संयोग से, ऐसा पहले भी हो चुका है। 2014 में कुआलालंपुर-बीजिंग मार्ग पर मलेशियाई एयरलाइंस के विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद, इस विमान का नाम बदलकर एमएच 370 से एमएच 218 कर दिया गया था। एयर इंडिया ने गत गुरुवार को पुष्टि की कि इस भीषण दुर्घटना में विमान में सवार सभी 241 लोगों की मौत हो गई है। इस बीच, इलाके में अब भी जलने की गंध आ रही है! मरने वाले 241 लोगों के शवों की हालत इतनी खराब थे कि शवों की पहचान के लिए डीएनए टेस्ट कराने का फैसला किया गया है। एक यात्री हथियारों के बल पर बच गया। इस बीच, माना जा रहा है कि जिस मेडिकल कॉलेज हॉस्टल में विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ, वहां के छात्रों में से कुछ के हताहत होने की आशंका है। इस बीच, दुर्घटनास्थल से एक गीता बरामद की गई। हालांकि, यह विस्तृत रूप से पता नहीं चल पाया है कि यह गीता विमान में सवार किसी यात्री की थी या हॉस्टल में रहने वाले किसी छात्र की। यह स्पष्ट नहीं हो पाया है।

ईरानी क्लस्टर बम ने इजरायल....

पेज एक का शेष

प्रत्येक बॉमलेट स्वतंत्र रूप से विस्फोट करता है और आसपास के लक्ष्यों को नष्ट करता है। कुछ बॉमलेट्स तुरंत विस्फोट नहीं करते, बल्कि बारूदी सुरंग की तरह जमीन पर पड़े रहते हैं, जो बाद में नागरिकों के लिए खतरा बन जाते हैं। क्लस्टर बमों की सबसे बड़ी खासियत उनकी व्यापक कवरेज है। ये एक साथ सैन्य और असैन्य लक्ष्यों को निशाना बना सकते हैं, जिसके कारण ये अत्यंत प्रभावी माने जाते हैं। हालांकि, यही खासियत इन बमों को विवादास्पद भी बनाती है। 2008 में क्लस्टर युद्ध सामग्री पर कन्वेंशन के तहत 100 से अधिक देशों ने इनके उत्पादन, भंडारण और उपयोग पर प्रतिबंध लगाने की सहमति दी थी। यह समझौता एक अगस्त 2010 से लागू हुआ। फिर भी, कुछ देशों ने इस संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए, जिसके कारण क्लस्टर बम आज भी युद्धों में उपयोग हो रहे हैं।

किन देशों के पास हैं क्लस्टर बम?

क्लस्टर बमों के भंडार और उनके उपयोग को लेकर सटीक आंकड़े प्राप्त करना मुश्किल है, क्योंकि कई देश अपनी सैन्य क्षमताओं को गोपनीय रखते हैं। फिर भी, कुछ देशों के पास इन हथियारों के होने की जानकारी उपलब्ध है। 'संयुक्त राज्य अमेरिका ने क्लस्टर बमों का बड़े पैमाने पर उपयोग और उत्पादन किया है। हाल ही में, उसने यूक्रेन को सैन्य सहायता के रूप में क्लस्टर बम प्रदान किए, जिसकी कई देशों ने आलोचना की। अमेरिका ने सीसीएम पर हस्ताक्षर नहीं किया है, इसलिए वह इन हथियारों का उपयोग और आपूर्ति जारी रखता है। रूस के पास भी क्लस्टर बमों का बड़ा भंडार है। यूक्रेन युद्ध में रूस पर इन बमों के उपयोग का आरोप लगा है। रूस ने भी सीसीएम संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। हाल के इजरायल-ईरान युद्ध में, ईरान द्वारा बैलिस्टिक मिसाइलों के जरिए क्लस्टर बमों के उपयोग की खबरें सामने आई हैं। ईरान ने भी सीसीएम पर हस्ताक्षर नहीं किया है। इजरायल के पास क्लस्टर बम होने की संभावना है, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। चीन और भारत ने भी सीसीएम संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है और संभवतः उनके पास क्लस्टर बमों का भंडार है, हालांकि सटीक संख्या अज्ञात है। कई अन्य देशों, जैसे पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और सऊदी अरब के पास भी क्लस्टर बम हो सकते हैं, लेकिन इसकी पुष्टि करने वाले विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।गौरतलब है कि क्लस्टर बमों का उपयोग मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण से अत्यंत विवादास्पद है। इनके अंधाधुंध प्रभाव के कारण असैन्य नागरिकों, विशेष रूप से बच्चों, को भारी नुकसान होता है। युद्ध समाप्त होने के बाद भी, गैर-विस्फोटित बॉमलेट्स बारूदी सुरंगों की तरह काम करते हैं, जिससे दीर्घकालिक खतरा बना रहता है। मानवाधिकार संगठनों, जैसे एमनेस्टी इंटरनेशनल और ह्यूमन राइट्स वॉच, ने इनके उपयोग की कड़ी निंदा की है।क्लस्टर बम एक शक्तिशाली और विनाशकारी हथियार है, जिसकी व्यापक कवरेज और दीर्घकालिक प्रभाव इसे युद्धक्षेत्र में खतरनाक बनाते हैं। हालांकि, इसके अंधाधुंध उपयोग और नागरिकों पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विवाद का विषय बना हुआ है। 100 से अधिक देशों ने इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन प्रमुख सैन्य शक्तियां, जैसे अमेरिका, रूस, और ईरान, इसका उपयोग और भंडारण जारी रखे हुए हैं। क्लस्टर बमों का भविष्य युद्धों में उनके उपयोग और वैश्विक प्रतिबंधों के बीच एक जटिल बहस का विषय बना रहेगा।

छत से टपकता पानी, क्लासरूम में छाता लेकर पढ़ते बच्चे!

◆ बंगाल के स्कूल की हालत देख आ जाएगा रोना

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के एक प्राइमरी स्कूल के एक वीडियो से टीएमसी सरकार विपक्ष के निशाने पर आ गई है। वीडियो में 68 बच्चे छाता से नीचे छिपकर पढ़ाई कर रहे हैं, क्योंकि क्लासरूम की छत से पानी टपक रहा है। स्कूल के हेड मास्टर जयंत गुप्ता ने बताया कि स्कूल की इमारत जर्जर हालत में है, जिससे छात्रों की जान को खतरा है। अधिकारियों से शिकायत के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई है। स्कूल की हालत देखकर बीजेपी आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने ममता बनर्जी सरकार पर आपराधिक ला-परवाही का आरोप लगाया है।जर्जर है चार कमरों का स्कूलहुगली जिले में पंडुआ ब्लॉक के प्राइमरी स्कूल में बच्चे छाता लेकर पढ़ने को मजबूर हैं। स्कूल की छत टपक रही है और बच्चों को बारिश में भीगने से बचने के लिए छाता लेकर क्लास में बैठना पड़ रहा है। इस स्कूल में लगभग 68 बच्चे पढ़ते हैं, जिनकी उम्र 5 से 10 साल के बीच है। जानकारी के मुताबिक, 1972 में बने इस स्कूल में चार कमरे हैं, जो जर्जर हालत में हैं। तीन कमरों में किसी तरह पढ़ने-पढ़ाने का काम चल रहा है। हेड टीचर जयंत गुप्ता ने बताया कि उन्होंने अधिकारियों से कई बार शिकायत की है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।शिकायत सुनने वाला कोई नहींजयंत गुप्ता ने बताया कि शिकायत के बाद बीडीओ साहब ने स्कूल का सर्वे किया था, लेकिन उसके बाद कोई काम नहीं हुआ। उन्होंने स्कूल बीडीओ और डिस्ट्रिक्ट इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स (प्राइमरी) को स्कूल की हालत के बारे में बताया, मगर मरम्मत नहीं कराया गया। उन्होंने इसकी जानकारी स्थानीय सांसद रचना बनर्जी को भी दी। पांडुआ ब्लॉक की बीडीओ सेबंती विश्वास ने कहा कि स्कूल की शिकायत राज्य सरकार को भेज दी गई है और अब वित्तीय मंजूरी का इंतजार है।अमित मालवीय ने हमला बोलाइस बीच, बीजेपी आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी सरकार पर हमला बोला है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि 68 बच्चे क्षतिग्रस्त छत वाले स्कूल में बारिश में बैठने को मजबूर हैं। कितनी शर्म की बात है! यह ममता बनर्जी के पश्चिम बंगाल के शिक्षा मॉडल की दुखद सच्चाई है। अमित मालवीय ने राज्य सरकार की बांग्लार शिक्षा योजना पर भी सवाल उठाए। उन्होंने पूछा कि स्कूल के बुनियादी ढांचे पर हजारों करोड़ रुपये खर्च करने का दावा किया जा रहा है, वह पैसा कहां है? उन्होंने लिखा- यह शासन नहीं, आपराधिक लापरवाही है।

निगम की विज्ञापन नीति को राज्य की हरी झंडी

निज संवाददाता : महानगर के अवैध विज्ञापनों पर नकेल कसने के लिए कोलकाता नगर निगम (केएमसी) की ओर से नयी विज्ञापन नीति तैयार की गयी थी, जिसे लागू करने के लिए निगम ने राज्य सरकार को भेजा था। अब राज्य सरकार की ओर से नयी विज्ञापन नीति को लागू करने की अनुमति मिल गयी है। यह जानकारी बीते दिनों कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम ने दी। वे निगम में टॉक टू मेयर कार्यक्रम के समाप्त होने के बाद संवाददाताओं से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा- हमें राज्य सरकार की मंजूरी मिल गयी है। अब नयी विज्ञापन नीति लागू की जायेगी। पुराना निविदा समाप्त होने के बाद नया निविदा जारी किया जायेगा। उन्होंने कहा कि कोलकाता में एलईडी होर्डिंग्स या मोनोपोल होर्डिंग्स के जरिए ही विज्ञापन लगाये जायेंगे। होर्डिंग्स का आकार निगम के नयी विज्ञापन नीति के आधार पर तय किया जायेगा। मेयर ने कहा कि कोलकाता में नयी नीति के तहत जिन्हें टेंडर दिया जायेगा उन्हें ही अवैध विज्ञापनों पर नजर रखना होगा।

जासूसी की दुनिया में ऐतिहासिक कदम

जेम्स बॉन्ड की एजेंसी एम 6 को पहली बार मिली महिला बॉस

लंदन : ब्रिटेन की विदेशी खुफिया एजेंसी 6 (जिसे 'जेम्स बॉन्ड की एजेंसी' भी कहा जाता है) को पहली बार एक महिला प्रमुख मिली है। प्रधानमंत्री कीयर स्टार्मर ने घोषणा की कि ब्लैज़ मेट्रेवली को एमआई 6 का नया प्रमुख नियुक्त किया गया है। वो रिचर्ड मूर की जगह लेंगी, जो पिछले 5 वर्षों से एमआई-6 के प्रमुख थे। मूर एक पूर्व डिप्लोमैट हैं और ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी के छात्र रह चुके हैं। ब्लैज़ मेट्रेवली की नियुक्ति ब्रिटेन की जासूसी दुनिया में एक ऐतिहासिक मोड़ है। एमआई 6 जैसी संस्था को पहली बार महिला नेतृत्व मिलेगा, जो तकनीक और आधुनिक खतरों से निपटने में अग्रणी भूमिका निभाएगी। 47 साल की ब्लैज़ फिलहाल एमआई 6 की टेक्नोलॉजी और इनोवेशन डायरेक्टर हैं। उन्हें क्यू कहा जा सकता है, जो जेम्स बॉन्ड फिल्मों में गैजेट बनाने वाले वैज्ञानिक का नाम होता है। ब्लैज़ एक अनुभवी खुफिया अधिकारी हैं और एमआई 6 की इकलौती सदस्य होंगी जिनका नाम सार्वजनिक किया गया है। उन्होंने कहा कि मुझे अपने विभाग की अगुवाई करने का मौका मिलने पर गर्व और सम्मान महसूस हो रहा है। एमआई 6 की स्थापना 1909 में हुई थी और तब से पहली बार किसी महिला को इसका नेतृत्व सौंपा गया है। इससे पहले ब्रिटेन की दो अन्य प्रमुख खुफिया एजेंसियों एमआई 5 (घरेलू सुरक्षा) में महिलाएं प्रमुख रह चुकी हैं। प्रधानमंत्री स्टार्मर ने कहा कि आज ब्रिटेन कई तरह के खतरों का सामना कर रहा है, जैसे- दुश्मन देशों के जासूसी जहाजों, साइबर हमले जो सरकारी सेवाओं को बाधित करते हैं, खासतौर पर चीन और रूस जैसे देश साइबर हमलों, जासूसी और दुष्प्रभाव फैलाने के प्रयास कर रहे हैं। विदेश मंत्री डेविड लैमी ने कहा कि दुनिया में अस्थिरता बढ़ रही है और सुरक्षा से जुड़ी नई चुनौतियां सामने आ रही हैं।

साहित्य अकादमी युवा व बाल पुरस्कार-2025

हिंदी में पार्वती तिर्की और सुशील शुक्ल सम्मानित

निज संवाददाता : साहित्य अकादमी ने बीते बुधवार को युवा और बाल साहित्य पुरस्कार 2025 की घोषणा की। हिंदी में पार्वती तिर्की को युवा और सुशील शुक्ल को इस साल का बाल साहित्य पुरस्कार दिया जाएगा। इस दिन अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक की अगुवाई में हुई बैठक में 23 युवा लेखकों और 24 बाल साहित्यकारों की किताबों को पुरस्कार के लिए चुना गया। यह चयन तीन सदस्यों वाले निर्णायक मंडल ने सटीक प्रक्रिया के तहत किया। डोगरी भाषा का युवा पुरस्कार बाद में घोषित होगा। इन दोनों पुरस्कारों के तहत विजेताओं को उत्कीर्ण ताम्रफलक और 50,000 रुपये की राशि दी जाएगी, जो एक विशेष समारोह में प्रदान की जाएगी।हिंदी में युवा पुरस्कार पार्वती तिर्की को उनकी कविता-संग्रह 'फिर उगना' के लिए मिला है। वहीं, बाल साहित्य पुरस्कार सुशील शुक्ल को उनकी किताब 'एक बटे बारह' को दिया गया। अंग्रेजी में अद्वैत कोट्टरी के उपन्यास 'सिद्धार्थ-द बॉय हू बिकेम द बुद्ध' को युवा पुरस्कार और नितिन कुशलप्पा की 'दक्षिण-साउथ इंडियन मिथ्स एंड फैब्लस रीटोल्ड' को बाल साहित्य पुरस्कार मिला है। पंजाबी में मनदीप औलख की कविताएं गर्ल्स हॉस्टल और पाली खादिम की जादू पत्ता को चुना गया है। । उर्दू में नेहा रुबाब की मजहरुल हक-तारीक-ए-आजादी-ए-हिंद और जजनफर इकबाल की कौमी सितारे को सम्मान मिला है।अन्य भाषाओं में इन रचनाकारों ने बाजी मारीअसमिया में सुप्रकाश भुइयां की कूंचियानामा और सुरेंद्र मोहन दास की मैनाहंतर पद्य, बांग्ला में सुदेशना मोइत्रा की एकरोखा चिरुनी तोलाशी और त्रिदिब कुमार चट्टोपाध्याय की ऐखोनो गाये कांटा देय, बोडो में अमर खुंगुर बर की आं असुर और बिनय कुमार ब्रह्म की खान्थि बोसोन, गुजराती में मयूर खावडू की नरसिंह टेकरी और कीर्तिदा ब्रह्मभट्ट की टिंचक ने बाजी मारी। इसी तरह कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िआ, राजस्थानी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल और तेलुगु में भी कई रचनाकारों को सम्मान मिला है।

मोटापा कम करने के लिए रोजाना करें ये पांच योगासन

जिम जाने की नहीं पड़ेगी जरूरत

निज संवाददाता : मोटापा एक गंभीर समस्या बन गई है। आजकल अधिकतर लोग इस समस्या से परेशान हैं। वहीं लोग मोटापे से बचने के लिए एक्सरसाइज और डाइट प्लान फॉलो करते हैं। लेकिन इसके बाद भी रिजल्ट न मिलने पर निराश होते हैं। जरूरत से ज्यादा तनाव, नींद की कमी, खराब लाइफस्टाइल और अनहेल्दी डाइट प्लान जैसे तमाम फैक्टर्स मोटापे के जिम्मेदार होते हैं। ऐसे में समय रहते इस समस्या पर काबू पाना जरूरी है, वरना न सिर्फ आपकी फिजिकल बल्कि मेंटल हेल्थ दोनों बुरी तरह से प्रभावित हो सकती है। ऐसे में अगर आप भी वेट लॉस की जर्नी को आसान बनाना चाहते हैं, तो इन योगासनों को डेली रूटीन में शामिल करने पर आप बढ़े हुए वेट यानी वजन को काफी हद तक कंट्रोल कर सकते हैं।

योगमुद्रासन

अगर आप भी मोटापे से निजात पाना चाहते हैं, तो रोजाना योगमुद्रासन का अभ्यास करना चाहिए। इस आसन को करने से वेट लॉस होने के साथ इम्यूनिटी भी मजबूत बनती है। कुल मिलाकर इस आसन का अभ्यास करने से आपके पूरे स्वास्थ्य में काफी हद तक सुधार हो सकता है।

भुजंगासन

अगर आपके पेट के आसपास भी जिद्दी चर्बी जमा हो गई है और इस जमा चर्बी को पिघलाना चाहते हैं, तो आपको नियमित रूप से भुजंगासन का अभ्यास करना चाहिए। इस योगासन का अभ्यास करने से सेहत संबंधी कई समस्याएं दूर होती हैं और जिद्दी चर्बी भी मक्खन की त र ह पिघलेगी।

उत्तानपादासन

यदि आप भी अपनी वेट लॉस की जर्नी को आसान बनाना चाहते हैं तो आपको रोजाना इस आसन का अभ्यास करना चाहिए। उत्तानपादासन का अभ्यास करने से न सिर्फ आपकी फिजिकल हेल्थ बल्कि मेंटल हेल्थ के लिए भी फायदेमंद हो सकता है।

मंडूकासन

रोजाना इस आसन का अभ्यास करने से शरीर के मेटाबॉलिज्म को काफी हद तक बूस्ट किया जा सकता है। वहीं यह आसन मोटापे से भी छुटकारा पाने के लिए कारगर है। इस आसन का नियमित अभ्यास करने से आपको कुछ ही सप्ताह में पॉजिटिव असर देखने को मिलेगा।

पवनमुक्तासन

पवनमुक्तासन का नियमित अभ्यास करने से आपको बैली फैट से छुटकारा मिल सकता है। इस आसन का अभ्यास करने से आपके पूरे स्वास्थ्य को सुधारने में काफी असरदार साबित हो सकता है।

मेरठ के केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र ने पेश की आलू की तीन नई वैरायटी

औषधीय गुणों से भरपूर और किसानों के लिए फायदेमंद

कुफ्री नीलकंठ

कुफ्री मानिक

कुफ्री ललित

निज संवाददाता : मेरठ के केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र ने आलू की तीन नई वैरायटी विकसित की है। इनमें कुफरी मानिक, कुफरी नीलकंठ और कुफरी जमुनिया शामिल हैं। ये न सिर्फ सेहतमंद बल्कि किसानों के लिए फायदेमंद भी हैं। किसान आधुनिक टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए आगे बढ़ सकें इसको लेकर सरकार की तरफ से विभिन्न प्रकार की योजनाएं संचालित की जा रही हैं। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा भी नए-नए तरीके तकनीक व बीज को तैयार किए जा रहे हैं जिससे कि कम लागत में किसान अधिक कमाई कर सकें। इसी कड़ी में मेरठ मोदीपुरम स्थित केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र द्वारा भी अब रिसर्च के बाद तीन नए प्रकार के आलू के बीज तैयार किए गए हैं, जिससे लोगों की सेहत भी सुधरेगी, साथ ही किसानों को भी काफी फायदा होगा। केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र के पादप प्रजनन विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर सतीश कुमार लूथरा ने बताया कि आलू सब्जियों का राजा माना जाता है। इसलिए हर कोई आलू का उपयोग करता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए आलू की तीन प्रकार की नई वैरायटी तैयारी की गई है जो लोगों की सेहत के लिए भी लभदायक है। इसमे कुफरी मानिक, कुफरी नीलकंठ और कुफरी जमुनिया शामिल हैं। यह तीनों बहुत खास वैरायटी है जो जल्द ही किसानों को उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने बताया कि इनके माध्यम से किसान अच्छी कमाई कर सकते हैं। साथ ही यह आम लोगों की सेहत को भी सुधारते हुए दिखाई देंगी।डॉ. एसके लूथरा के अनुसार अगर कुफरी नीलकंठ की वैरायटी की खासियत की बात की जाए तो इसके अंदर एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके साथ ही एंथोसायिनन की मात्रा भी देखने को मिलती है। क्योंकि सामान्य आलू के मुकाबले तीन गुना एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है। इसलिए यह लोगों की सेहत के लिए काफी फायदेमंद है। वहीं किसानों की दृष्टि से देखा जाए तो यह उत्पादन और भंडारण में भी काफी बेहतर है। इसी तरह उन्होंने बताया कि अगर कुफरी जामुनिया आलू की वैरायटी की खास बात की जाए तो कुफरी जामुनिया बैंगनी गूदे वाली एंटी-ऑक्सीडेंट और एंथोसायनिन से भरपूर आलू की किस्म है। इसके 100 ग्राम गूदे में हाई एंटी-ऑक्सीडेंट यानी विटामिन सी (52 मिलीग्राम), एंथोसायनिन (32 मिलीग्राम), कैरोटीनॉयड (163 माइक्रोग्राम) होते हैं। इस वजह से स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। उन्होंने बताया कि है 90 से 100 दिन के बीच में तैयार होने वाली फसल है। प्रति हेक्टेयर 35 टन तक किसानों को फसल उपलब्ध हो सकती है।आयरन खनिज से है भरपूरइसी तरह से उन्होंने बताया कि कुफरी मानिक आलू की वैरायटी भी काफी बेहतर होता है। इसमें भी आयरन व खनिज की मात्रा भरपूर पाई जाती है, जो कि सेहत के लिए काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि सीमित मात्रा में इस आलू का उपयोग करने से आम लोगो को काफी फायदा होगा। साथ ही भंडारण एवं उत्पादन की अगर बात की जाए तो किसानों के लिए यह वैरायटी काफी बेहतर है। क्योंकि इसमें बीमारी लगने की संभावना कम रहती है। वहीं लागत की अगर बात की जाए तो सामान्य तौर पर जो आलू की फसल किसान उग रहे हैं। इस तरह से इसकी लागत रहेगी, कोई अधिक खर्च नहीं होगा। बताते चलें डॉक्टर एसके लूथरा के अनुसार केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र की स्थापना से लेकर अब तक वैज्ञानिकों द्वारा 76 से अधिक वैरायटी को इजाद किया है जिनका उपयोग देश भर में किसान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो भी किसान इन आलू की वैरायटी का उपयोग करना चाहते हैं। वह सभी संबंधित जो केंद्र है, वहां अपना विवरण उपलब्ध करा सकते हैं।

शिक्षा/रोजगार

इंजीनियरिंग क्षेत्र के चयन में उपयोगी हो सकते हैं ये दिशा-निर्देश

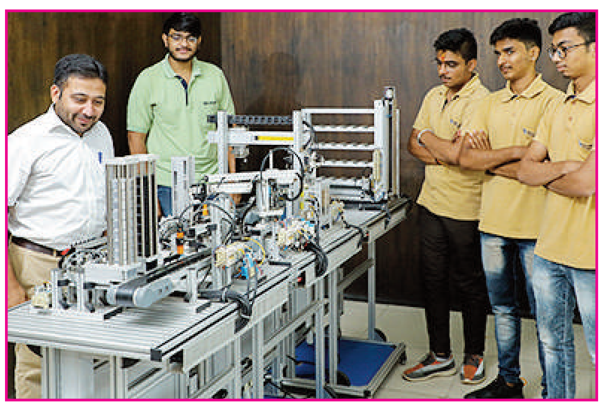

निज संवाददाता : करियर के लिए इंजीनियरिंग क्षेत्र का चयन करने के लिए व्यक्तिगत रुचियों, कौशल और लक्ष्यों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता होती है। याद रखें कि आपको इंजीनियरिंग विशेषज्ञ होने की आवश्यकता नहीं है। कई इंजीनियर अपने करियर की प्रगति के साथ विकास या विशेषज्ञता के अवसर खोजते हैं।

खुले दिमाग से काम लें, जिज्ञासु बनें और अपने हितों और लक्ष्यों के साथ संरक्षित करियर को आगे बढ़ाने में सक्रिय रहें। इस प्रक्रिया को नेविगेट करने में आपकी मदद करने के लिए यहां एक गाइड पेश है :

आत्म-मूल्यांकन : सबसे पहले अपनी रुचियों, शक्तियों और जुनून पर विचार करें। पिछले अनुभवों या उन अनुभवों पर विचार करें जिन्होंने वास्तव में आपको प्रेरित किया है। विचार करें कि क्या आपको समस्या-समाधान, सिस्टम डिज़ाइन, तर्क के साथ काम करना या किसी विशिष्ट उद्योग में योगदान देना पसंद है। **शोध रणनीति :** इस क्षेत्र में विभिन्न रणनीतियों के बारे में जानें। क्षेत्र से संबंधित सिद्धांतों, अनुप्रयोगों और प्रथाओं पर शोध करें। सामान्य रणनीति क्षेत्रों में सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, केमिकल, एयरोस्पेस, बायोमेडिकल, कंप्यूटर और पर्यावरण रणनीतियां शामिल हैं। **शैक्षिक योग्यता :** इंजीनियरिंग विशेषज्ञों के लिए शैक्षिक योग्यता पर विचार करें। कुछ के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम, प्रमाणन या उच्च डिग्री की आवश्यकता हो सकती है। सुनिश्चित करें कि शैक्षिक योग्यता आपके शैक्षणिक लक्ष्यों और प्राथमिकताओं के अनुरूप हो। **नौकरी और उद्योग का आउटलुक :** इंजीनियरिंग विशेषज्ञों के लिए नौकरी के आउटलुक और उद्योग के आउटलुक की समीक्षा करें। कुछ क्षेत्रों में उच्च मांग हो सकती है, जबकि अन्य में अधिक विशिष्ट अवसर हो सकते हैं। भविष्य की जरूरतों का अनुमान लगाने के लिए उभरते रुझानों और शिक्षा के रुझानों से अवगत रहें। **नेटवर्किंग :** नेटवर्किंग इवेंट, नेटवर्किंग इवेंट या सेमिनार के माध्यम से विभिन्न इंजीनियरिंग क्षेत्रों में काम करने वाले पेशेवरों से जुड़ें। उनके दैनिक कार्य, कार्य वातावरण और उनके द्वारा अपनाए जाने वाले करियर के बारे में जानकारी प्राप्त करें। यह जानकारी एक सुविचारित निर्णय लेने में अमूल्य हो सकती है।

इंटर्नशिप और को-ऑप्स : इंजीनियरिंग के क्षेत्र में इंटर्नशिप या को-ऑप्स करें। व्यावहारिक अनुभव आपको एक विशिष्ट विशेषज्ञता में दिन-प्रतिदिन की जिम्मेदारियों और करियर का एक व्यावहारिक विचार दे सकता है। कुछ इंजीनियरिंग विशेषज्ञताएं विशिष्ट उद्योगों, जैसे सेवा, पर्यावरण, या एयरोस्पेस के साथ अधिक निकटता से जुड़ी हो सकती हैं। विचार करें कि आपका काम सामाजिक न्याय में कैसे योगदान दे सकता है और सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

लचीलापन और कैरियर के अवसर : एक तकनीकी विशेषज्ञ के लचीलेपन और कैरियर के अवसरों पर विचार करें। कुछ क्षेत्र, जैसे सिस्टम इंजीनियरिंग या रणनीतिक योजना, विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता और सहयोग के अवसर प्रदान करते हैं, जो कैरियर के रास्ते खोल सकते हैं।

कैरियर के अवसर : अपनी विशेषता के भीतर चल रहे करियर के अवसरों पर विचार करें। कुछ के लिए सीखने और विकसित तर्क के अनुकूल होने की आवश्यकता हो सकती है, जबकि अन्य के लिए अधिक स्थापित विषयों की आवश्यकता हो सकती है।

सलाहकारों से मार्गदर्शन लें : तकनीकी क्षेत्र में संकाय, करियर परामर्शदाताओं और पेशेवरों से परामर्श करें। सलाहकारों से मार्गदर्शन लें इंजीनियरों को पारंपरिक कार्यालयों से लेकर प्रयो-गशालाओं, विनिर्माण सुविधाओं, निर्माण स्थलों और यहां तक कि नौकरी स्थल पर भी विभिन्न वातावरणों में काम करते हुए पाया जा सकता है। कार्य वातावरण की प्रकृति इंजीनियरिंग के प्रकार और इसमें शामिल विशिष्ट कार्य पर निर्भर करती है।

कॉर्पोरेट शिक्षा के दौर में आत्मकेंद्रित हो रहे लोग

नूपुर मित्रा

परिवार में सुख-दुख, खुशी-गम की कई चीजें बच्चे के इर्द-गिर्द घूमती हैं। जिस तरह बच्चे की मुस्कान मां के सारे दुख दूर कर देती है, उसी तरह पिता को भी पारिवारिक युद्ध में कूदने के लिए प्रेरित करती है। बच्चे के चेहरे को देखकर माता-पिता जीवन के सारे कष्टों को मुस्कुराते हुए झेल लेते हैं। वे बच्चे के लिए अपने शौक और सुखों का त्याग कर देते हैं। पूरी दुनिया की सामाजिक संरचना का मुख्य अंग परिवार है। संयुक्त परिवार भी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। हालांकि संयुक्त परिवार प्रणाली अब लगभग विलुप्त होने के कगार पर है।हमारा बचपन अलग था। जीवन की सबसे खूबसूरत यादें सभी बचपन की हैं। तब मेरा नाम की कोई चीज नहीं थी। सब कुछ हमारा था। परिवार की संयुक्त संरचना ने सामाजिक बंधन और नैतिक बंधन को मजबूत किया। बड़ों की बात मानना, हर रिश्ते का सम्मान करना। यह सब हमने अपने बड़ों से सीखा है। वह पारिवारिक रिश्ता अब बहुत ढीला पड़ गया है। अब हर कोई अपने आस-पास की जिंदगी और आजीविका में व्यस्त है। समय के साथ-साथ सामाजिक मानदंड बदल रहे हैं। लोगों के मूल्य बदल रहे हैं। समाज के नियम और ढांचे बदल रहे हैं। पैसे की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता। जैसे-जैसे लोगों की आर्थिक आजादी बढ़ रही है, वे जीने की आजादी का आनंद लेना चाहते हैं। परिवार टूट रहे हैं। समाज भी अपनी शैली बदल रहा है। जीने के पुराने तरीके भी बदल रहे हैं। बच्चों की परवरिश के नाम पर हम सभी पूंजीवादी राज्य में आत्मकेंद्रित और स्वार्थी होते जा रहे हैं। हर कोई इस बात में व्यस्त है कि कैसे अपने करियर को आगे बढ़ाया जाए और अपने बच्चों को किसी प्रतिष्ठित संस्थान में दाखिला दिलाया जाए। कई लोग सोचते हैं कि बच्चे तभी इंसान बन सकते हैं, जब उन्हें देश या विदेश के महंगे स्कूल और कॉलेजों में पढ़ाया जाए। व्यस्त जीवन में माता-पिता अपने बच्चों पर कितना ध्यान रख सकते हैं? सुबह वे अपने बच्चों को शिक्षण संस्थान में छोड़कर अपने काम पर चले जाते हैं। नतीजतन, उन्हें अपने दैनिक जीवन पर ध्यान देने के लिए ज्यादा समय नहीं मिलता। अगर परिवार के माता-पिता दोनों कामकाजी हैं तो कोई समस्या नहीं है। फिर, गृहिणियां घर के कामों के बाद अपने बच्चों की देखभाल के लिए थोड़ा समय ही दे पाती हैं। इसलिए, अपने बच्चों के लिए कई महत्वाकांक्षाएं होने के बावजूद, कई लोग उन्हें इंसान के तौर पर बड़ा नहीं कर पाते हैं। अपने बच्चों पर ढेर सारा पैसा खर्च करने के बावजूद, कई माता-पिता के सपने अधूरे ही रह जाते हैं। माता-पिता अपने बच्चे के विकास की जड़ में प्रवेश नहीं करते हैं और केवल बच्चे पर दबाव डालते हैं और प्रतिस्पर्धी मानसिकता विकसित करते हैं। चूंकि माता-पिता दोनों ही नौकरीपेशा हैं, इसलिए कई बार वे चाहकर भी बच्चे की अच्छी शिक्षा पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। दरअसल, आज के समाज में पारिवारिक जिम्मेदारी कम होने के कारण माता-पिता, भाई-बहन में से कोई भी एक-दूसरे के प्रति उचित आकर्षण महसूस नहीं कर रहा है। माता-पिता दोनों ही बच्चे को जरूरी समय नहीं दे पा रहे हैं। छोटी-छोटी बातों में पारिवारिक व्यवस्था टूटती और ढहती जा रही है। बच्चे उनका अनुसरण और अनुकरण कर रहे हैं और बाद में यह उनमें परिलक्षित होता है। कई मामलों में, वे न्यूनतम मानवता और मानवता की भावना भी दिखाने में विफल हो रहे हैं। उन्हें परिवार से इंसान होने की असली शिक्षा नहीं मिल रही है। आजकल बच्चे थोड़े अधिक संवेदनशील हो गए हैं। इसलिए, वे आसानी से विभिन्न आपदाओं का कारण बन जाते हैं। इसलिए, हर माता-पिता के लिए अपने बच्चे को एक अच्छा इंसान बनाना कठिन होता जा रहा है।

विदेशी पर्यटकों के लिए डेस्टिनेशन बना बंगाल

यूरोप और अमेरिका से राज्य में आये 27 लाख पर्यटक

निज संवाददाता : राज्य में विदेशी पर्यटकों की संख्या हर साल बढ़ रही है। पर्यटन मंत्री इंद्रनील सेन ने विधानसभा में आंकड़े पेश करते हुए यह दावा किया। दरअसल, विदेशियों के लिए पर्यावरण अनुकूल सुविधाएं मुहैया कराने की राज्य की पहल भी एक बड़ी वजह है। मंत्री ने कहा कि पिछले साल 32 लाख पर्यटक आए थे।इनमें से 1 लाख 82 हजार बांग्लादेशी पर्यटक थे। विदेशियों के लिए पर्यावरण अनुकूल माहौल और विदेशियों की पसंद के मुताबिक खाने-पीने की व्यवस्था होने से उन्हें सहूलियत मिल रही है। भाजपा विधायक शंकर घोष के एक सवाल के जवाब में पर्यटन मंत्री ने बताया कि अब तक रूस, अमेरिका और इटली से 27 लाख 11 हजार 708 पर्यटक आ चुके हैं। विधायक विश्वनाथ कारक के एक सवाल के जवाब में पर्यटन मंत्री इंद्रनील सेन ने कहा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की पहल से पर्यटन केंद्रों को और आकर्षक बनाया गया है और बनाया जा रहा है। पहले राजनीतिक अशांति के कारण पर्यटक उत्तर बंगाल नहीं जाते थे। 2011 में सत्ता में आने के बाद, क्षेत्र में राजनीतिक स्थिति और सुरक्षा सुनिश्चित की गई है, और शांति बहाल हुई है। बड़ी संख्या में पर्यटक जा रहे हैं। दार्जिलिंग या उत्तर बंगाल के पहाड़ियों और डुआर्स की तरह, बंगाल पर्यटन की नवीनतम लहर दीघा के आसपास आई है। जगन्नाथ मंदिर के निर्माण के बाद, विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में वहां आ रहे हैं। हालांकि अभी इसके बारे में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है, लेकिन यह कहने की जरूरत नहीं है कि विदेशी पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी होगी।

मंत्री ने कहा कि राज्य अप्रैल 2024 में जंगलमहल में एक पर्यटन केंद्र शुरू करने में सक्षम है। और आंकड़े कहते हैं कि 87 प्रतिशत पर कब्जा कर लिया गया है। वहां से आप आधे घंटे में अयोध्या की पहाड़ियों पर जा सकते हैं। साथ ही पर्यटन व्यवसाय में स्थानीय उत्साही लोगों को शत-प्रतिशत सहयोग दिया जा रहा है. विधायकों के सवालों के जवाब में कार्यवाहक पर्यटन मंत्री इंद्रनील सेन ने कहा कि 2021 से राज्य में 1022 लोग प्रमाणित पर्यटक गाइड बन चुके हैं, यानी प्रमाण पत्र वाले पर्यटक गाइड। जो भारत में नंबर वन है।

सोसायटी बेंनिफिट सर्किल अग्र विभूति सम्मान से अलंकृत

खाटू/कोलकाता : अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन ने राजस्थान के खाटू धाम में अग्रवाल समाज के विशिष्ट संस्थान एवं व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न क्षेत्र में उनके कार्यों के लिए भव्य समारोह सम्मान प्रदान किया। इस मौके पर कोलकाता की विशिष्ट समाजसेवी संस्था सोसाइटी बेनिफिट सर्किल को महाकुंभ में प्रायोजित प्राथमिक चिकित्सा शिविर सेवा हेतु उत्कृष्ट सेवा सम्मान से नवाजा गया। ज्ञात रहे कि 11 जनवरी से लगातार 16 फरवरी तक प्रयागराज में महाकुंभ में संस्था के अध्यक्ष पवन बंसल के नेतृत्व में सेवा भाव से प्राथमिक चिकित्सा शिविर के माध्यम से लाखों तीर्थयात्रियों की सेवा की गई थी। संस्था के इसी सेवा प्रयासों के मद्देनजर सोसाइटी बेनिफिट सर्किल को 'अग्र विभूति' सम्मान से अलंकृत किया गया। अध्यक्ष बंसल एवं प्रधान सचिव आदित्य विक्रम तुलस्यान ने यह सम्मान ग्रहण किया। अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष राज कुमार मित्तल एवं छत्तीसगढ़ के रायपुर से सांसद ब्रिज मोहन अग्रवाल के कर कमलों से यह सम्मान रूपी मोमेंटो का वितरण हुआ। संस्था के सेवा मनोभाव में वृद्धि के लिए यह सम्मान विशेष मनोबल प्रदान करेगा, ऐसी आशा संस्था के सदस्यों ने जताई।

सियालदह डिवीजन में कृष्णानगर और बनगांव रूट पर चलेगी एसी लोकल

लोकल ट्रेन की अपेक्षा 6 गुना अधिक होगा इस ट्रेन का किराया

निज संवाददाता : गर्मी में पसीना बहाने के दिन अब खत्म होने वाले हैं। लोकल ट्रेन में एसी की ठंडी हवा मिलेगी। पूर्वी रेलवे के सियालदह डिवीजन में वातानुकूलित लोकल चलेगी। सब कुछ ठीक रहा तो कुछ ही हफ्तों में ट्रेन शुरू कर दी जाएगी। किस रूट पर चलेगी? कितना लगेगा किराया? पूर्वी रेलवे के सूत्रों के मुताबिक सबसे पहले सियालदह-कृष्णानगर और सियालदह-बनगांव रूट पर एसी ट्रेनें चलाई जाएंगी। किराया कितना लगेगा? यात्रियों को सामान्य लोकल ट्रेन के किराए से करीब 6 गुना ज्यादा किराया देना होगा। कृष्णानगर से सियालदह रूट पर दमदम तक का किराया 29 रुपये है। मासिक किराया 590 है। बैरकपुर जाने में 65 रुपये लगेंगे। मासिक किराया 1210 होगा। नैहाटी जाने के लिए 85 रुपये देने होंगे। अगर आप इसे महीने में एक बार देना चाहते हैं तो 1720 रुपये लगेंगे। रानाघाट तक का किराया 113 रुपये तय किया गया है। अगर महीने में एक बार करते हैं तो यात्री को 2310 रुपये देने होंगे। कृष्णानगर जाने पर 132 रुपये लगेंगे। यानी

2680 रुपये महीना। बनगांव शाखा के लिए भी यही किराया तय किया गया है। अगर आप हाबरा जाना चाहते हैं तो किराया 85 रुपये होगा। यानी 1720 रुपये महीना। गोबरडांगा का किराया क्रमश: 99 रुपये और 2010 रुपये होगा। वहीं बनगांव का किराया 113 रुपये और महीने का किराया 2320 रुपये होगा। लोकल ट्रेन और एसी लोकल ट्रेन के किराए में काफी अंतर होता है। सवाल उठता है कि एसी लोकल कितनी सफल होगी। इतना ज्यादा किराया देकर रोजाना यात्री यात्रा करेंगे।

कृष्णानगर के यात्री अनुराग रॉय ने कहा कि इस एसी लोकल को शुरू करने से हम जैसे गरीब लोगों को क्या फायदा होगा? ट्रेन का किराया सामान्य से कहीं ज़्यादा है। इसके विपरीत, मुझे लगता है कि उस लोकल ट्रेन को चलाने से दूसरी ट्रेनों में भीड़ बढ़ जाएगी। रानाघाट के दैनिक यात्री अनिमेष चौधरी ने कहा, कि किराया थोड़ा ज़्यादा है। हालांकि, भीषण गर्मी में एक-दो दिन एसी की हवा में यात्रा की जा सकती है। अगर किराया आम आदमी के लिए वहनीय होता, तो रेलवे को भी फ़ायदा होता। आम कामकाजी लोगों को भी फ़ायदा होता। एसी लोकल को लेकर यात्रियों में भले ही मिली-जुली प्रतिक्रिया हो, लेकिन ईस्टर्न रेलवे इस ट्रेन को चलाने को लेकर काफ़ी आशावादी है। रेलवे सूत्रों के मुताबिक, अगर यह ट्रेन सफल रही, तो और रेक बढ़ाए जा सकते हैं।

शरीर में विटामिन-डी की कमी से होता है हड्डियों में दर्द

विटामिन डी की कमी को पूरा करता है दूध, साबुत अनाज एवं संतरे का जूस

निज संवाददाता : शरीर को सेहतमंद रखने के लिए विटामिन्स और मिनरल्स की खास जरूरत होती है। इनमें से एक भी चीजों की कमी होने पर हमें कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अगर विटामिन- डी की बात करें तो ये हमारे शरीर के लिए बेहद जरूरी है। ये न केवल हमारी हड्डियों को मजबूत बनाने का काम करता है, बल्कि इम्युनिटी भी स्ट्रॉन्ग करने में मदद करता है। अगर इसकी कमी हो जाए तो आपको कमजोरी, थकान और हड्डियों में दर्द जैसी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। विटामिन डी को कंज्यूम करने का सबसे अच्छा और सरल तरीका है कि धूप लें। सुबह की धूप सबसे अच्छी मानी जाती है। विटामिन डी की कमी के लक्षण1. थकान और कमजोरी महसूस होना2. मसल्स में दर्द होना3. हड्डियों में कमजोरी या दर्द4. बालों का झड़ना5. चिंता और तनावइन तरीकों से पाएं विटामिन डी1. धूप लेने से शरीर में विटामिन डी की कमी को पूरा किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि आप सुबह के समय 10 से 15 मिनट धूप की रोशनी में बैठें। कुछ ही दिनों में आपको असर देखने को मिलेगा।2. दूध, साबुत अनाज और संतरे का जूस भी विटामिन डी की अच्छी मात्रा अपने पास रखते हैं। अगर आप इन्हें अपनी डेली डाइट में शामिल करते हैं तो विटामिन डी की कमी को पूरा किया जा सकता है।3. कुछ मछलियां भी विटामिन डी की कमी को पूरा कर सकती हैं। उनमें सालमन और सार्डिन जैसी फैटी फिश शामिल हैं। दरअसल, शरीर में विटामिन डी का स्तर बढ़ाने का यह एक नैचुरल तरीका है। अपने डॉक्टर से सलाह लेकर आप विटामिन डी सप्लीमेंट ले सकते हैं।

घर की रसोई में भी बन सकता है रेस्टोरेंट जैसा शाही पनीर पुलाव

स्वाद व महक ऐसी कि मेहमान भी करेंगे तारीफ

निज संवाददाता : एक ऐसी शानदार रेसिपी, जिससे आपकी रसोई में भी बिलकुल रेस्टोरेंट जैसा शाही और लजीज पनीर पुलाव बनेगा, जिससे हर मेहमान को तारीफ करने पर मजबूर कर देगा।

पनीर पुलाव बनाने के लिए सामग्री

बासमती चावल : 2 कप (अच्छी तरह धोकर 30 मिनट के लिए भिगो दें), पनीर : 250 ग्राम (छोटे क्यूब्स में कटा हुआ), प्याज : 1 बड़ा (बारीक कटा हुआ या लंबा कटा हुआ), अदरक-लहसुन का पेस्ट : 1 चम्मच, हरी मिर्च : 2-3 (बारीक कटी हुई), दही : 2 बड़े चम्मच (फेंटा हुआ), घी/तेल : 2-3 बड़े चम्मच, तेज पत्ता : 1, दालचीनी : 1 इंच का टुकड़ा, हरी इलायची : 3-4, लौंग : 4-5, काली मिर्च : 5-6, जीरा : 1 चम्मच, पिसे मसाले : हल्दी पाउडर : 1/2 चम्मच (ऑप्शनल), लाल मिर्च पाउडर : 1/2 चम्मच , धनिया पाउडर : 1 चम्मच, गरम मसाला : 1/2 चम्मच, हरा धनिया : बारीक कटा हुआ, पुदीने के पत्ते, नमक

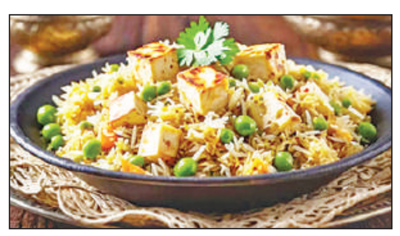

पानी : चावल के अनुसार (लगभग 3.5 से 4 कप)

पनीर पुलाव बनाने की विधि

सबसे पहले, भिगोए हुए बासमती चावल को पानी से निकाल कर एक छलनी में रख दें ताकि एक्स्ट्रा पानी निकल जाए। इसके बाद एक कड़ाही या पैन में थोड़ा सा घी/तेल गरम करें। पनीर के टुकड़ों को सुनहरा होने तक हल्का भून लें। इससे पनीर टूटेगा नहीं और स्वाद भी अच्छा आएगा। फिर पनीर को निकालकर अलग रख दें और उसी कड़ाही में बचा हुआ घी/तेल डालें। तेल गरम होने पर सभी साबुत गरम मसाले (तेज पत्ता, दालचीनी, इलायची, लौंग, काली मिर्च, जीरा) डालें और कुछ सेकंड के लिए भूनें जब तक उनमें से खुशबू न आने लगे। अब बारीक कटा हुआ प्याज डालें और सुनहरा भूरा होने तक भूनें। इसके बाद अदरक-लहसुन का पेस्ट और हरी मिर्च डालकर एक मिनट के लिए भूनें ताकि कच्चापन निकल जाए। इसके बाद आंच धीमी करें और हल्दी, लाल मिर्च, धनिया पाउडर और गरम मसाला डालकर अच्छी तरह मिलाएं। फिर तुरंत ही फेंटा हुआ दही डालकर लगातार चलाते रहें ताकि दही फटे नहीं। दही के साथ मसालों को 2-3 मिनट तक भूनें जब तक तेल अलग न होने लगे। अब भिगोए हुए चावल डालें और हल्के हाथों से मिलाएं ताकि चावल के दाने टूटें नहीं। इसमें पानी और नमक डालकर अच्छी तरह मिलाएं। फिर पानी में उबाल आने दें और भुना हुआ पनीर, कटा हरा धनिया और पुदीने के पत्ते (अगर इस्तेमाल कर रहे हैं) डालें। एक बार फिर हल्के हाथों से मिलाएं। आंच धीमी करें, कड़ाही को ढक्कन से कसकर ढक दें और 15-20 मिनट तक धीमी आंच पर पकने दें। बीच में ढक्कन न खोलें।15-20 मिनट बाद, गैस बंद कर दें और पुलाव को 5-10 मिनट के लिए ढका रहने दें (दम पर)। इससे चावल पूरी तरह पक जाएंगे और दाने खिले-खिले बनेंगे।अब ढक्कन हटाकर, कांटे की मदद से पुलाव को धीरे-धीरे अलग करें और गरमागरम शाही पनीर पुलाव को रायता, अचार या अपनी मनपसंद सब्जी के साथ परोसें।

इनाम का बंटवारा

अकबर नाम का एक राजा था। वह अपने दरबार में विद्वानों को बहुत पसंद करता था। एक छोटे से गाँव में एक लड़का रहता था उसका नाम महेश था।

महेश राजा के दरबार में नौकरी पाना चाहता था। एक दिन उसने राजा से मिलने की सोची और वो चल पड़ा राजा से मिलने शहर की और।

शहर की भीड़भाड़ से निकलकर वो राजा के महल तक पहुंचा। राजा के महल के आगे द्वारपाल खड़ा हुआ था। महेश ने द्वारपाल से कहा की मुझे राजा से मिलना है दो द्वारपाल ने बोला राजा हर किसी से नहीं मिलते। तो महेश ने कहा मैं राजा से मिलना चाहता हूँ । कृप्या मुझे राजा जी से मिलने दो।

द्वारपाल ने कहा मैं अगर तुम्हे मिलने दूंगा तो उससे मुझे क्या फायदा होगा। तो महेश सोचने लगा और थोड़ी देर बाद सोचने के बाद बोला की जो भी मुझे राजा से इनाम मिलेगा उसे मैं आधा तुम्हे दे दूंगा। द्वारपाल बहुत लालची था और वो जनता था राजा अकबर लोगो को बहुत इनाम देते हैं। तो वो महेश से बोला ठीक है मैं तुम्हे जाने देता हूँ पर तुम्हे आधा इनाम मुझे देना पड़ेगा। यह कहकर द्वारपाल ने उसे जाने दिया।

महेश राजा के महल के अंदर प्रवेश किया और वो राजा के महल को देखकर हैरान रह गया। महल बहुत सुन्दर बना हुआ था। महल के अंदर सारा दरबार हीरे मोतियों से सजा हुआ था। राजा अकबर दरबारियों के बीच में बैठा हुआ था। महेश ने अकबर राजा को अभिवादन किया और कहा राजा जी मैं बहुत दूर से आया हूँ कृपया मेरी मदद करें।

राजा ने कहा बताओ तुम क्या मदद चाहते हो। तो महेश ने बोला राजा जी आप मुझे सौ कोड़े मारने का इनाम दें। राजा यह सुनकर हैंरान रह गया। राजा बोला की तुम यह कोड़े क्यों खाना चाहते हो तो महेश बोला राजा जी आपके द्वारपाल ने मुझसे वादा लिया है की जो मुझे आपसे इनाम मिलेगा वो मुझे आधा उसे देना पड़ेगा।

यह सुनकर राजा को गुस्सा आ गया और उसने सिपाईयों को आदेश दिया की द्वारपाल को हमारे सामने पेश किया जाये और महेश के इनाम की पूरी राशि इस द्वारपाल को ही दी जाए। सिपाई द्वारपाल को पकड़ कर लाते हैं और उसे 100 कोड़े मारते हैं।

राजा महेश की चालाकी से बहुत खुश हो जाता है और बोलता है की आप जैसे व्यक्ति की हमारे दरबार में जगह होनी चाहिए। आज से हम आपको हमारे दरबार में मंत्री की जगह देते हैं और हम आपको आज से बीरबल बुलाएँगे। यह सुनकर महेश बहुत खुश हुआ और राजा की बात मानकर दरबार में मंत्री बन गया।

तभी से बीरबल और उसकी बुद्धि की कहानियां दूर दूर तक मशहूर हो गयी।

जादुई खजाने वाली परी

बहुत समय पहले एक गाँव में एक परी रहती थी । सब गाँव वाले अपनों बच्चो को उसी परी की कहानी सुनते थे । सब लोग उसे ''जादुई खजाने वाली परी'' बोलते थे क्यूंकि उसके पास एक जादुई खजाना था । परी ने जादुई खजाने से कई लोगो की मदद करी थी । लेकिन उसका खजाना को सिर्फ वही इन्सान हाथ लगा सकता था जो सच्चे दिल से दुसरे लोगो की भलाई के बारे में सोचे । एक बार गाँव में बहुत सूखा पड़ा । सब खेत सुख गए थे और कुएँ खाली हो गए । लोगो के पास खाने के लिए कुछ नहीं बचा । सभी गाँव वालों ने मिलकर एक बैठक बुलाई । सबने मिलकर फैसला किया और कहा, ''हमें जादुई खजाने वाली परी की मदद लेनी चाहिए । वह जरूर हमारी समस्या का हल निकालेगी । '' सबको यह बात पसंद आयी और अगले दिन गाँव के कुछ लोग परी से मिलने गए । और यहीं से परी की कहानी शुरू होती है ।

परी ने सबकी बात सुनी और कहा, ''मैं मदद करने के लिए तैयार हूं । पर मेरे खजाने को सिर्फ वो इन्सान ही हाथ लगा सकता है जो सच्चा हो और सभी में ऐसे दुसरो की भलाई में इस्तमाल करना चाहेगा ।''गाँव के कई लोग खजाने को पाने के लिए आगे आए । सबसे पहले एक धनी व्यापारी आया । उसने सोचा, ''की थोड़े पैसे मैं गरीबों में बाँट दूंगा बाकि पैसे मैं अपने पास रख लूंगा और मैं और भी आमिर हो जाऊंगा । '' लेकिन जैसे ही व्यापारी ने खजाने को हाथ लगाया खजाना गायब हो गया । परी मुस्कराते हुए बोली, ''आप सच्चे इन्सान नहीं हो इसलिय खजाना गायब हो गया । ''

फिर गाँव का साहूकार आया । उसने सोचा, ''मैं खजाने से कर्ज का धंधा शुरू करूँगा और बहुत पैसे कमाऊंगा । '' फिर जैसे ही उसने खजाने को हाथ लगाया खजाना गायब हो गया । परी फिर बोली ''यह खजाना आपके लिए भी नहीं है । ''

फिर एक गाँव की गरीब महिला आयी । उसने परी से कहा, ''मुझे इस खजाने की जरूरत नहीं है । मैं इसका इस्तमाल लोगो की भलाई के लिए करुँगी । '' परी ने बोला, ''तुम खजाने को हाथ लगाओ । खजाना खुद तय करेगा की तुम उसके लायक हो या नहीं । '' यह बात सुनकर महिला ने खजाने को हाथ लगाया और खजाना चमकने लगा । खजाने के अंदर से कभी न ख़तम होने वाले पानी के जादुई घड़े और भोजन के भंडार प्रकट हुए । परी ने बोला, ''तुम सच्ची इन्सान हो । तुम इस खजाने का इस्तमाल कर सकती हो । ''

उस महिला ने उस खजाने का इस्तमाल गाँव वालो की भलाई के लिए किया । उसने सभी गाँव वालो को मुफ्त में भोजन करवाया और किसानों को दुबारा खेती करने के लिए बीज खरीदने में भी मदद करी । जल्दी ही गाँव की सारी मुसीबतें खत्म हो गयी और गाँव खुशहाल हो गया । सभी ने उस महिला और परी का धन्यवाद दिया ।

माथापच्ची–7

			9	4		5		1
			5				4	7
				1	7			8
	4		8				1	3
	2						9	
5	8				9		2	
1			3	5				
7	6				2			
2		3		9	4			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 6 का हल

5	1	7	9	2	3	8	6	4
2	4	6	8	7	5	9	1	3
9	8	3	6	1	4	2	5	7
7	9	2	1	5	6	4	3	8
4	3	5	2	8	7	1	9	6
8	6	1	3	4	9	5	7	2
1	5	4	7	6	2	3	8	9
6	2	9	5	3	8	7	4	1
3	7	8	4	9	1	6	2	5

गरीब की गर्मियों की छुट्टियां

एक शहर में मोहनलाल नाम का एक मजदूर अपनी पत्नी शांति व दो बच्चों सुमित और सुरेश के साथ रहता था। वे शहर में एक छोटे से मकान में रहते थे। शांति अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा कर बड़ा आदमी बनाना चाहती थी। दोंनों बच्चे स्कूल जाते थे। एक दिन सुमित और सुरेश स्कूल से वापस आये।

सुमित : माँ परसों से स्कूल की छुट्ंिया होने जा रही हैं।

शांति : यह तो बहुत अच्छी बात है।

सुरेश : माँ हमारे स्कूल में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चे गर्मियों की छुट्टियों में घूमने पहाड़ों पर जा रहे हैं। हम कब जायेंगे।

शांति : बेटा हम नहीं जा सकते वहां बहुत पैसे लगते हैं। तुम्हारे पिता बहुत मुश्किल से कुछ पैसे कमा पाते हैं। और बड़ी मुश्किल से तुम्हारे स्कूल का खर्च उठा पाते हैं।

यह सुनकर दोंनो बच्चे जिद करने लगे। शाम को मोहनलाल जब वापस आया तो शांति ने उसे सारी बात बता दी।

मोहनलाल : शांति तुम तो जानती हो बहुत मुश्किल से घर का खर्च चल पाता है अब ऐसे में बच्चों को कहां घुमाने ले जा सकते हैं।

इसी तरह कई दिन बीत जाते हैं। शांति बच्चों को समझाने की बहुत कोशिश करती है लेकिन वे नहीं मानते।

शांति : बच्चों चलो अब जिद मत करो। यदि हमारे वश में होता तो हम तुम्हें अवश्य घुमाने ले जाते।

सुरेश : लेकिन माँ जब स्कूल के सभी बच्चे वापस आकर हमें वहां के बारे में बतायेंगे तो हम क्या कहेंगे हमारे पास तो कुछ भी बताने के लिए नहीं होगा।

बूझो तो जानें

इन पहेलियों को हल करके आप अपनी मनोशक्ति को मजबूत कर सकते हैं और अपने दोस्तों को भी चुनौती दे सकते हैं। तो आइए, इन मनोरंजक हिंदी पहेलियों का आनंद लें और अपनी बुद्धि को चुनौती दें!

1. ऐसी कौन सी चीज है जो हमेशा आगे बढ़ती है लेकिन कभी पीछे नहीं जाती?
2. ऐसा कौन सा जीव है जो बिना दिल के भी जिंदा रहता है?
3. वह क्या है जो एक बार टूटने पर कभी नहीं जुड़ता?
4. वह क्या है जो बिना आवाज के बोलता है?
5. ऐसी कौन सी चीज है जो जितनी ज्यादा होती है उतनी ही कम दिखाई देती है?
6. वह क्या है जो बिना पैरों के चलता है?
7. ऐसी कौन सी चीज है जो जितनी ज्यादा होती है उतनी ही हल्की होती है?

उत्तर: 1. समय 2. केंचुआ 3. विश्वास 4. किताब 5. अंधेरा 6. घड़ी 7. हवा

अभिभावकों के विशेष अनुरोध और बच्चों के शिक्षाप्रद मनोरंजन के लिए हम यह विशेष पन्ना दे रहे हैं। उम्मीद है इससे पाठकों का भरपूर मनोरंजन होगा।

हंसी के फव्वारे

पप्पू समंदर किनारे लेटा धूप ले रहा था..
एक अमेरिकन- आर यू रिलैक्सिंग?
पप्पू- नो डियर आई एम पप्पू...
थोड़ी देर बाद एक दूसरा अमेरिकन
वहां से गुजरा- आर यू रिलैक्सिंग?
पप्पू चिल्लाकर- कमीने, आई एम पप्पू!
फिर खिजलाकर पप्पू वहां से उठकर दूसरी तरफ चला गया, जहां एक अमेरिकन
सुंदरी लेटी थी
पप्पू ने उससे पूछा- आर यू रिलैक्सिंग?
अमेरिकन सुंदरी- यस, आई एम रिलैक्सिंग...
पप्पू उसे एक तमाचा मार के बोला, यहां पड़ी है,
उधर तुझे तेरे घरवाले ढूंढ रहे हैं।

♦♦♦♦♦♦♦

इंटरव्यू में बॉस ने पूछा- क्या आपको ब्रिटिश भाषा आती है?
लड़का- हां
बॉस- कुछ बोल के दिखाओ
लड़का- डूगना लागान डेना पडेगा बुवन!
बॉस- बॉस बेहोश...

♦♦♦♦♦♦♦

जोक्स - फोटो : अमर उजाला

सुबह-सुबह पत्नी नींद से उठते ही बोली- अजी सुनते हो...
पति- बोलो, क्या हुआ?
पत्नी- मुझे सपना आया कि आप मेरे लिए हीरों का हार लेकर आए हो।
पति (गुस्से में)- ठीक है तो वापस सो जाओ और पहन लो...!

♦♦♦♦♦♦♦

पप्पू- यार तू आज परेशान दिख रहा है।
गोलू- हां यार, मैं जो भी काम करता हूं, मेरी पत्नी बीच में आ जाती है.
पप्पू- तू एक बार ट्रक चलाकर देख...

♦♦♦♦♦♦♦

सुबह-सुबह पत्नी नींद से उठते ही बोली- अजी सुनते हो...
पति- बोलो, क्या हुआ?
पत्नी- मुझे सपना आया कि आप मेरे लिए हीरों का हार लेकर आए हो।
पति (गुस्से में)- ठीक है तो वापस सो जाओ और पहन लो...!

♦♦♦♦♦♦♦

पप्पू- गुरुजी मुझे बताइए कि मैं कैसे अपने अंदर की कमियां ढूंढू?
गुरुजी- बेटा बहुत आसान है, शादी कर लो
पप्पू- उससे क्या होगा?
गुरुजी- तुम्हारी पत्नी न केवल तुम्हारी बल्कि तुम्हारे पूरे खानदान की कमियां, इतनी बार गिनवाएगी कि तुम्हें याद हो जाएंगी.....

Page-12_Layout 1 6/23/2025 3:57 PM Page 1

'माँ' के जरिए पांच साल बाद स्क्रीन पर वापसी कर रहीं काजोल

27 जून को रिलीज होगी फिल्म

मुंबई : 'मां' के जरिए पांच साल बाद स्क्रीन पर वापसी करेंगी काजोल निज संवाददाता : अभिनेत्री काजोल करीब पांच साल के बाद एक बार फिर से फिल्मों में वापसी करने जा रही हैं। आगामी 27 जून को वे फिल्म 'मां' के जरिए बड़े पर्दे पर अपना कमबैक कर रही हैं। इस बीच में उन्होंने ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपना डेब्यू किया और कई अच्छे प्रोजेक्ट्स में नजर आईं। हाल ही में एक इंटरव्यू में काजोल ने अपने कमबैक, ओटीटी के बढ़ते प्रभाव और पति अजय के साथ काम करने को लेकर अपना एक्सपीरियंस शेयर किया है। प्रोड्यूसर के तौर पर अजय देवगन कैसे हैं, के सवाल पर काजोल ने कहा कि अजय बहुत अच्छे और जिम्मेदार प्रोड्यूसर हैं। वो बहुत ज्यादा इंवॉल्वड रहें। वो उन प्रोड्यूसर में से नहीं हैं कि चलो बस पेपर साइन कर दिया। स्क्रिप्ट, फिल्म का क्लाईमैक्स, वीएफएक्स इन सबमें अजय बहुत ज्यादा शामिल थे। वीएफएक्स तो एक अलग ही फिल्म है, जिसमें आपको सब कुछ इमेजिन करना पड़ता है। अजय ने सब कुछ अच्छे से किया। काजोल ने कहा कि मैं बहुत ज्यादा डरती हूं इसलिए मैं हॉरर फिल्में देखती नहीं हूं। हॉरर फिल्म में काम कर लिया है, तो इसे तो अब देखना पड़ेगा। मैं बहुत बहादुर हूं। मेरे अंदर साहस ज्यादा है। मुझे कोई बोले कि किसी बिल्डिंग, गराज या किसी जगह अकेले चली जाओ तो मैं जाती हूं। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है। मैंने जिंदगी में ज्यादा हॉरर फिल्में देखी नहीं हैं तो ऐसी चीजें मुझे नहीं डराती हैं। मैंने अब तक हॉरर जॉर को अपनी जिंदगी से दूर ही रखा है लेकिन अब ये फिल्म मुझे देखनी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि मेरी मां ने जो सबसे स्मार्ट और इंटेलिजेंट चीज की कि उन्होंने कभी मुझ पर धर्म थोपा नहीं। मां ने बचपन से सिखाया कि भगवान हर जगह होता है। आप कहीं पर भगवान को देख सकते हो और भगवान भी आपको देख रहा है। आप उनसे कभी भी बात कर सकते हो और उनका हाथ हमेशा आपके सिर पर रहेगा। उन्होंने सबसे बड़ी बात जो कही थी कि भगवान मां की तरह होता है। वो हमेशा आपको प्रोटेक्ट करेगा। जैसे आप अपनी मां के सामने गलती करके माफी मांगते हो। ठीक वैसे ही भगवान के साथ होता है। आपकी गलती के लिए वो आपको सजा नहीं देता है। हमेशा लीक से हटकर काम करने के सवाल पर काजोल ने कहा कि मुझे लगता है कि हर एक्टर को अपने आप को री इन्वेंट करना पड़ता है। एक ही तरह का काम कर-करके हम भी थक जाते हैं। ऑडियंस भी हमें एक रोल में देखकर थक जाती है। ऐसे में हर एक्टर को अपने आपको अलग-अलग रूप में दिखाना पड़ता है। मैं हॉरर जोनर और एक्शन पहली बार कर रही हूं। ये मेरे लिए बहुत बड़ा कदम है। हमने एक दिलचस्प पिक्चर बनाई है। उन्होंने कहा कि मैंने जो भी किया बहुत सोच समझकर किया है। मुझे लगता है कि मैं इंटेलिजेंट हूं। मैं चाहती हूं कि मैं जब अपने काम को देखूं तो उसकी इज्जत करूं। मेरे लिए बहुत जरूरी है कि जब मैं अपने काम को देखूं तो बोल सकूं कि मैं अपनी फैसले की इज्जत करती हूं। वो अच्छा, बुरा जो भी निकले लेकिन वो काम मेरा है। फिल्म गुप्त में काजोल विलेन बनी थीं और उन्हें उनके रोल के लिए फिल्मफेयर अवॉर्ड मिल था। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि ओटीटी के आने से कमर्शियल सिनेमा पिछड़ा है। आप आजकल की हिट फिल्मों का कलेक्शन देखेंगे तो वो पहले की तुलना में काफी ज्यादा हैं। हां, बदलाव जरूर आया है। ओटीटी की वजह से अलग-अलग तरह की फिल्में बन रही हैं। ओटीटी ने आपको सिनेमा का अलग रूप दिखाया है और ये काफी अच्छा है। काफी लंबे समय के बाद स्क्रीन पर मेरी फिल्म आ रही है। पर वापसी कर रही हूं तो मैं चाहूंगी कि दर्शक इसे प्यार दें।

'एक दीवाने की दीवानियत' की शूटिंग पूरी

अब तक की सबसे मुश्किल फिल्मों में से एक : सोनम

निज संवाददाता : अभिनेत्री सोनम बाजवा अपनी नई फिल्म 'एक दीवाने की दीवानियत' को अब तक की सबसे मुश्किल फिल्मों से एक मानती हैं। उन्होंने अभी हाल ही में इस फिल्म की शूटिंग पूरी की है। सोनम ने कहा कि इस फिल्म की शूटिंग करना मेरे लिए सबसे खास अनुभव रहा। सोनम ने फोटो शेयरिंग प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें शेयर की। इन तस्वीरों में वे अपने को-स्टार हर्षवर्धन राणे के साथ सेट पर नजर आ रही हैं और कैमरे के लिए पोज दे रही हैं। इसके अलावा, उन्होंने निर्देशक मिलाप जावेरी के साथ कुछ बीटीएस पलों को भी शेयर किया। तस्वीरों को शेयर करते हुए सोनम ने कैप्शन में लिखा, यकीन नहीं हो रहा कि मैं यह लिख रही हूं कि 'एक दीवाने की दीवानियत' की शूटिंग पूरी हो गई है। यह मेरी अब तक की सबसे मुश्किल फिल्मों में से एक रही, लेकिन इसका अनुभव बहुत ही खास रहा। अपने पोस्ट में सोनम ने आगे कहा-मैं उन सभी लोगों का धन्यवाद करना चाहती हूं जो इस सफर का हिस्सा रहे। आप सभी के बिना यह मुमकिन नहीं था। बता दें कि सोनम से पहले हर्षवर्धन राणे ने चंडीगढ़ में फिल्म की शूटिंग पूरी करने का जश्न मनाया था। उन्होंने फिल्म की यूनिट के साथ मिलकर जमकर आतिशबाजी की थी। हर्षवर्धन ने इंस्टाग्राम स्टोरीज में खास पल की झलक दिखाते हुए एक वीडियो पोस्ट की थी, जिसमें वह अपनी टीम के साथ नजर आए। वीडियो में आतिशबाजी, हार्ट शेप गुब्बारे और गोल्डन कलर का बोर्ड दिखाई दिया, जिस पर लिखा था- एक दीवाने की दीवानियत की शूटिंग पूरी हुई। बता दें कि पहले फिल्म का नाम सिर्फ दीवानियत था, बाद में इसका नाम बदलकर 'एक दीवाने की दीवानियत' रख दिया गया है। इसके पीछे मेकर्स ने कारण बताया कि पुराना टाइटल फिल्म की कहानी और उसके नए अंदाज से मेल नहीं खा रहा था, इसलिए फिल्म का नाम बदला गया। फिल्म के निर्माण की जिम्मेदारी पहले वाली कंपनी विकिर फिल्म्स से हटकर एक नई कंपनी प्ले डीएमएफ के हाथों में आई, जिसकी अगुवाई अंशुल गर्ग ने की। यह फिल्म मिलाप जावेरी ने डायरेक्ट की है और राघव शर्मा इसके को-प्रोड्यूसर हैं। फिल्म 2 अक्टूबर 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। दर्शकों को बेसब्री से इस फिल्म का इंतजार है।

'शोले' में जय के रोल के लिए अमिताभ नहीं थे पहली पसंद

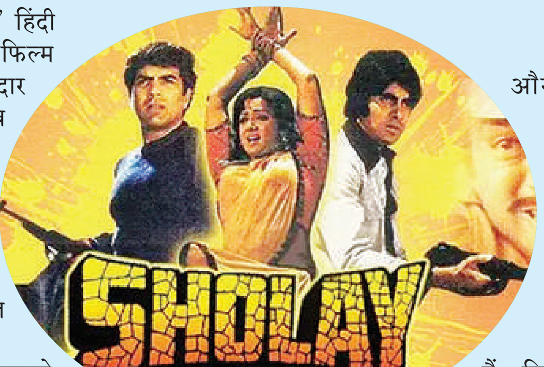

निज संवाददाता : 'शोले' हिंदी सिनेमा की आइकॉनिक फिल्म है। इस मूवी के किरदार और डायलॉग्स आज भी खूब पसंद किए जाते हैं। फिल्म में अमिताभ बच्चन और धर्मेंद्र ने अपनी जय और वीरू की भूमिका वाली जोड़ी से दर्शकों का दिल जीत लिया था।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि अमिताभ बच्चन फिल्म में जय के रोल के लिए पहली पसंद नही थे। हालांकि फिर एक एक्टर की वजह से अमिताभ बच्चन को ये किरदार मिला था। दरअसल 'शोले' में वीरू का किरदार निभाने वाले बॉलीवुड के हीमैन धर्मेंद्र ने यह खुलासा किया था कि 1975 में रमेश सिप्पी द्वारा निर्देशित फिल्म 'शोले' में जय की भूमिका पाने में उन्होंने मेगास्टार अमिताभ बच्चन की मदद की थी।

धर्मेंद्र ने यह भी बताया था कि पहले यह भूमिका शत्रुघ्न सिन्हा को दी गई थी, लेकिन बाद में धर्मेंद्र ने अमिताभ बच्चन के नाम की सिफारिश की जिसके बाद बिग बी को ये आइकॉनिक रोल मिल गया था।एक इंटरव्यू के दौरान धर्मेंद्र ने कहा-'इसका पहले ही जिक्र किया जा चुका है। हां, मैंने उनकी सिफारिश की थी.. मैं तो कहता नहीं, मैंने उनको (अमिताभ बच्चन) रोल दिलाया...ये मुझे मिलने आते थे अमिताभ साहब। वह मेरे बगल में बैठते थे, तो मैंने रमेश सिप्पी जी को कहा ये नया लड़का है, इसकी आवाज से तो लगता है बहुत अच्छा काम करेगा...उनकी जो अंदर से चाहना थी...जो खुद से प्यार करने की खूबसूरती थी वो अच्छी लगी...मैंने कहा इनको ले लो।'

अब अल्लू अर्जुन करेंगे 'शक्तिमान' के रूप में दर्शकों का मनोरंजन

90 के दशक में मुकेश खन्ना ने निभाया था किरदार

निज संवाददाता : टीवी के सबसे लोकप्रिय शो में शुमार 'शक्तिमान' को एक बार फिर से वापस लाने की तैयारी चल रही है। मेकर्स को इस आइकॉनिक किरदार के लिए एक नए चेहरे की तलाश थी, जो अब खत्म हो गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, साउथ के सुपरस्टार अल्लू अर्जुन शक्तिमान की भूमिका निभा सकते हैं। इस बार 'शक्तिमान' की कहानी को एक नए अंदाज में दर्शकों के सामने दिखाया जाएगा।बॉलीवुड की रिपोर्ट के मुताबिक, 'शक्तिमान' को एक बार फिर से बड़े पर्दे पर लाया जा रहा है। इस बार इस रोल में अल्लू अर्जुन नजर आ सकते हैं। खास बात यह है कि साउथ के जाने-माने डायरेक्टर बेसिल जोसेफ इस प्रोजेक्ट का डायरेक्शन करेंगे। जबकि सोनी पिक्चर्स के बैनर तले बनाया जाएगा। इतना ही नहीं दो बड़े अंतरराष्ट्रीय स्टूडियो गीता आर्ट्स के साथ सहयोग करने के लिए तैयार हैं। हालांकि, अभी तक इस मामले में कोई भी ऑफिशियल बयान सामने नहीं आया है।बता दें, साल 2021 में ओटीटी पर आई फिल्म मिन्नल मुरली के लिए बेसिल की खूब तारीफ हुई थी। कोरोना महामारी के कारण मजबूरन इस फिल्म को ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज किया गया था।2024 में मुकेश खन्ना ने एक वीडियो शेयर किया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि अल्लू अर्जुन अगले सु-परहीरो के रोल के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकते हैं। एक्टर ने कहा था-मैं किसी भी बात के लिए प्रतिबद्ध नहीं हूं, लेकिन मुझे लगता है कि अल्लू अर्जुन 'शक्तिमान' हो सकते हैं।

Page-13_Layout 1 6/23/2025 3:57 PM Page 1

गोवा, जहाँ बारिश जगाती है प्रेम, साहस और संस्कृति

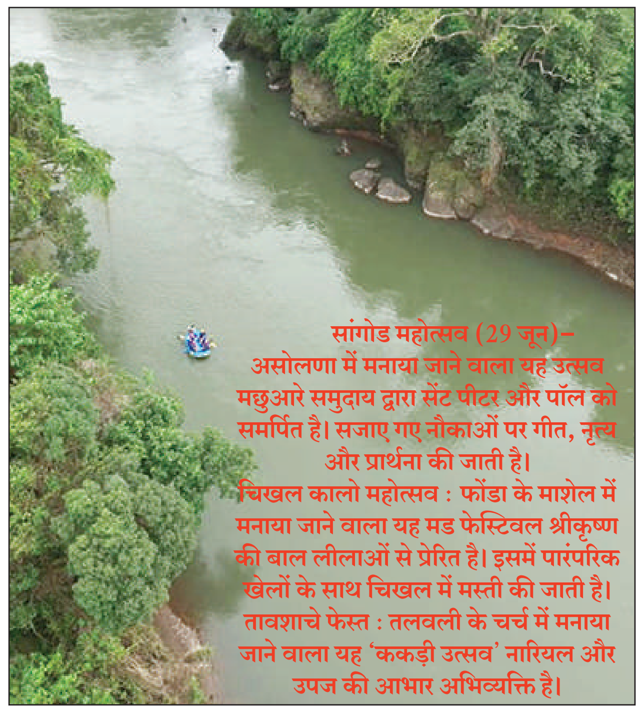

प्रवीण चंद्रा

पणजी : जैसे ही कोकण क्षेत्र में आसमान पर बादल घिरने लगते हैं, गोवा हरियाली, झरनों, उत्सवों की लय और आत्मीय शांति में परिवर्तित हो जाता है। बारिश राज्य को इस तरह से जागृत करती है कि कुछ पर्यटकों को यह समय आत्मिक, सजीव और गहराई से जुड़ा हुआ लगता है। यह मुख्य पर्यटन सीज़न की भीड़ से दूर ले जाकर यात्रियों को एक ऐसा गोवा दिखाता है जो स्थानीय, प्राकृतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है। मानसून के दौरान गोवा में एक ऐसा प्रेममय वातावरण छा जाता है, जो किसी और सूखे मौसम में अनुभव नहीं किया जा सकता। धुंध से भरी सुबहें, हरे-भरे छत, शांत रास्ते और विरासत वाले घर रोमांटिक जोड़ों के लिए एक परिपूर्ण अनुभव बनाते हैं।

नेत्रावली, दक्षिण गोवा : सांगे तालुका में स्थित नेत्रावली, एकांत चाहने वाले जोड़ों के लिए एक खजाना है। यह वन्यजीव अभयारण्य पक्षियों की चहचहाहट और पत्तों की सरसराहट से जीवंत हो उठता है। प्रसिद्ध बबल लेक (बुदबुदों की झील) अपनी रहस्यमय बुदबुदाहट के लिए जाना जाता है। होमस्टे और ईको-लॉज यहां एक ऐसा अनुभव देते हैं जो आपको प्रकृति के करीब, शांत और आत्मिक महसूस कराता है।

चोर्ला घाट, गोवा-कर्नाटक सीमा : पश्चिमी घाट में स्थित यह घाट कर्नाटक और गोवा को जोड़ता है। बदलते बादल, ठंडी हवा और जंगल के रास्ते इसे लंबी रोमांटिक ड्राइव्स के लिए आदर्श बनाते हैं। वाइल्डरनेस्ट और नेचर्स नेस्ट जैसे रिसॉर्ट्स यहां ट्रीटॉप स्टे, वेलनेस रिट्रीट और घाटी का शानदार नज़ारा प्रदान करते हैं।

दिवाडी द्वीप : ओल्ड गोवा से छोटी फेरी यात्रा कर दिवाडी द्वीप पहुंचा जा सकता है। यह द्वीप विरासत घरों, हरे-भरे खेतों और मैत्रीपूर्ण स्थानीय लोगों के लिए जाना जाता है जोड़ों के लिए यह एक ऑफबीट और प्रामाणिक अनुभव है।

प्राकृतिक झरने : मानसून गोवा के झरनों को फिर से जीवित कर देता है। इनका गर्जन, हरियाली और ठंडा वातावरण प्रकृति प्रेमियों और फोटोग्राफर्स के लिए आदर्श है।

दूधसागर जलप्रपात, भगवान महावीर वन्यजीव अभयारण्य : 'दूध का समुद्र' कहलाया जाने वाला यह जलप्रपात भारत के सबसे ऊंचे जलप्रपातों में से एक है। मानसून में इसकी धाराएँ अत्यंत शक्तिशाली हो जाती हैं। कुले से जीप सफारी या ट्रेकिंग द्वारा पहुँचा जा सकता है।

तांबड़ी सुर्ला जलप्रपात : 12वीं सदी के महादेव मंदिर के पास स्थित यह झरना जंगल

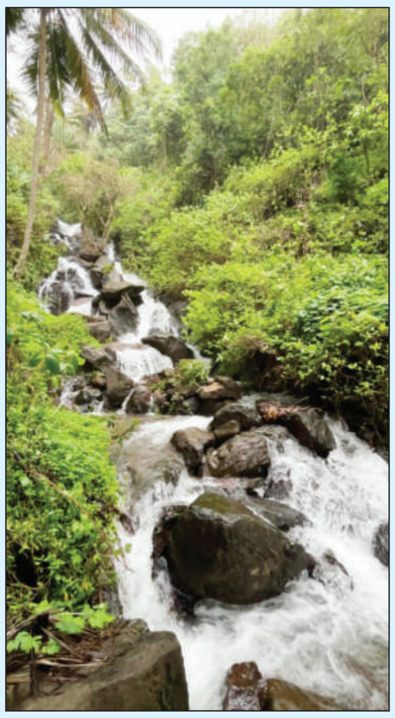

से घिरा है और विरासत व प्रकृति दोनों का समन्वय प्रस्तुत करता है। **हरवले जलप्रपात, साखली :** डिचोली के पास स्थित यह जलप्रपात अपने घोड़े की नाल जैसे स्वरूप और आसपास की गुफाओं व मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। **कुस्के जलप्रपात:** काणकोण के कुस्के गांव में स्थित, यह झरना अगस्त से सितंबर के बीच देखने योग्य होता है। **नेत्रावली जलप्रपात:** मडगांव से 50 किमी दूर स्थित यह झरना ट्रेकिंग के बाद एक प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करता है। **केसरवाल जलप्रपात :** पणजी से 22 किमी दूर स्थित, यह झरना खनिज समृद्ध जल के लिए भी जाना जाता है।

मानसून गोवा में उपजाऊपन, आनंद और परंपरा का मौसम है। यहां ईसाई, हिंदू और आदिवासी परंपराओं के उत्सव मनाए जाते हैं। **सांजाव महोत्सव :** साओ जोआओ त्योहार, जिसमें पुरुष पारंपरिक रूप से कुओं और तालाबों में कूदते हैं। फूलों की मालाएं, पारंपरिक गीत, और रंगीन फ्लोट इसे अद्वितीय बनाते हैं।

सांगोड महोत्सव (29 जून)– असोलणा में मनाया जाने वाला यह उत्सव मछुआरे समुदाय द्वारा सेंट पीटर और पॉल को समर्पित है। सजाए गए नौकाओं पर गीत, नृत्य और प्रार्थना की जाती है।

चिखल कालो महोत्सव : फोंडा के माशेल में मनाया जाने वाला यह मड फेस्टिवल श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं से प्रेरित है। इसमें पारंपरिक खेलों के साथ चिखल में मस्ती की जाती है। **तावशाचे फेस्त :** तलवली के चर्च में मनाया जाने वाला यह 'ककड़ी उत्सव' नारियल और उपज की आभार अभिव्यक्ति है।

बोंदेरा महोत्सव (अगस्त)– दिवाडी द्वीप पर आयोजित यह उत्सव रंग, झंडे, फ्लोट्स और सांस्कृतिक स्पर्धाओं का संगम है। चरा-वणे जलप्रपात (वालपई) और सात्रेगड ट्रेक (म्हादई क्षेत्र) मानसून में हरे-भरे हो जाते हैं। म्हादई नदी में वाइट वॉटर राफ्टिंग (जुलाई-सितंबर) यह रोमांचकारी अनुभव प्रकृति की गोद में है, जहाँ राफ्टिंग के दौरान घने वर्षावनों से गुजरते हैं।

मानसून ट्रेल्स : चोडण द्वीप की मसालों की बागों में जाएं, मांडवी पर क्रूज़ करें या मानसून ट्रेक्स में भाग लें। जीटीडीसी दूधसागर, तांबड़ी सुर्ला और नेत्रावली में गाइडेड ट्रेक्स भी कराता है, जो इको-टूरिज्म और स्थानीय जैव विविधता के अनुभव को समृद्ध करता है। अगर आपको किताब लेकर विरासत घर में बैठना पसंद है या बारिश से भीगी हुई मिट्टी पर नंगे पैर चलना अच्छा लगता है तो गोवा में हर किसी की 'मानसून स्टोरी' है। तो आपके लिए मानसून का क्या मतलब है? रोमांस? साहसिकता? संस्कृति? जो भी हो गोवा आपको अपने शांत और प्राकृतिक रूप से परिचित कराने के लिए आमंत्रित करता है। इस मानसून, गोवा को समुद्र तटों से परे महसूस करें एक ऐसा गोवा, जो असली है और प्रकृति के साथ तालमेल में है।

कुफरी : छुट्टी में सुकून की तलाश करते

पर्यटकों के लिए आदर्श गंतव्य

हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से लगभग 16 किलोमीटर दूर स्थित कुफरी एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो खासकर सर्दियों के मौसम में बर्फबारी और विंटर स्पोर्ट्स के लिए प्रसिद्ध है।

एडवेंचर लवर्स के लिए खास जगह

1. कुफरी स्नो स्पोर्ट्स, 2. महासू पीक
3. हिमालयन नेचर पार्क, 4. फन वर्ल्ड

निज संवाददाता : छुट्टियों में बर्फबारी व प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए पर्यटकों के लिए कुफरी एक आदर्श गंतव्य स्थल है। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से लगभग 16 किलोमीटर दूर स्थित कुफरी एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो खासकर सर्दियों के मौसम में बर्फबारी और विंटर स्पोर्ट्स के लिए प्रसिद्ध है। समुद्र तल से लगभग 2,720 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह छोटा लेकिन खूबसूरत हिल स्टेशन अपने शांत वातावरण, हिमाच्छादित पर्वतों और साहसिक गतिविधियों के लिए हर उम्र के पर्यटकों को आकर्षित करता है।

क्या है कुफरी की विशेषताएं?

कुफरी का नाम 'कुफर' शब्द से आया है, जिसका अर्थ होता है 'झील'। यहां का मौसम साल भर सुहावना रहता है, लेकिन दिसंबर से फरवरी के बीच जब पूरी घाटी बर्फ की चादर से ढक जाती है, तब इसकी सुंदरता अपने चरम पर होती है। बर्फबारी के शौकीनों और एडवेंचर लवर्स के लिए यह जगह किसी स्वर्ग से कम नहीं।

1. कुफरी स्नो स्पोर्ट्स

कुफरी हिमाचल प्रदेश का एक प्रमुख स्कीइंग और स्नोबोर्डिंग डेस्टिनेशन है। विंटर सीजन में यहां देश-विदेश से पर्यटक आते हैं और बर्फ में रोमांच का आनंद लेते हैं।

2. महासू पीक

यह कुफरी की सबसे ऊंची चोटी है जहां से बर्फ से ढके हिमालय पर्वतों का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। यहां तक पहुँचने के लिए टट्टू की सवारी भी एक लोकप्रिय अनुभव है।

3. हिमालयन नेचर पार्क

यह पार्क प्रकृति प्रेमियों के लिए खास है। यहां आपको हिमाचली वन्यजीव जैसे हिमालयन मोनाल, तेंदुआ, भालू और अन्य पशु-पक्षी देखने को मिलते हैं।

4. फन वर्ल्ड

यह एक छोटा एम्यूज़मेंट पार्क है जहां स्कीइंग स्लोप, ट्यूब स्लाइड्स और अन्य मज़ेदार गतिविधियां बच्चों और परिवारों को खूब लुभाती हैं।

कुफरी में करने योग्य गतिविधियां

स्कीइंग और स्नोबोर्डिंग, घुड़सवारी और याक राइड, हाइकिंग और ट्रेकिंग, फोटोग्राफी और नेचर वॉक, स्थानीय हस्तशिल्प और ऊनी वस्त्रों की खरीदारी।

यात्रा का सर्वोत्तम समय

दिसंबर से फरवरी : बर्फबारी और विंटर स्पोर्ट्स के लिए आदर्श समय। **अप्रैल से जून :** गर्मियों में ठंडी जलवायु और हरियाली का आनंद लेने के लिए उपयुक्त।

कैसे पहुंचे कुफरी?

हवाई मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा शिमला (जुब्बड़हट्टी) है, जो लगभग 35 किमी दूर है। रेल मार्ग : निकटतम रेलवे स्टेशन कालका है, जहां से शिमला तक टॉय ट्रेन और फिर सड़क मार्ग से कुफरी पहुंचा जा सकता है। सड़क मार्ग : शिमला से टैक्सी, बस या निजी वाहन द्वारा कुफरी पहुंचना आसान है। कुफरी न केवल हिमाचल प्रदेश का बल्कि पूरे भारत का एक प्रमुख शीतकालीन पर्यटन स्थल है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य, बर्फबारी और एडवेंचर गतिविधियां इसे हर पर्यटक की सूची में शामिल कर देती हैं। चाहे आप रोमांच के प्रेमी हों, प्रकृति से लगाव रखते हों या परिवार के साथ एक शांत छुट्टी की तलाश में हों कुफरी आपके लिए एक आदर्श गंतव्य है।

जानें अपना राशिफल

मेष

भाग्योदय वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, कोई रुकाहुआ सरकारी काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, परिवार के लोग पुरा साथ दे।

वृषभ

खुशियों भरा समय हो सकता है, कोई बहुत बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है जो फायदेमंद होगा, पिता पुत्र साथ मिलकर काम करने पर विचार हो सकता है।

मिथुन

दमदार समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई बहुत दिनों से रुकाहुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, अपने परिवार को प्रसन्न रखे।,

कर्क

सतर्क रहकर काम करने वाला समय हो सकता है, कोई आपका समय खराब कर सकता है सावधान रहे, अपनी बुद्धिमानी से काम बनाने की आवश्यकता है, आपसी बातचीत बनाये रखे।

सिंह

शक्तिशाली समय हो सकता है, कोई रुकाहुआ जमीन का काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, अपनी बुद्धिमानी दिखाने की आवश्यकता है।

कन्या

सम्मानित समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, किसी नये व्यक्ति से काम करने पर विचार हो सकता है जीवनसाथी पुरा साथ दे सकते हैं, मन प्रसन्न रहेगा।

तुला

तरोजगार मिलने वाला समय हो सकता है, कोई बहुत बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, परिवार के लोग पुरा साथ दे सकते हैं।

वृश्चिक

श्रेष्ठ समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी अन्य व्यक्ति से काम करने पर भी विचार हो सकता है।

धनु

कमजोर समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखे।

मकर

सामर्थ्यवान समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, कोई वाहन खरिदने का विचार हो सकता है, कोई बड़ा काम करने पर विचार हो सकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

कुंभ

भविष्य बनाने वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

मीन

कलह-क्लेश वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सोच समझकर ही करे, किसी पर ज्यादा भरोसा परेशानी का कारण बन सकता है सावधान रहे, आपसी प्रेम बनाये रखें।

व्यक्ति के स्वभाव पर पड़ता है मूलांक का असर

नयी दिल्ली : अंक ज्योतिष शास्त्र में एक से लेकर 1 से 9 तक मूलांक बताए गए हैं। व्यक्ति की जन्म की तारीख से मूलांक ज्ञात किया जाता है। जन्म की तारीख के अंकों को आपस में जोड़ा जाए, तो इससे मूलांक ज्ञात किया जाता है। उदाहरण के तौर लिए अगर किसी व्यक्ति का जन्म 11 तारीख को हुआ है, तो ऐसे में आपका मूलांक 2 होगा, क्योंकि 1+1=2 होता है।

अंक ज्योतिष शास्त्र में यह माना गया है कि मूलांक का असर व्यक्ति के करियर से लेकर उसके स्वभाव पर भी पड़ता है। ऐसे में चलिए जानते हैं कि वह कौन-सा मूलांक है जिसपर राहु का प्रभाव देखने को मिलता है। आज हम बात कर रहे हैं मूलांक 4 की। जिन लोगों का जन्म किसी महीने की 4, 13, 22 या फिर 31 को होता है, उनका मूलांक 4 माना जाता है। इन मूलांक का ग्रह राहु है, जिसका प्रभाव इस मूलांक के लोगों के स्वभाव पर भी पड़ता है। ये लोग काफी जिद्दी होते हैं और अपनी बात मनवा कर ही रहते हैं। साथ ही किसी को बहस में जीतने नहीं देते।

कैसी होती है लव लाइफ

मूलांक 4 के जातक काफी इमोशनल भी होते हैं और छोटी-सी बात को भी दिल से लगाकर बैठ जाते हैं। इन लोगों को अपने वैवाहिक जीवन में भी कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। लेकिन ये लोग अपने पार्टनर के प्रति बहुत वफादार होते हैं। साथ ही इनका स्वभाव थोड़ा गंभीर भी होता है। मूलांक 4 के जातकों के स्वभाव की बात करें, तो यह काफी खुशमिजाज और साहसी होते हैं। यह किसी भी तरह का रिस्क लेने से नहीं डरते। कड़ी मेहनत करके ये लोग जीवन में बड़ी सफलता भी हासिल कर लेते हैं।

शुभ-अशुभ का संकेत देते हैं शरीर पर बने तिल

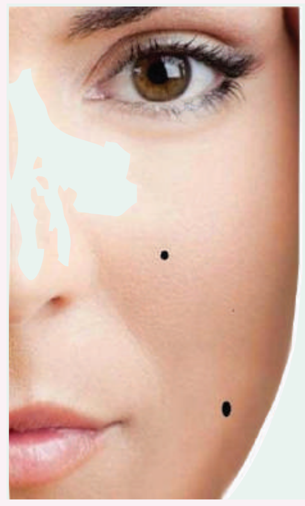

नयी दिल्ली : सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार निचले होंठ पर तिल होना इस बात का संकेत भी देता है कि आपको अपनी सेहत का खास ख्याल रखना चाहिए। इसके अलावा, ऐसे लोग बहुत रोमांटिक भी माने जाते हैं। इन लोगों को जीवन में सफलता हासिल करने के लिए काफी ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। इन लोगों को भविष्य में शरीर से जुड़ी किसी समस्या का सामना भी करना पड़ सकता है।

पसली पर तिल होना देता है ये संकेत

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, जिन लोगों की पसली पर तिल होता है वे बातों को अपने दिल में छुपाकर रखना पसंद करते हैं। साथ ही, कोई भी बड़ा काम या किसी नए काम की शुरुआत करने से पहले ये लोग काफी ज्यादा डर जाते हैं। इससे जीवन के अहम फैसले लेने में भी इन्हें कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही, ये लोग ज्यादा सोच-विचार करने के चलते मानसिक तनाव से भी परेशान रह सकते हैं। पसली पर तिल होना यह भी बताता है कि ऐसे लोग दूसरे की भावनाओं को समझने वाले होते हैं। माना जाता है कि जिन लोगों के कमर पर तिल होता है उनका मन थोड़ा अशांत रहता है। यह किसी न किसी चीज के बारे में हमेशा सोचते रहते हैं।

बाएं हाथ की ओर पीठ पर तिल होना

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, बाएं हाथ के तरफ पीठ पर तिल होना अच्छा नहीं माना जाता है। ऐसे लोग जीवन में पैसा तो खूब कमाते हैं लेकिन साथ ही, खर्च भी बहुत अधिक करते हैं। ऐसे में इन्हें अपने भविष्य के लिए धन इकट्ठा करने में परेशानी हो सकती है। ऐसे लोगों का स्वभाव थोड़ा जिद्दी भी हो सकता है। ये लोग अगर किसी काम को करने का ठान लें, तो उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। बाईं तरफ पीठ पर तिल होना बताता है कि ये लोग अपने जीवन में कड़ी मेहनत करके धन कमाते हैं। लेकिन अपनी सुख-सुविधाओं पर ज्यादा व्यय करते हैं।

माथे पर बाईं ओर तिल होना

अगर किसी व्यक्ति के माथे पर बाईं ओर काला तिल मौजूद हो, तो इसे अच्छा नहीं माना जाता है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार माथे पर बाईं तरफ तिल होना बताता है कि ऐसे लोग थोड़ी स्वार्थी हो सकते हैं। ये लोग सबसे पहले अपने बारे में सोचते हैं और दूसरों की परवाह बाद में करते हैं। अगर इनकी बात का अर्थ परिवार वाले गलत समझ लें, तो इन्हें कई बार अपमान का भी सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में इन लोगों के मन में निराशा की भावना भी जाग सकती है और इन्हें जीवन में कामयाबी हासिल करने के लिए मेहनत भी काफी करनी पड़ती है।

अध्यात्म

एक अद्वितीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थल

भगवान श्रीराम की धरा ओरछा

अजय कुमार मोहता
(संपादक, गंभीर समाचार)

भोपाल : प्रकृति की गोद में, इतिहास और भक्ति की दिव्यता से आलोकित- ओरछा एक ऐसा नगर है, जहां हर कोना आपको अध्यात्म, संस्कृति और गौरवशाली विरासत का सजीव अनुभव कराता है। मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले में स्थित यह नगर बुंदेलों की वीरगाथा, समृद्ध स्थापत्यकला और धार्मिक आस्था का उत्कृष्ट संगम है।

ऐतिहासिक धरोहर और धार्मिक भव्यता

बेतवा नदी के तट पर स्थित ओरछा का वैभवशाली अतीत इसकी भव्य इमारतों में जीवंत है- राजमहल, जहांगीर महल, छतरियां और अनेक ऐतिहासिक मंदिर इस नगर को स्थापत्य और इतिहास प्रेमियों के लिए स्वर्ग बना देते हैं।

राजा राम का अनूठा मंदिर

ओरछा की पहचान का सबसे विशेष प्रतीक है- राजा राम मंदिर। यह देश का एकमात्र मंदिर है जहां भगवान श्रीराम को राजा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है और उन्हें राजकीय सम्मान, यहां तक कि पुलिस बल की सलामी भी दी जाती है। यह परंपरा ओरछा को एक विलक्षण और श्रद्धापूर्ण आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करती है।

देश-विदेश से आते हैं श्रद्धालु

प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में श्रद्धालु एवं पर्यटक यहां दर्शन, पूजन और आध्यात्मिक शांति की तलाश में आते हैं। यहाँ का आध्यात्मिक वातावरण, शुद्ध वायुमंडल और प्राकृतिक सुंदरता आत्मा को सुकून प्रदान करते हैं।

स्वाद और संस्कृति का अद्वितीय संगम

ओरछा न केवल आस्था का केंद्र है, बल्कि यह पारंपरिक बुंदेली व्यंजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां का मसालेदार, देसी स्वाद हर स्वाद प्रेमी को मंत्रमुग्ध कर देता है। संस्कृति, स्वाद और श्रद्धा-ये तीनों तत्व ओरछा को एक पूर्ण अनुभव में पिरोते हैं।

सतत विकास की ओर...

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सुप्रयासों से ओरछा के धार्मिक स्थलों का योजनाबद्ध विकास किया जा रहा है। इससे न केवल स्थानीय संस्कृति को संबल मिला है, बल्कि ओरछा एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है। आइए, ओरछा की दिव्यता, भक्ति और भव्यता का अनुभव करें। यहां ईश्वर राजा हैं और श्रद्धा शासन करती है।

Page-15_Layout 1 6/23/2025 3:58 PM Page 1

किसानों के बीच आकर बैठा कोबरा

बुलाना पड़ा सपेरा, बजाई ऐसी धुन, सांप लगा झूमने!

नयी दिल्ली : एक पुराना फेमस सॉन्ग है, 'मेरा तन डोले मेरा मन डोले' गाना सपेरों की बीन के धुन पर ही बना है। गाना बजते ही 'नागिन' नाचने लगती है। जब शादियों में बजता है तो लोग भी 'नागिन' की तरह डांस करने लगते हैं, लेकिन अगर इस धुन को सांप के सामने बजाया जाए तो क्या होगा? हाल ही में एक वीडियो वायरल हुआ है, जिसमें एक सांप के सामने मेरा तन डोले की धुन बजाई जा रही थी। ये सांप किसानों के बीच आकर बैठ जाता है, उससे डरकर वो लोग सपेरे को बुला लेते हैं। सपेरा जैसे ही बीन बजाता है, सांप भी झूमने लगता है। हालांकि, वो बीन की धुन पर नहीं, बीन को हिलता देख झूमता है।

एक व्यक्ति सांप के सामने बीन बजाता है, जबकि सांप उसे घूरता रहता है। यह वीडियो ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट किया गया है। वीडियो में, एक कोबरा सांप को मकई के ढेर पर लेटे हुए दिखाया गया है, जबकि एक व्यक्ति बीन बजाता है और दूसरा व्यक्ति सांप को नियंत्रित करने की कोशिश करता है। वीडियो की शुरुआत में कोबरा सांप को फन फैलाए हुए देखा जा सकता है, जबकि व्यक्ति बीन बजाता है। सांप मक्कों के ऊपर बैठा है। जब वहां पर किसान आते हैं, तो वो उसे देखकर डर जाते हैं। फिर सपेरे को बुलाया जाता है। सपेरा जैसे ही मेरा तन डोले गाने की धुन बजाता है, वैसे ही सांप भी झूमने-हिलने लगता है। उसे देखकर काफी हैरानी हो रही है। जैसे-जैसे वीडियो आगे बढ़ता है, व्यक्ति सांप को नियंत्रित करने की कोशिश करता है, जबकि दूसरा व्यक्ति बीन बजाना जारी रखता है। अंत में सपेरा सांप को पकड़कर वहां से ले जाता है। इस वीडियो को 95 लाख से ज्यादा व्यूज मिल चुके हैं जबकि कई लोगों ने कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दी है। एक ने कहा कि 'कोबरा खुद पर बहुत गर्व महसूस कर रहा है।' दूसरे यूजर ने कहा, 'भारतीय कोबरे पूरी तरह से बहरे होते हैं और इसीलिए वे ध्वनि से नहीं, बल्कि बीन की गति को देखकर हिलते हैं, वो उसे खतरा मानते हैं और उसके अनुसार ही हिलने लगते हैं।'

एमपी के खेतों में पहुंचे दुर्लभ पक्षी

कैटल इग्रेट एकमात्र गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला बगुला

खरगोन : मध्य प्रदेश के खरगोन में इन दिनों दुर्लभ प्रजाति के प्रवासी पक्षियों की मौजूदगी देखी जा रही है। आमतौर पर आपने बगुलों को जलाशयों के आसपास, पानी के ऊपर या पेड़ों और झाड़ियों की टहनियों पर बैठा देखा होगा, लेकिन खरगोन में आए ये प्रवासी बगुले खेतों में ट्रैक्टरों के पीछे-पीछे दौड़ लगाते हुए नजर आ रहे हैं, तो कभी गाय, भैंस सहित अन्य मवेशियों की पीठ पर बैठकर सवारी करते हुए दिखाई देते हैं। सबसे खास बात तो ये है कि कैटल इग्रेट नामक यह बगुले गिरगिट की तरह अपना रंग बदलते हैं। कभी पीले, कभी नारंगी तो कभी सुनहरे दिखाई पड़ते हैं। लोग भी इन्हें देखकर हैरान हैं। दरअसल, जिले के बामन्दी गांव में किसानों के खेतों में यह प्रवासी बगुले देखे गए। जैसा कि आप तस्वीरों में भी देख सकते हैं कि किस तरह किसान ट्रेक्टर से खेत में जुटाई कर रहा है और उसके पीछे-पीछे प्रवासी बगुलों का झुंड दौड़ लगा रहा है। खरगोन के पीजी कॉलेज में पदस्थ जीव विज्ञान के प्रो. डॉ. रवींद्र रावल बताते हैं कि, बगुलों की चार प्रजातियां पाई जाती है, जिसमें कैटल इग्रेट बहुला ही एकमात्र ऐसा पक्षी है, जो गिरगिट की तरह अपना रंग बदल सकता है। इसे गाय बगुला भी कहते हैं, लेकिन यह बगुला अपना रंग प्रजनन काल के दौरान ही बदलता है, बाकी दिनों में सामान्य बगुलों की तरह ही सफेद दिखाई देता है।

कैटल इग्रेट कब बदलते है रंग

जब नर और मादा बगुला प्रजनन काल में होते हैं, तो उनमें विशिष्ट प्रकार के हार्मोंस एक्टिव होते हैं, जिसकी वजह से दोनों की गर्दन, सिर और पंख जैसे कुछ हिस्सों का रंग बदल जाता है। यह रंग पीला, नारंगी या सुनहरा हो सकता है, जो सीमित समय के लिए रहता है, जिसकी वजह से यह अट्रैक्टिव दिखाई देते हैं। क्षेत्र में कैटल इग्रेट बहुला प्रजाति ही देखी जाती है। शेष तीन प्रजातियां यहां नहीं है। यह प्रवासी पक्षी है, हमेशा एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहता है। प्रो. डॉ. रावल ने बताया, इस प्रजाति के बगुले प्रजनन के लिए दक्षिण भारत के इलाको में जाते हैं और प्रजनन के बाद वापस उत्तरी क्षेत्रों में लौटते हैं। इन्हें खुले मैदानों, खास के मैदानों और खेतों में अधिकांश देखे जा सकता है। खेतों में प्रायः वहां ज्यादा देखे जाते हैं, जहां जुटाई का कार्य चल रहा होता है। क्योंकि, जब जुटाई होती है, तो मिट्टी में दबे कीड़े ऊपर आए जाते हैं, जो इन बगुलों का स्वादिष्ट भोजन है।

मवेशियों के साथ गहरी दोस्ती

कैटल इग्रेट मवेशियों के साथ भी रहना खूब पसंद करते हैं। गाय, भैंस सहित अन्य मवेशियों की पीठ पर बैठ जाते है। मवेशियों के शरीर से चिपके हानिकारक छोटे-छोटे जंतुओं को खा जाते हैं। इससे मवेशियों के शरीर की सफाई भी हो जाती है, जिसकी वजह से मवेशियों और कैटल इग्रेट के बीच एक गहरा रिश्ता बन जाता है। दोनों को एक दूसरे का साथ पसंद आता है।

इन देशों में भी पाए जाते हैं कैटल इग्रेट

डॉ. रवींद्र रावल यह भी बताते है कि, आमतौर कैटल इग्रेट बगुले की प्रजाति का भौगोलिक स्थान फिक्स नहीं है। प्रजनन काल के लिए दक्षिण भारत आते है। ब्रीडिंग सहित रहने, खाने के लिए जहां अनुकूल वातावरण मिलता है वहां रुक जाते हैं। प्रजनन के बाद उत्तर की ओर पाकिस्तान, बांग्लादेश तरफ प्रवास कर जाते हैं। अफ्रीका, यूरोप, एशिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे ठंडे देशों में भी यह बगुला पाया जाता है।

जहां उम्र बढ़ने के साथ ही लड़के बन जाते हैं लड़कियां

डोमिनिकन : दुनिया में एक ऐसा गांव है, जहां लड़कियां जब युवावस्था में आती हैं, तो वे लड़कों में बदल जाती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, डोमिनिकन रिपब्लिक देश में ला सेलिनास नामक गांव की यह कहानी है, जो वैज्ञानिकों के लिए भी रहस्य बना हुआ है। यहां की लड़कियों का एक खास उम्र के बाद जेंडर चेंज हो जाता है। रिपोर्ट के अनुसार, यहां लड़कियों के लड़का बनने को लेकर वैज्ञानिक दशकों से रिसर्च कर रहे हैं। कहानी द एक्स्ट्राऑर्डिनरी स्टोरी ऑफ़ द ग्वेवेदोस में कहा गया कि लड़कियों के लड़का बन जाने के कारण ही यहां के लोग गांव को श्रापित गांव मानते हैं। इस रहस्य का आज तक वैज्ञानिक भी पता नहीं लगा पाए हैं।

12 साल की उम्र तक होने लगता है जेंडर चेंज

रिपोर्ट के अनुसार, इस गांव में 12 साल की उम्र आते-आते सभी लड़कियां लड़के में तब्दील हो जाती हैं। इस तरह के बच्चों को ग्वेदोचे कहा जाता है। स्थानीय भाषा में इस शब्द का मतलब किन्नर होता है। इस तरह की घटनाओं के कारण ही, यहां रहने वाले लोग घर में बेटी पैदा होने से डरते हैं। आलम ये हो गया है कि इस गांव में लड़की पैदा होने पर मातम पसर जाता है। इस अजीब घटनाओं के कारण गांव में लड़कियों की संख्या भी काफी कम होती जा रही है। इस गांव की रहने वाली जॉनी नाम की लड़की ने बताया है कि मुझे लड़कियों के रूप में कपड़े पहनना पसंद नहीं था और जब मुझे लड़कियों के खिलौने मिले तो, मुझे अच्छा नहीं लगता था लेकिन जब मैं लड़कों के ग्रुप देखता तो मैं उनके साथ गेंद खेलने के लिए रुक जाता। रिपोर्ट के अनुसार, इस गांव को लेकर डॉक्टर्स का कहना है कि इस सब के पीछे एक तरह की आनुवांशिक बिमारी है. जिसे स्यूडोहोमैंफ्रैडाइट कहा जाता है। इस बीमारी में लड़की के रूप में पैदा होने वाली लड़की में धीरे-धीरे लड़कों के अंग बनने लगते हैं। इसके साथ ही बढ़ते उम्र के साथ आवाज बदलने लगती है। आवाज में अपने आप भारीपन आने लगता है।

रिसर्च का विषय बना हुआ है यह गांव

कई शोधकर्ताओं ने इस बीमारी का इलाज खोजने की कोशिश की, लेकिन अभी तक कोई कामयाबी नहीं मिल पाई है। रिपोर्ट के अनुसार, यह गांव समुद्र किनारे बसा हुआ है और गांव की आबादी करीब 6 हजार है। अजीब रहस्य की वजह से ये गांव दुनियाभर के शोधकर्ताओं के लिए रिसर्च का विषय बना हुआ है।

याकुत्स्क : दुनिया की सबसे ठंडी जगह पर 10 डिग्री में भी लोगों को लगती है गर्मी!

याकुत्स्क : साइबेरिया का एक शहर, जो दुनिया का सबसे ठंडा शहर होने का रिकॉर्ड रखता है, अपनी अनोखी जीवनशैली के लिए चर्चा में है। यहां सर्दियों में तापमान -60 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है और कभी-कभी -64.4 डिग्री तक पहुंच चुका है, जैसा कि 5 फरवरी 1891 को दर्ज किया गया था। इस ठंड में पूरा शहर एक प्राकृतिक फ्रीजर बन जाता है, जहां खुले बाजारों में सामान खराब होने का सवाल ही नहीं उठता। मछली बाजारों में कोई गंध नहीं होती क्योंकि सब कुछ जमा रहता है। यहां की आबादी मुख्य रूप से मांस पर निर्भर है, जिसमें कच्चा घोड़ा, रेनडियर, खरगोश और मछलियां शामिल है। सबसे हैरान करने वाली बात? यहां का पसंदीदा व्यंजन है घोड़े का कच्चा लीवर! सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो ने याकुत्स्क की इस अनोखी जीवनशैली को दुनिया के सामने ला दिया है।

याकुत्स्क की ठंड और जीवनशैली

याकुत्स्क की आबादी करीब 3,55,443 (2021 की जनगणना) है, जो इसे दुनिया का सबसे ठंडा बड़ा शहर बनाती है। जनवरी में औसत तापमान -42 डिग्री सेल्सियस रहता है और दिन में केवल चार घंटे सूरज की रोशनी मिलती है। शहर पूरी तरह से परमाफ्रॉस्ट (स्थायी रूप से जमी मिट्टी) पर बना है, जिसके कारण अधिकांश इमारतें कंक्रीट के खंभों पर खड़ी हैं ताकि गर्मी से परमाफ्रॉस्ट पिघल न जाए। यहां के निवासी ठंड से निपटने के लिए अनोखे तरीके अपनाते हैं। लोग कई परतों में कपड़े पहनते हैं, जैसे कि खरगोश, लोमड़ी या रेनडियर की खाल से बने कोट और बूट। एक स्थानीय निवासी, नर्गुसुन स्टारोस्तिना, ने बताया, 'बस गर्म कपड़े पहनें, जैसे गोभी की परतें!' यहां की सड़कों पर 'आइस फॉग' छाया रहता है, जो तब बनता है जब ठंड इतनी अधिक होती है कि गर्म हवा ऊपर नहीं उठ पाती। लोग बाहर कम समय बिताते हैं क्योंकि 10 मिनट से ज्यादा ठंड में रहने से फ्रॉस्टबाइट का खतरा होता है।

खुले बाजार और अनोखा खान-पान

याकुत्स्क के खुले बाजार इस शहर की सबसे अनोखी विशेषता है। यहां मछलियां और मांस खुले में बिकते हैं क्योंकि -60 डिग्री की ठंड में कुछ भी खराब नहीं होता। मछली बाजारों में कोई गंध नहीं होती क्योंकि सब कुछ जमा रहता है। एक वायरल वीडियो में ट्रैवल व्लॉगर अंकिता कुमार ने बताया कि उन्होंने एक विशाल मछली उठाई लेकिन उनके कपड़ों में कोई गंध नहीं आई। यहां के लोग मुख्य रूप से मांस खाते हैं क्योंकि ठंड के कारण फसल उगाना असंभव है। कच्चा और जमा हुआ मांस, जैसे घोड़ा, रेनडियर, खरगोश और मछलियां, उनकी डाइट का मुख्य हिस्सा है।

- जनवरी में औसत तापमान रहता है 42 डिग्री सेल्सियस
- आबादी मुख्य रूप से मांस पर निर्भर है, जिसमें शामिल हैं कच्चा घोड़ा, रेनडियर, खरगोश और मछलियां

16 गंभीर समाचार | स्पोर्ट्स | RNI No. WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata | कोलकाता, 25 जून 2025

दक्षिण अफ्रिका ने आलोचकों को गलत साबित किया

निज संवाददाता : दक्षिण अफ्रीका की यह जीत देश में खेल को हमेशा के लिए बदल सकती है। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल की शुरुआत उनके लिए खराब रही। ऑस्ट्रेलियाई टीम के खिलाफ पहली पारी में अच्छी बढ़त लेना, जो जीतना जानती है, वह दक्षिण अफ्रीका के लोगों को पहले दो दिनों में उम्मीद नहीं थी। लॉर्ड्स में हार और पुराने चोकर्स टैग की वापसी उन्हें परेशान करेगी। यह एक स्वीकृत कथन था कि दक्षिण अफ्रीकी दबाव में नहीं जीतते। इस मिथक को तोड़ने की जरूरत थी। आलोचक गलत साबित हुए। प्रशंसकों को एक नई उम्मीद मिली और खेल को एक नई शुरुआत।ऑस्ट्रेलियाई दूसरी पारी की शुरुआत थी जब दक्षिण अफ्रीकी लोगों ने विश्वास करना शुरू किया। 48-4 और खेल शुरू हो गया। रबाडा और एनगिडी ने शुरुआती गति प्रदान की, लेकिन वह भी पर्याप्त नहीं हो सका। उन्हें उस दबाव को झेलने की जरूरत थी जो उनका दुश्मन रहा है। आंतरिक दानवों पर काबू पाया। खुद के बजाय ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जीतना। अपेक्षाओं को संभालना, दबाव को संभालना।दबाव शायद खेलों में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। कोई भी व्यक्ति जो खेल खेलता है, वह आपको बताएगा कि हमेशा दबाव होता है। प्रशंसक, माता-पिता, प्रायोजक, परिवार और सबसे महत्वपूर्ण बात खुद से। अंत में एक खिलाड़ी अपने दिमाग के साथ अकेला होता है। एक ऐसा दिमाग जो अव्यवस्था से भरा होता है और लगातार आजाद होने की कोशिश करता है। दबाव को थोड़ा और विस्तार से समझाने के लिए, मैं एक अलग खेल की ओर रुख करूंगा। मैं भारत के पहले व्यक्तिगत स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा की ओर रुख करूंगा। रियो 2016 में अभिनव एक करीबी मुकाबले में हार गए थे। यह पदक के इतने करीब आकर भी जीत न पाना था। क्या यह दबाव था या सिर्फ वह पल? हम फिर कभी नहीं जान पाएंगे। लेकिन जैसा कि अभिनव कहते हैं, यह बस होता है। 2008 के बीजिंग ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने के अभिनव के अनुभव और रियो 2016 में हारने के उनके अनुभव के बीच का अंतर दबाव के प्रभाव को दर्शाता है। दक्षिण अफ्रीका का मानना था कि वे 2008 की सफलता हो सकते हैं यह बावुमा और मार्कराम और रबाडा को सुपरस्टार बना देगा, वह टैग जिसके वे लंबे समय से हकदार हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ये पुरुष महिला टीम के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे, जो कुछ महीने बाद विश्व कप में खेलेगी। उनके नक्शेकदम पर चलने के लिए। बवुमा हर रंगीन व्यक्ति के लिए आकांक्षा का प्रतीक होगा। सिया कोलिसी के बराबर। हम भारत में दक्षिण अफ्रीकी उदाहरण से भी सीखेंगे। अगर वे ऐसा कर सकते हैं, तो हम भी कर सकते हैं। और इसलिए वह दिन लॉर्ड्स में एक अलग दिन था। संभावनाओं और अवसरों से भरा दिन। एक ऐसा दिन जिसने दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट को बदल दिया।

3 शतकों के बावजूद भारत की बल्लेबाजी धराशायी, इंग्लैंड ने दी कड़ी चुनौती

निज संवाददाता : लाड्सः रोहित शर्मा और विराट कोहली के संन्यास के बाद लगभग युवा भारतीय टीम इंग्लैंड सीरीज में कैसा खेलेगी, इस पर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं। कुछ लोगों ने गुस्से में यह भी भविष्यवाणी की कि टीम इंडिया ब्रिटिश धरती पर बुरी तरह विफल होगी। लेकिन हकीकत देखने के बाद आलोचक थोड़ा पीछे हटेंगे। पांच मैचों की सीरीज का पहला टेस्ट 20 जून से लीड्स में शुरू हो चुका है। इंग्लिश कप्तान बेन स्टोक्स ने टॉस जीतकर भारत को बल्लेबाजी के लिए भेजा। खराब मौसम में उनके इस फैसले के पीछे के तर्क पर सवाल उठेंगे। भारत के दो सलामी बल्लेबाजों यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने शानदार शुरुआत की। दोनों के बीच हुई साझेदारी ने 91 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी की। हालांकि, राहुल सेट होने के बाद इंग्लिश विकेटकीपर के हाथों अपने निजी 42 रन के स्कोर पर आउट हो गए। इसके बाद डेब्यू करने उतरे साई सुदर्शन रन का मुंह देखे बिना ही ड्रेसिंग रूम लौट गए। 92 रन पर 2 विकेट गंवाने के बाद टीम इंडिया लंच पर गई। इसके बाद आए शुभमन गिल, जो पहली बार टीम इंडिया की अगुआई करने उतरे। उन पर कई लोगों की निगाहें थीं। हालांकि बतौर कप्तान डेब्यू करने वाले शुभमन ने क्रिकेट जगत को प्रभावित किया। सबसे पहले उन्होंने यशस्वी के साथ 129 रनों की बेहतरीन साझेदारी की। तब तक युवा स्टार यशस्वी शतक (101) बना चुके थे। हालांकि बाएं हाथ के बल्लेबाज के आउट होने के बावजूद कप्तान को काबू नहीं किया जा सका। उनकी पारी में डिफेंस और अटैक का मिश्रण देखने को मिला। बतौर कप्तान बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने दिन का अंत 127 रनों पर नाबाद रहते हुए किया। गिल के डिप्टी ऋषभ पंत भी उन पर भरोसा कर रहे हैं। दोनों ने रिकॉर्ड बनाए हैं। और हां, पहले दिन के अंत में भारत का स्कोर 3 विकेट पर 359 रन था। बात यहीं खत्म नहीं होती। शुभमन ने लाड्स में 57 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा। गिल नवाब पटौदी का 57 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़कर इंग्लैंड में टीम की अगुआई करने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय बन गए। शुभमन विजय हजारे, दिलीप वेंकसरकर, सुनील गावस्कर और विराट कोहली के बाद अपने डेब्यू टेस्ट में शतक लगाने वाले पांचवें भारतीय कप्तान बन गए हैं। दूसरी ओर, ऋषभ पंत ने पहले दिन इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया में विकेटकीपर-बल्लेबाज के तौर पर महेंद्र सिंह धोनी को पीछे छोड़ दिया। और दूसरे दिन भी पंत अपने लक्ष्य पर अडिग रहे। पंत का इंग्लैंड में यह तीसरा शतक था। इस शतक के बाद उन्होंने एक असाधारण मिसाल भी छू ली। उनके शतकों की संख्या 7 है। इतने शतक किसी भारतीय विकेटकीपर ने नहीं लगाए हैं। इसमें भी उन्होंने धोनी को पीछे छोड़ दिया। माही के नाम टेस्ट में 6 शतक हैं। कुल मिलाकर भारतीय खेमे में फील-गुड फैक्टर काम कर रहा है, लेकिन दूसरे दिन का नजारा कुछ अलग था। दूसरे दिन गिल और पंथ अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे हालांकि गिल 147 रन के निजी स्कोर पर पवेलियन लौट गए। थोड़ी देर बाद पंत (134) भी आउट हो गए। इसके बाद भारतीय बल्लेबाजों की उम्मीदें धूमिल होने लगीं। भारत 3/430 से 471 रन पर ऑल आउट हो गया। जवाब में बुमराह के पहले ओवर में एक विकेट गंवाने के बावजूद इंग्लैंड ने वापसी की। बेन डकेट (62) और ओली पोप (100 नाबाद) की बदौलत। हालांकि डकेट का आसान कैच रवींद्र जडेजा से छूट गया। पोप का कैच यशस्वी ने लपका। क्रिकेट के सबसे लंबे फॉर्मेट में इस तरह से कैच छूटने का खामियाजा आपको भुगतना ही पड़ता है। भारत भी इसका खामियाजा भुगत रहा है। एक और बात यह है कि जसप्रीत बुमराह के अलावा कोई भी भारतीय गेंदबाज ऐसा कमाल नहीं कर सका। बुमराह ने इंग्लैंड के तीनों विकेट लिए। तीसरे दिन का खेल और दिलचस्प हो गया। इंग्लैंड की पारी 465 रन पर समाप्त हुई। बुमराह ने 5 विकेट लिए। मोहम्मद सिराज ने 3 और पी कृष्णा ने 2 विकेट लिए। दिन का खेल खत्म होने तक भारतीय टीम का स्कोर 2/95 था। 96 रनों की बढ़त और 8 विकेट शेष। केएल राहुल (47) और शुभमन गिल (6) बल्लेबाजी कर रहे हैं।

दिलीप बना रहे...

पेज एक का शेष

लेकिन विभिन्न जातियों के नेताओं और नेताओं के नाम अटकलों में हैं। भाजपा में इस समय कौन-कौन असंतुष्ट के तौर पर जाने जाते हैं? मौजूदा नेतृत्व किससे ज्यादा दूरी पर है।बड़ा सरकारी पद छोड़कर भाजपा में शामिल होने से किनकी महत्वाकांक्षाएं पूरी नहीं हुईं? ऐसे कई नेताओं के नामों को लेकर अफवाहें शुरू हो गई हैं। कई लोगों का दावा है कि पूर्व राज्य भाजपा महासचिव सायंतन बसु उस बैठक में मौजूद थे। लेकिन सायंतन ने कहा कि मैं गत शुक्रवार सुबह से ही पश्चिम बंगाल दिवस समारोह कार्यक्रम में था। सभी कार्यक्रम सार्वजनिक थे। आप उस क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ताओं से पूछकर बता सकते हैं कि मैं कब और कहां गया था। सायंतन ने कहा कि पहला कार्यक्रम दक्षिणदरी में था। बाद में मैं अमता-उदयनारायणपुर गया। मुझे रात में न्यूटाउन में एक अन्य कार्यक्रम में जाना था। लेकिन मैं संतरागाछी में इतने ट्रैफिक जाम में फंस गया कि मैं न्यूटाउन में उस कार्यक्रम में भी नहीं जा सका। अगर शुक्रवार को कोई बैठक थी, तो मैं वहां नहीं था। कुछ लोगों का दावा है कि पूर्व राज्य भाजपा उपाध्यक्ष राजकमल पाठक का नाम भी उस बैठक की उपस्थिति सूची में था। लेकिन राजकमल कहते हैं, कि मैं ऐसी किसी बैठक में नहीं गया था। मुझे किसी ने बैठक में नहीं बुलाया था। और अगर बुलाया भी होता तो मैं नहीं जाता। मैं 1990 के दशक से भाजपा में हूं। पार्टी चुनाव टिकट भी नहीं देती। इसलिए मैं अभी भी भाजपा में हूं। इसलिए कम से कम मेरे किसी दूसरी पार्टी में जाने का सवाल ही नहीं उठता। राजकमल ने समझाया, इस समय लोग ममता बनर्जी के शासन को खत्म करने के लिए भाजपा की ओर देख रहे हैं। ऐसे में अगर कोई भाजपा को तोड़कर नई पार्टी बनाता है तो मुझे लगता है कि यह लोगों के साथ विश्वासघात होगा। प्रदेश भाजपा के एक अन्य पूर्व उपाध्यक्ष रितेश तिवारी फिलहाल अनिश्चित काल के लिए पार्टी से निलंबित हैं। इस बात को लेकर भी उत्सुकता है कि वे बैठक में थे या नहीं। रितेश की आवाज राजकमल के लहजे से मिलती-जुलती है। उन्होंने आनंदबाजार डॉट कॉम से कहा, कि पहली बार मैं ऐसी बैठक के बारे में सुन रहा हूं। लेकिन अगर मुझे ऐसी बैठक के बारे में पता होता या किसी ने बुलाया होता तो मैं ऐसा नहीं करता। मैं नहीं जाता। रितेश ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि अगर कोई भाजपा को तोड़ता है क्योंकि भाजपा ने मुझे दूर रखा है, तो मैं उनके साथ शामिल हो जाऊंगा. मैं जैसा हूं, ठीक हूं। इनमें से एक नेता का दावा है कि उन्हें खबर मिली है कि ऐसी कोई बैठक हुई है। इन अटकलों के बीच खुद दिलीप ने कहा कि कहा कि अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ है। मैं कुछ दिनों से पीठ दर्द से पीड़ित था। मैं घर से बाहर भी नहीं निकल पा रहा था। काफी दिनों के बाद मैं शनिवार योग दिवस मनाने के लिए बाहर गया था. और यह सब मेरे नाम पर कहा जा रहा है। शुक्रवार को साल्टलेक में 25 लोगों की बैठक, पार्टी का नाम तय होना, उस नाम वाली टी-शर्ट बांटे जाने जैसी अटकलें क्या पूरी तरह से निराधार हैं? दिलीप ने कहा कि अभी तक ऐसी कोई खबर नहीं है। मैं चुपचाप बैठा हूं और सब कुछ देख रहा हूं। मेरे नाम पर इतना कुछ हो रहा है।

मोहन बागान एथलेटिक क्लब की नई कार्यकारिणी समिति का गठन

♦ सृंजय बोस बने सचिव व देबाशीष दत्ता अध्यक्ष

निज संवाददाता : काफी अटकलों के बाद सृंजय बोस ने 14 जून को मोहन बागान एथलेटिक क्लब के सचिव के रूप में पदभार संभाला। मोहन बागान चुनाव बोर्ड के अध्यक्ष, सेवानिवृत्त न्यायाधीश असीम कुमार रे ने सृंजय बोस के नाम की घोषणा सचिव के रूप में की थी। 16 जून को नई कार्यकारिणी समिति की पहली बैठक में देवाशीष दत्ता को नए अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया। सृंजय बोस ने खुद देव-ाशीष दत्ता के नाम का प्रस्ताव रखा, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। समिति ने उपाध्यक्षों के रूप में सौमिक बोस, मानस भट्टाचार्या, उत्तम कुमार साहा, कुणाल घोष और देवाशीष मित्रा को भी नियुक्त किया।

नई समिति के सदस्य

अध्यक्ष : देवाशीष दत्ता, **सचिव :** सृंजय बोस, **उपाध्यक्ष :** सौमिक बोस, मानस भट्टाचार्य, उत्तम कुमार साहा, कुणाल घोष, देवाशीष मित्रा। **अन्य सदस्य :** सात और सदस्यों को को-ऑप्ट किया गया और स्थायी आमंत्रित सदस्य बनाया गया, जिनमें सोहिनी मित्रा चौधरी और दीपिका दास शामिल हैं ताकि महिला प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके।सृंजय बोस ने कहा कि सेवानिवृत्त न्यायाधीश असीम कुमार रे नियम बनाने की देखरेख करेंगे और उन्हें पूरी शक्तियां दी गई हैं। समिति का उद्देश्य क्लब के विभिन्न पहलुओं में सुधार करना है, जिसमें खेल और सोशल मीडिया प्रबंधन शामिल है। स्वपन साधन (टुटू) बोस क्लब के साथ जुड़े रहेंगे लेकिन कोई आधिकारिक पद नहीं संभालेंगे।

नई कार्यकारिणी समिति के उद्देश्य

1. क्लब के खेल और सोशल मीडिया प्रबंधन में सुधार करना, 2. महिला प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए महिला सदस्यों को शामिल करना। क्लब के नियमों और विनियमों को बनाने और लागू करने के लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीश असीम कुमार रे के साथ काम करना।मोहन बागान एथलेटिक क्लब की नई कार्यकारिणी समिति ने अपने कार्यों को शुरू कर दिया है और क्लब के विभिन्न पहलुओं में सुधार करने के लिए काम कर रही है। समिति का उद्देश्य क्लब को और अधिक मजबूत और सफल बनाना है।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय :** 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय :** 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक :** अजय कुमार मोहता, मो. 9830045693, (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)